ज्योतिष सुःख समृद्धि

Name - Sample

Date - 18/12/1973 **Time - 01:45:00**

POB - Ballia (up), INDIA

Longitude - 084:10:00 E

Latitude - 025:45:00 N

MindSutra Software Technologies

www.mindsutra.com, www.webjyotishi.com

Contact - 9818193410, 9350247058

© Mindsutra's StarLight Premium 11

श्री गणेशाय नमः

नवग्रह स्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्पेयं महाद्युतिम्।
तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।

दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्।
नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।

धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्।
कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम्।
बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।

हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्।
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्।
सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।

पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्।
रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्निसमुद्रवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ।।

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

जो जपापुष्प के समान अरुणिम आभावाले, महान तेज से संपन्न, अंधकार के विनाशक, सभी पापों को दूर करने वाले तथा महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, उन सूर्य को मैं प्रणाम करता हूं। जो दधि, शंख तथा हिम के समान आभा वाले, क्षीर समुद्र से प्रादुर्भूत, भगवान शंकर के शिरोभूषण तथा अमृतस्वरुप हैं, उन चंद्रमा को मैं नमस्कार करता हूं। जो पृथ्वी देवी से उद्भूत, विद्युत् की कान्ति के समान प्रभावाले, कुमारावस्था वाले तथा हाथ में शक्ति लिए हुए हैं, उन मंगल को मैं प्रणाम करता हूं। जो प्रियंगु लता की कली के समान गहरे हरित वर्ण वाले, अतुलनीय सौन्दर्य वाले तथा सौम्य गुण से संपन्न हैं, उन चंद्रमा के पुत्र बुध को मैं प्रणाम करता हूं। जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, स्वर्णिम आभा वाले हैं, ज्ञान से संपन्न हैं तथा लोकों के स्वामी हैं, उन बृहस्पति जी को मैं नमस्कार करता हूं। जो हिम, कुन्दपुष्प तथा कमलनाल के तन्तु के समान श्वेत आभा वाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के उपदेष्टा तथा महर्षि भृगु के पुत्र हैं, उन शुक्र को मैं प्रणाम करता हूं। जो नीले कज्जल के समान आभा वाले, सूर्य के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता तथा सूर्य पत्नी छाया तथा मार्तण्ड से उत्पन्न हैं, उन शनैश्चर को मैं नमस्कार करता हूं। जो आधे शरीर वाले हैं, महान पराक्रम से संपन्न हैं, सूर्य तथा चंद्र को ग्रसने वाले हैं तथा सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हैं, उन राहु को मैं प्रणाम करता हूं। पलाश पुष्प के समान जिनकी आभा है, जो रुद्र स्वभाव वाले और रुद्र के पुत्र हैं, भयंकर हैं, तारकादि ग्रहों में प्रधान हैं, उन केतु को मैं प्रणाम करता हूं। भगवान वेदव्यास जी के मुख से प्रकट इस स्तुति का जो दिन में अथवा रात में एकाग्रचित्त होकर पाठ करता है, उसके समस्त विघ्न शान्त हो जाते हैं, स्त्रीपुरुष और राजाओं के दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है। पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य और आरोग्य प्राप्त होता है तथा उनके पुष्टि की वृद्धि होती है।

ज्योतिष सारिणी

मुख्य विवरण

लिंग	पुरूष
जन्म दिनांक	18 दिसम्बर 1973
जन्म समय	01:45:00
जन्म दिन	मंगलवार
जन्म स्थान	Ballia (up)
राज्य	
देश	INDIA
अक्षांश	025:45:00 N
रेखांश	084:10:00 E
स्थानीय समय संस्कार	00:06:40 hrs
स्थानीय समय	01:51:40 hrs
समय क्षेत्र	05:30 E
समय संशोधन	00:00:00
सांपातिक काल	07:36:55 hrs
इष्ट काल	47: 52: 16 Ghati

पंचांग विवरण

विक्रम संवत	2030
शक संवत	1895
संवत्सर	प्रमादी
ऋतु	हेमन्त
मास	पौष
पक्ष	कृष्ण
वार	सोमवार
तिथि	नवमी
नक्षत्र (पद)	हस्ता (2)
योग	सौभाग्य
करन	गरिज

अवकहड़ा चक्र

पाया	स्वर्ण
वर्ण	वैश्य
वश्य	द्विपद
योनि	महिष (स्त्री)
गण	देव
नाड़ी	आदि
रज्जु	कंठ
तत्व	अग्नि
तत्वाधिपति	मंगल
विहग	वायस
नाड़ी पद	मध्य
वेध	शतभिषा
आद्याक्षर	श
दशा बैलेंस	चन्द्रमा – 5व05मा026दि0
वर्तमान दशा	शनि–बुध–बुध
भयात	27: 30: 35 Ghati
भभोग	61: 31: 25 Ghati
सूर्य राशि (वैदिक)	धनु
सूर्य राशि (पाश्चात्य)	धनु
अयनांश	N.C.Lahiri
अयनांश मान	023:29:36
देकानेट	3
फेस	VI
सूर्योदय	06:36:32AM
सूर्यास्त	05:03:05PM
जन्मदिन का ग्रह	चन्द्रमा
जन्मसमय का ग्रह	शनि

लग्न
कन्या

राशि
कन्या

नक्षत्र – पद
हस्ता – 2

लग्नाधिपति
बुध

राशिपति
बुध

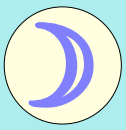

नक्षत्रपति
चन्द्रमा

नक्षत्र विवरण

नक्षत्र	हस्ता	चरण	2
अधिपति	चन्द्रमा ☽	भाव में	लग्न शुभ
देवता	सवितृ आदित्य	दिशा	दक्षिण पश्चिम
तत्व	अग्नि	गोत्र	पुलह
प्रभाव	लक्ष्मीप्रद	पशु	महिष (स्त्री)
पौधे	मालति, चमेली	पक्षी	गिद्ध
कार्य पद्धति	धैर्ययुक्त	गुण	रजस

लग्न और राशि विवरण

लग्न विवरण

लग्न	कन्या ♍
अधिपति	बुध ☿
तत्व	पृथ्वी
स्वभाव	उभय
भाव में	तृतीय सम
लिंग	स्त्री
के साथ भावेश	

राशि विवरण

राशि	कन्या ♍
अधिपति	बुध ☿
तत्व	पृथ्वी
स्वभाव	उभय
भाव में	तृतीय सम
लिंग	स्त्री
के साथ भावेश	

राशि देवता	भगवान गणेश
मंत्र	**Om Gan Ganapataye Namah** **ॐ गण गणपतये नमः**

इन राशि देवता के मंत्रों का जाप प्रत्येक राशि के इष्टदेवों का आशीर्वाद प्राप्त करने, सकारात्मक ऊर्जा को बढ़ाने एवं बाधाओं को दूर करने तथा अच्छे भाग्य को आकर्षित करने के लिए किया जा सकता है।

तत्व	पृथ्वी

आप सामान्यतः व्यावहारिक, ज़मीनी और विश्वसनीय हैं। आप अपने भावनात्मक जीवन में स्थिरता और सुरक्षा की ओर आकर्षित हैं तथा दिनचर्या और पूर्वानुमान को पसंद करते हैं। आप मेहनती, धैर्यवान और भरोसेमंद हैं। आपमें जिम्मेदारी की प्रबल भावना है और आप अपने प्रयासों में काफी महत्वाकांक्षी हो सकते हैं।

स्वभाव	उभय

आप आमतौर पर अनुकूलनीय, लचीले और बहुमुखी हैं। आप परिवर्तन के लिए तैयार हैं और आसानी से नई स्थितियों और वातावरण में समायोजित हो सकते हैं। आप अक्सर जिज्ञासु होते हैं और नई चीजें सीखने का आनंद लेते हैं। आप मल्टीटास्किंग में कुशल हैं और समस्या-समाधान के प्रति अपने दृष्टिकोण में काफी साधन संपन्न हो सकते हैं। आप विश्लेषणात्मक और विस्तार-उन्मुख हैं, आप उन व्यवसायों में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं जिनमें सटीकता, संगठन, या महत्वपूर्ण सोच की आवश्यकता होती है, जैसे लेखांकन, डेटा विश्लेषण, या संपादन।

घात चक्र

भद्रा अशुभ मास	शनिवार अशुभ वार	1 अशुभ प्रहर
मिथुन अशुभ राशि	मीन अशुभ लग्न	5, 10, 15 अशुभ तिथि
श्रावण अशुभ नक्षत्र	सुकर्मन अशुभ योग	कौलव अशुभ करन

शुभ बिन्दु

9 मूलांक	5 भाग्यांक	3, 9 मित्रांक
2, 4 शत्रु अंक	18, 21, 23, 27, 30, 32, 36, 39 शुभ वर्ष	बुधवार, शुक्रवार शुभ दिन
बुध, शुक्र शुभ ग्रह	मंगल, गुरू अशुभ ग्रह	धनु, मीन, वृष, कर्क मित्र राशि
धनु, मीन, वृष, कर्क मित्र लग्न	पन्ना शुभ रत्न	पन्नी, संगपन्ना, मरगज शुभ उपरत्न
हीरा भाग्य रत्न	गणेश अनुकूल देवता	कांसा शुभ धातु
हरित शुभ रंग	उत्तर दिशा	सूर्योदय के 2 घंटे बाद शुभ समय
शक्कर, हाथीदांत, कपूरस शुभ पदार्थ	मूंग (साबुत) शुभ अन्न	घी शुभ द्रव्य

आपकी कुण्डली में लग्नाधारित प्रमुख बिन्दु

जीवन के सभी क्षेत्र में पूर्णता प्राप्त करने के लिए, विशेष रूप से काम और व्यक्तिगत विकास के।

परम अकांक्षा

आदेश, संरचना और दक्षता की आवश्यकता।

उत्साहवर्धक प्रेरणा

दूसरों की सेवा करने और अधिक अच्छे कार्यो में योगदान देना।

जीवन का परम लक्ष्य

व्यावहारिक और विश्लेषणात्मक दिमाग, विस्तार पर ध्यान, और दूसरों की मदद करने की इच्छा।

अनोखा उपहार/योग्यता

आत्म–आलोचना और अत्यधिक सोचने की प्रवृत्ति।

सुधार के क्षेत्र

मैं विश्लेषण करता हूं, मैं सुधार करता हूं, मैं सेवा करता हूं।

मूल विचार

दूसरों की मदद करने और दुनिया पर सकारात्मक प्रभाव डालने के लिए उनका उपयोग करते हुए, अपने कौशल और ज्ञान को परिष्.त करना जारी रखना।

आगे का लक्ष्य

एक ऐसा जीवन जहां उन्होंने कड़ी मेहनत और समर्पण के माध्यम से उच्च स्तर की व्यक्तिगत और व्यावसायिक सफलता हासिल की है, जबकि समाज में महत्वपूर्ण योगदान भी दिया है।

ब्यक्तित्व का मूल तत्व

ग्रह स्थिति (पराशरी)

सूर्य	धनु 02:15:49 मूला (1) सम राशि	चन्द्रमा	कन्या 16:00:57 हस्ता (2) मित्र राशि
मंगल	मेष 04:42:18 अश्विनी (2) स्व नक्षत्र	बुध (अ.)	वृश्चिक 19:51:24 ज्येष्ठा (1) स्व राशि
गुरू	मकर 17:56:39 श्रवण (3) स्व नक्षत्र	शुक्र	मकर 13:00:16 श्रवण (1) नीच राशि
शनि (व.)	मिथुन 08:12:33 अरिद्रा (1) मित्र राशि	राहु	धनु 05:10:35 मूला (2) मित्र राशि
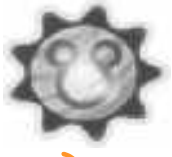 केतु	मिथुन 05:10:35 मृगशिर (4) सम राशि	हर्षल	तुला 03:20:59 चित्रा (4) सम राशि
नेपच्यून	वृश्चिक 14:20:41 अनुराधा (4) सम राशि	प्लूटो	कन्या 13:11:14 हस्ता (1) सम राशि
लग्न	कन्या 28:15:29 चित्रा (2) ---	10वां कस्प	मिथुन 28:56:27 पुनर्वसु (3) ---

ग्रह स्थिति (पराशरी)

ग्रह	व/अ	राशि	अंश	नक्षत्र	पद	कारक	विशेष
AC लग्न		♍ कन्या	28:15:29	चित्रा (14)	2		
☉ सूर्य		♐ धनु	02:15:49	मूला (19)	1	दारा	मित्र राशि
☽ चन्द्रमा		♍ कन्या	16:00:57	हस्ता (13)	2	भ्रात्रि	स्व नक्षत्र
♂ मंगल		♈ मेष	04:42:18	अश्विनी (1)	2	ज्ञाति	स्व राशि
☿ बुध	अ.	♏ वृश्चिक	19:51:24	ज्येष्ठा (18)	1	आत्म	स्व नक्षत्र
♃ गुरू		♑ मकर	17:56:39	श्रवण (22)	3	अमात्य	नीच राशि
♀ शुक्र		♑ मकर	13:00:16	श्रवण (22)	1	मात्रि	मित्र राशि
♄ शनि	व.	♊ मिथुन	08:12:33	अरिद्रा (6)	1	अपत्या	मित्र राशि
☊ राहु		♐ धनु	05:10:35	मूला (19)	2		सम राशि
☋ केतु		♊ मिथुन	05:10:35	मृगशिर (5)	4		सम राशि
⚷ हर्षल		♎ तुला	03:20:59	चित्रा (14)	4		सम राशि
♆ नेपच्यून		♏ वृश्चिक	14:20:41	अनुराधा (17)	4		सम राशि
♇ प्लूटो		♍ कन्या	13:11:14	हस्ता (13)	1		सम राशि

नोट : – (व.) – वक्री, (अ.) – अस्त

लग्न कुण्डली

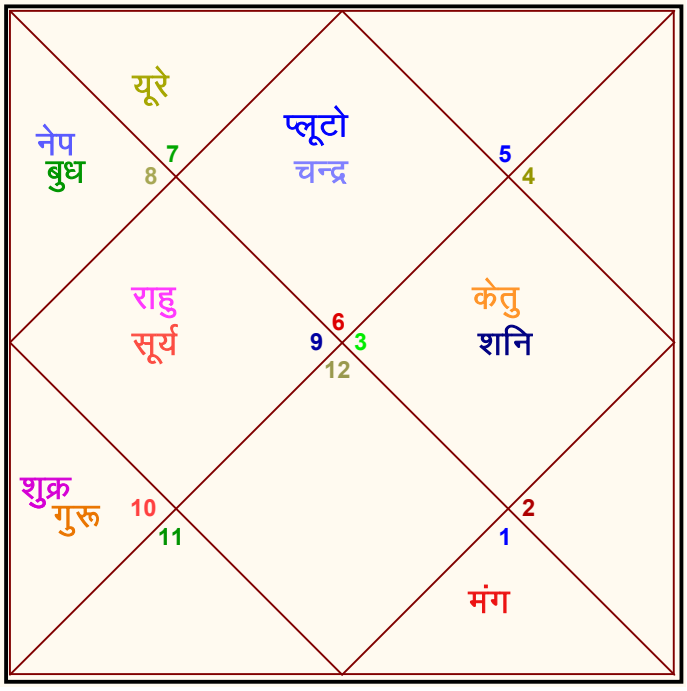

नवांश कुण्डली

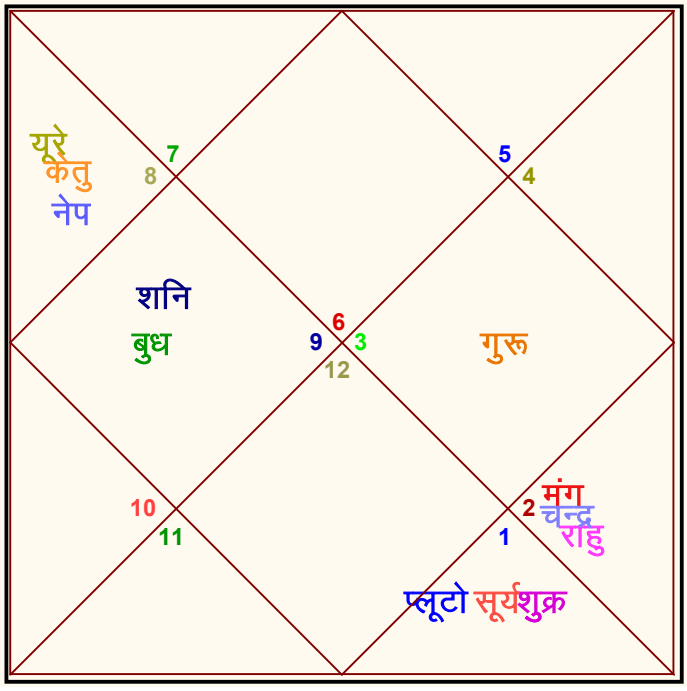

षोडश वर्ग कुण्डली

जन्म/लग्न कुण्डली (डी 1)

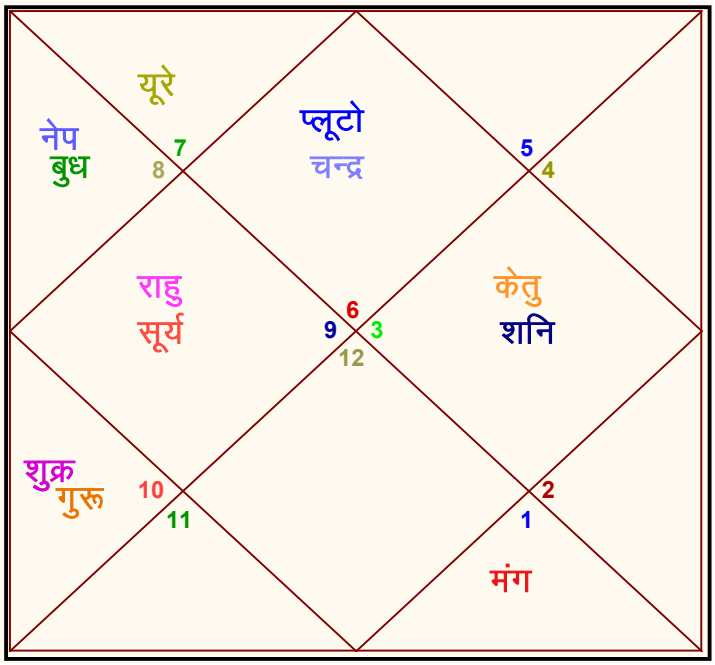

जन्मकुण्डली या लग्न कुण्डली एक व्यक्ति के जीवन की एक विस्तृत तस्वीर है। यह 12 घरों में विभाजित है जो जीवन के विभिन्न पहलुओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, प्रत्येक घर एक अलग राशि और ग्रह द्वारा नियंत्रित होता है। विभिन्न घरों में ग्रहों और राशियों के स्थान और परस्पर क्रिया का मूल्यांकन करके, कुण्डली किसी के व्यक्तित्व, रिश्तों, नौकरी, धन और सामान्य जीवन पथ में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

होरा कुण्डली (डी 2)

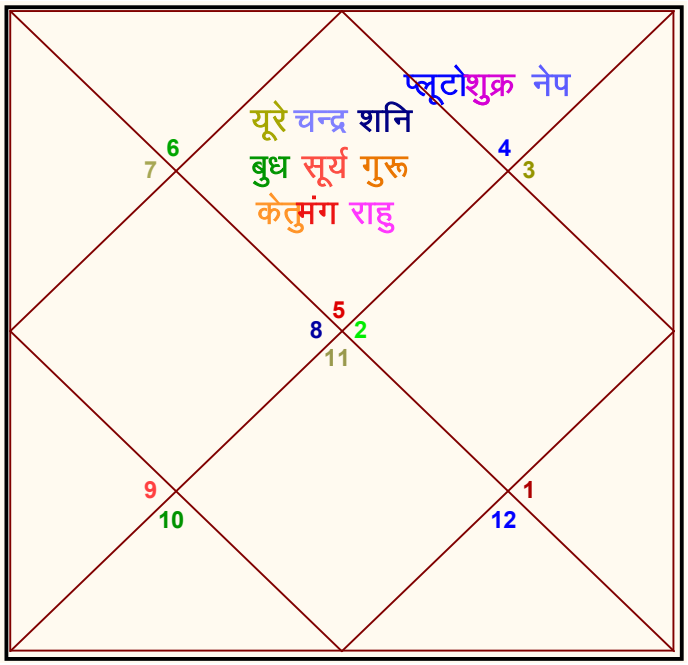

होरा कुण्डली मुख्य जन्म कुण्डली से निर्मित एक विभागीय कुण्डली है जिसका उपयोग समृद्धि और वित्तीय संभावनाओं को निर्धारित करने के लिए किया जाता है। यह जन्म कुंडली में प्रत्येक राशि को आधे में विभाजित करता है, जिसमें सूर्य पहले अर्द्ध भाग पर शासन करता है और चंद्रमा दूसरे पर शासन करता है। ज्योतिषी ग्रहों की स्थिति और होरा कुण्डली के भीतर उनके संबंध या संयोजन का मूल्यांकन करके जीवन भर धन और वित्तीय स्थिरता प्राप्त करने के लिए किसी व्यक्ति की क्षमता का अनुमान लगा सकते हैं।

द्रेष्काण कुण्डली (डी 3)

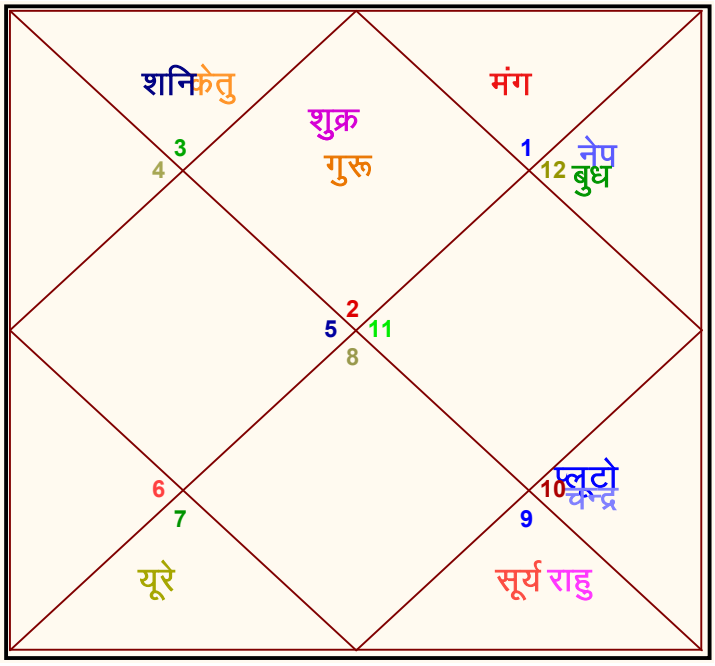

द्रेक्कन कुण्डली, प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 3 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 10 डिग्री माप का होता है। इस कुण्डली का उपयोग किसी के जीवन पर उसके भाई–बहनों, चचेरे भाई–बहनों और अन्य करीबी रिश्तेदारों के प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति की संचार क्षमता, छोटी यात्रा और साहस पर अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों का अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करने में सहायता मिलती है।

चतुर्थांश कुण्डली (डी 4)

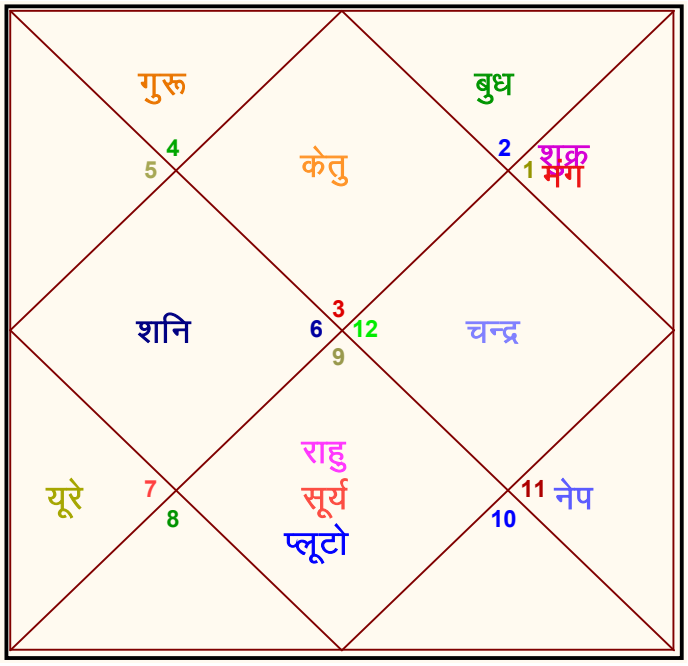

चतुर्थांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 4 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 7.5 डिग्री तक फैला हुआ है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के घर, जमीन और ऑटोमोबाइल के संबंध में उसकी खुशी, संपत्ति और भाग्य का मूल्यांकन करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की सुरक्षा, भावनात्मक कल्याण, और उनकी मां या मातृभाषा के साथ संबंध में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन क्षेत्रों के बारे में बेहतर ज्ञान प्राप्त करने में सहायता करता है।

षोडश वर्ग कुण्डली

सप्तमांश कुण्डली (डी 7)

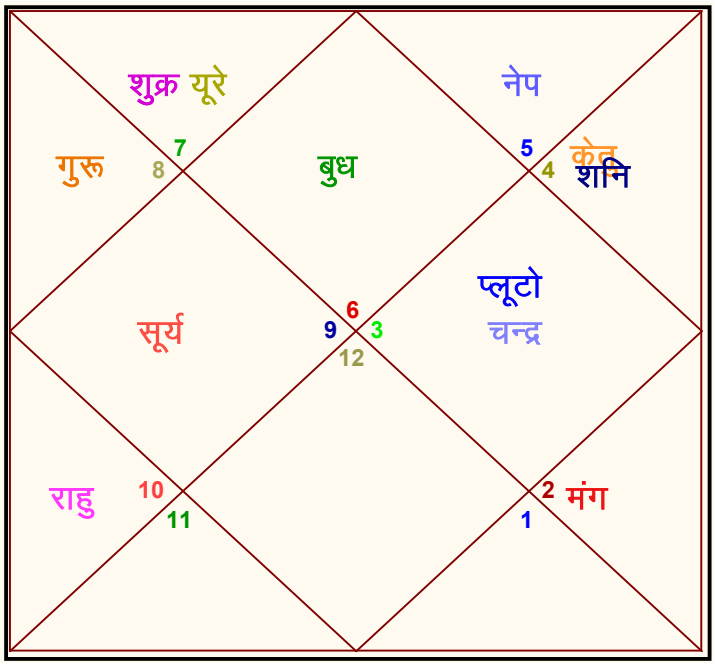

सप्तांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो मुख्य जन्म कुण्डली के प्रत्येक चिन्ह को 7 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप लगभग 4.29 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग सामान्यतः किसी व्यक्ति के जीवन में संतान, प्रजनन क्षमता और प्रसव से संबंधित मुद्दों का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के स्वास्थ्य, कल्याण और बच्चों से उत्पन्न होने वाले सामान्य आनंद के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है, साथ ही साथ किसी व्यक्ति के बच्चों की संख्या के बारे में अंतर्दृष्टि भी प्रदान करता है।

नवांश कुण्डली (डी 9)

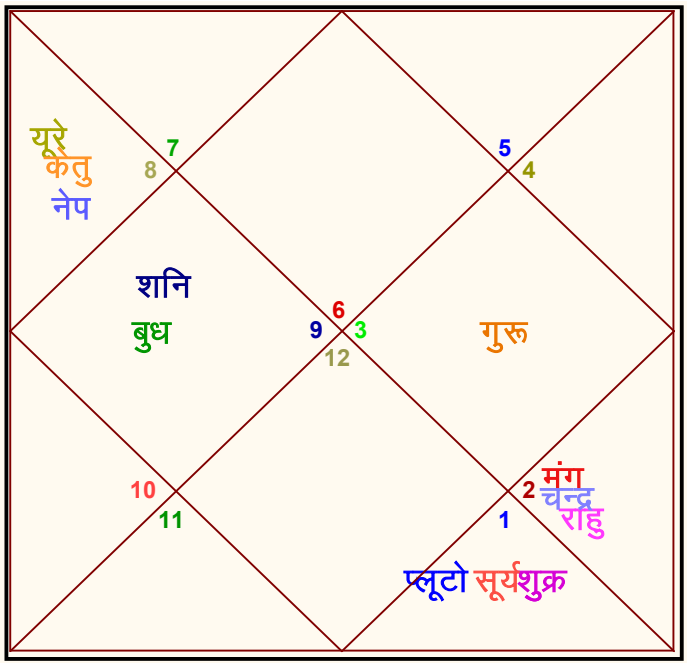

नवांश कुण्डली वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण संभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 9 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 3.20 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर ग्रहों की ताकत और कमजोरियों, वैवाहिक जीवन की गुणवत्ता और किसी के जीवनसाथी की प्रकृति का निर्धारण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास और आकांक्षाओं की पूर्ति में गहरी अंतर्दृष्टि भी देता है, जिससे ज्योतिषियों के लिए व्यक्ति के जीवन के कई क्षेत्रों को समझने में यह एक महत्वपूर्ण उपकरण बन जाता है।

दशमांश कुण्डली (डी 10)

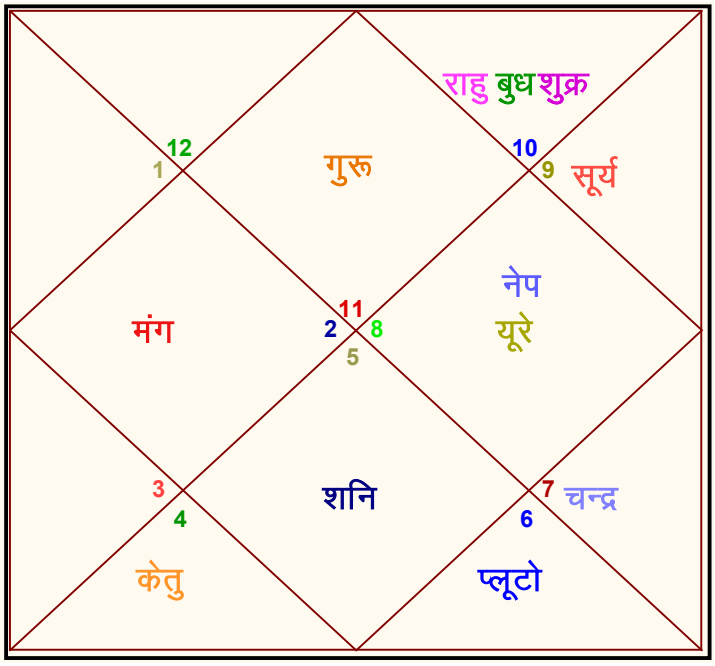

दशमांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 10 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 3 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के करियर, पेशे और समग्र व्यावसायिक उपलब्धि का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को पेशेवर प्रगति और सफलता के लिए मार्गदर्शन प्रदान करने के साथ–साथ सर्वोत्तम कार्य मार्ग, संभावित उन्नति और कार्यस्थल की बाधाओं के बारे में जानकारी देता है।

द्वादशांश कुण्डली (डी 12)

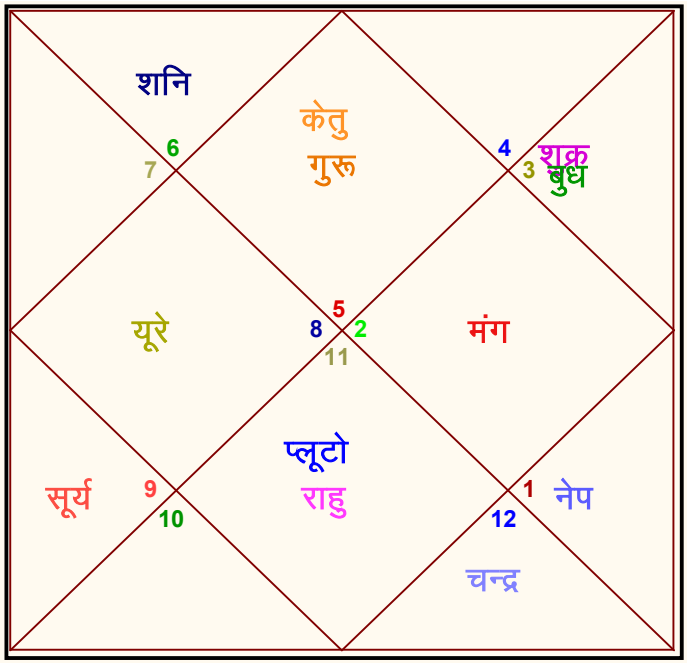

द्वादशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 12 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 2.5 डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति के माता–पिता, पूर्वजों और पारिवारिक वंश के मुद्दों की जांच करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के माता–पिता, विरासत और पारिवारिक कर्म के साथ एक व्यक्ति के संबंध को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को एक व्यक्ति के जीवन के इन महत्वपूर्ण क्षेत्रों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करता है।

षोडश वर्ग कुण्डली

षोडशांश कुण्डली (डी 16)

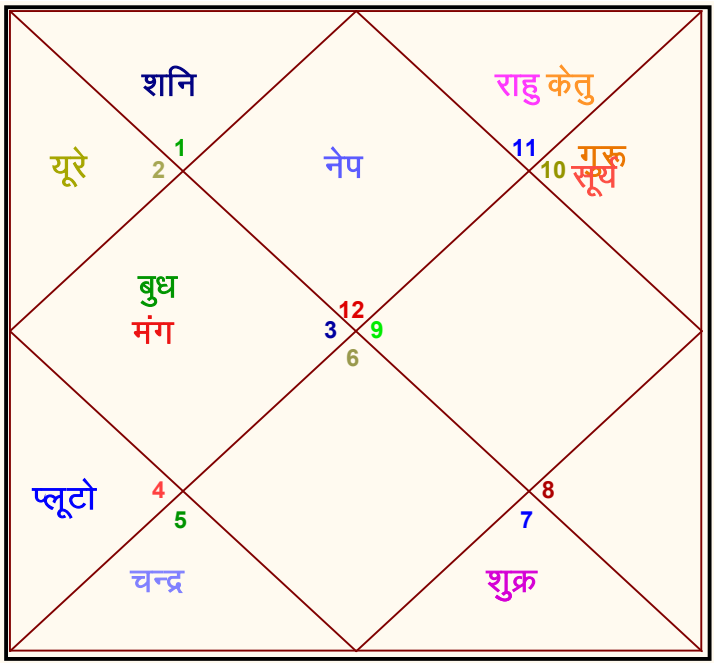

षोडशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 16 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.875 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के ऑटोमोबाइल, आराम और विलासिता की विशेषताओं की जांच करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति की वाहन, अचल संपत्ति, और अन्य वस्तुओं को हासिल करने और बनाए रखने की क्षमता को प्रकट करता है जो उनके जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के अस्तित्व के इन विशिष्ट पहलुओं को समझने में सहायता मिलती है।

विशांश कुण्डली (डी 20)

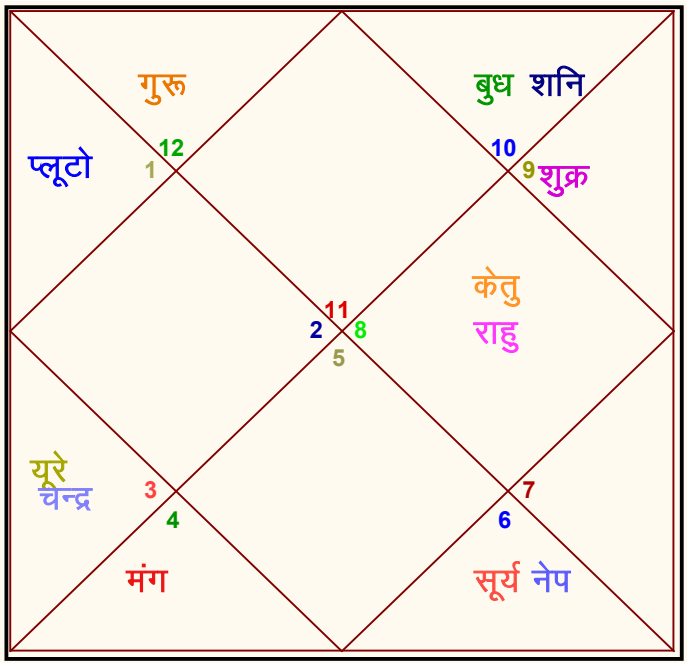

विशांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 20 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 1.5 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग बड़े पैमाने पर किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक विकास, धार्मिक प्राथमिकताओं और अधिक ज्ञान की खोज का विश्लेषण करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के अंतर्रात्मा, आध्यात्मिक क्षमता और उनके जीवन में धर्म और आध्यात्मिकता के महत्व के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को किसी व्यक्ति के जीवन के इन तत्वों का पता लगाने में सहायता मिलती है।

चर्तुविंशांश कुण्डली (डी 24)

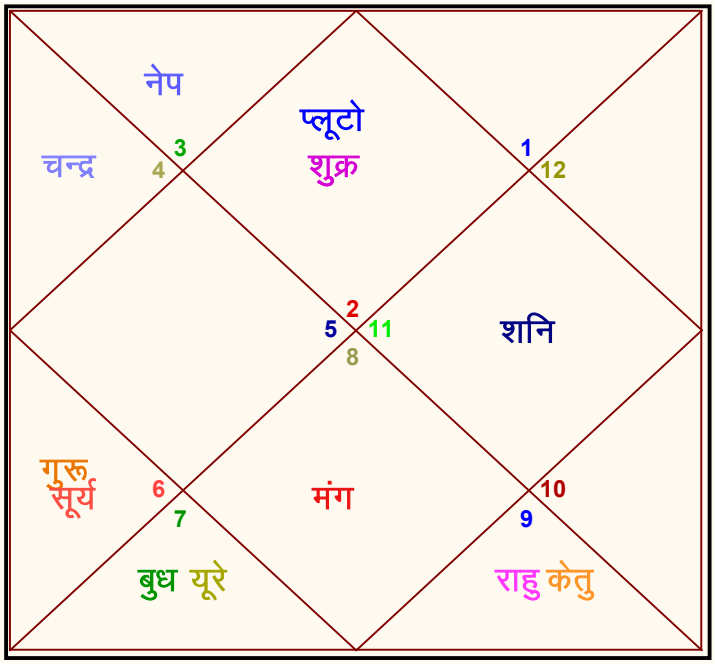

चर्तुविंशांश कुण्डली एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 24 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक की माप 1.25 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग आमतौर पर किसी व्यक्ति की शिक्षा, प्रतिभा और सीखने की क्षमता का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह कुछ विषयों, विशेषज्ञता के क्षेत्रों और शैक्षिक उपलब्धि के लिए एक व्यक्ति की योग्यता को प्रकट करता है, ज्योतिषियों को अकादमिक उन्नति प्राप्त करने और बौद्धिक क्षमता तक पहुंचने के लिए मागदर्शन प्रदान करने की अनुमति देता है।

सप्तविंशांश कुण्डली (डी 27)

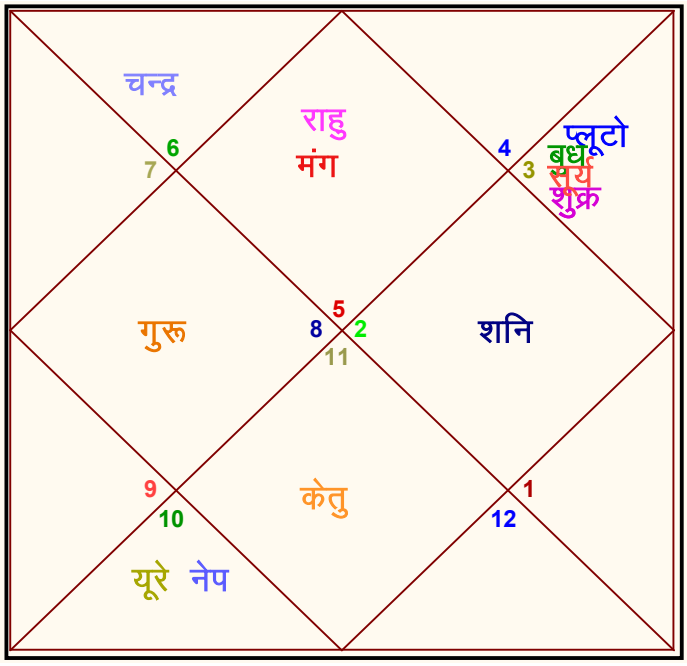

सप्तविंशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 27 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 1.11 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के नक्षत्रों या चंद्र राशियों की ताकत और उनके जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह ज्योतिषियों को व्यक्ति के स्वभाव, आचरण और अंतर्निहित नक्षत्रों से प्रभावित जीवन की घटनाओं के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करके व्यक्ति के भाग्य और आध्यात्मिक झुकाव के बारे में बेहतर ज्ञान देता है।

षोडश वर्ग कुण्डली

त्रिंशांश कुण्डली (डी 30)

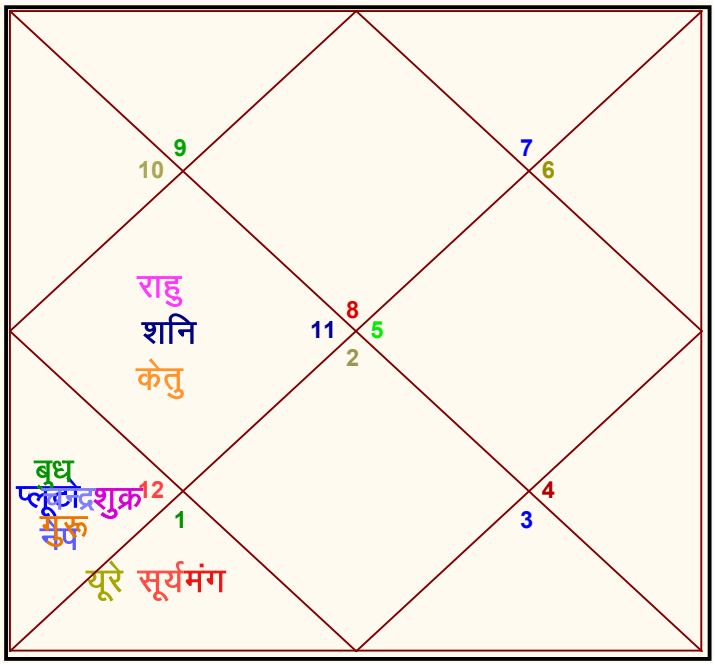

त्रिशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 30 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को एक डिग्री में मापता है। इस कुण्डली का उपयोग ज्यादातर उन कई कठिनाइयों और आपदाओं का आकलन करने के लिए किया जाता है जो एक व्यक्ति अपने जीवन के दौरान अनुभव कर सकता है। यह एक व्यक्ति की छिपी ताकत, कमजोरियों और उनकी कठिनाइयों के स्रोत को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को बाधाओं पर काबू पाने और जीवन के कई पहलुओं में कठिनाइयों का सामना करने हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

खवेदांश कुण्डली (डी 40)

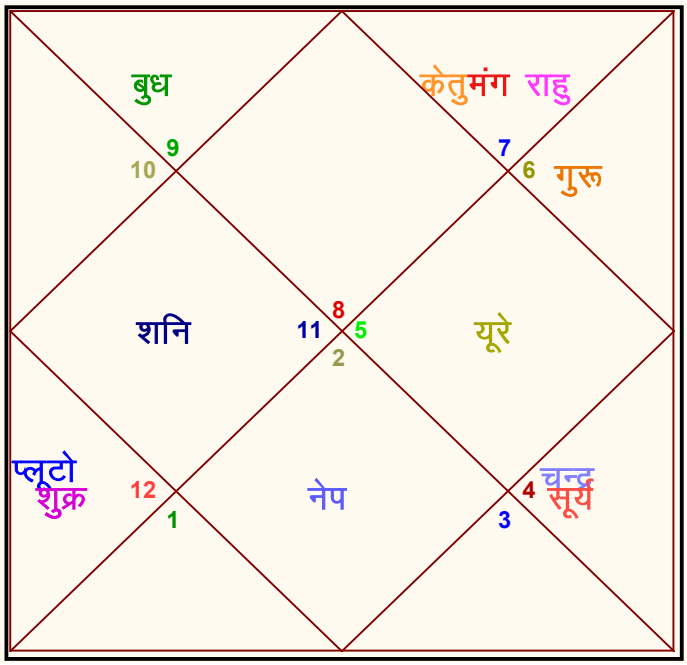

खवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 40 बराबर टुकड़ों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.75 डिग्री मापता है। इस कुण्डली का उपयोग आम तौर पर किसी व्यक्ति की समग्र भलाई और शुभता की गहरी समझ प्राप्त करने के लिए किया जाता है। यह किसी व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के साथ–साथ उनके समग्र सुख और समृद्धि के बारे में जानकारी प्रदान करता है, जिससे ज्योतिषियों को जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने और एक सामंजस्यपूर्ण जीवन शैली प्राप्त करने के बारे में सलाह देने की अनुमति मिलती है।

अक्षवेदांश कुण्डली (डी 45)

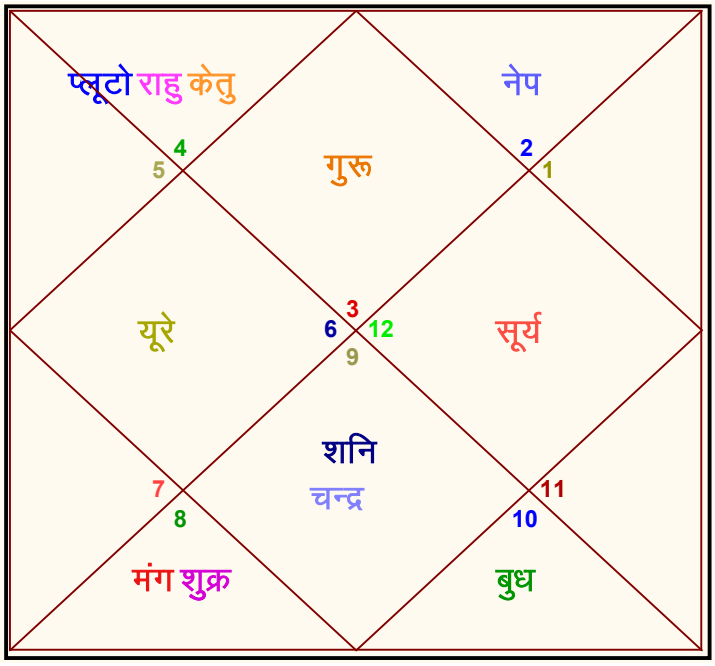

अक्षवेदांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 45 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 0.67 डिग्री है। इस कुण्डली का उपयोग अधिकांशतः किसी व्यक्ति के आध्यात्मिक और दिव्य गुणों का आकलन करने के लिए उपयोग किया जाता है। यह एक व्यक्ति की प्रा.तिक आध्यात्मिक क्षमता, दैवीय आशीर्वाद और आध्यात्मिक विकास स्तर को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को आध्यात्मिक विकास में उन्नति और जागरूकता के उच्च स्तर की प्राप्ति हेतु मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

षष्ठांश कुण्डली (डी 60)

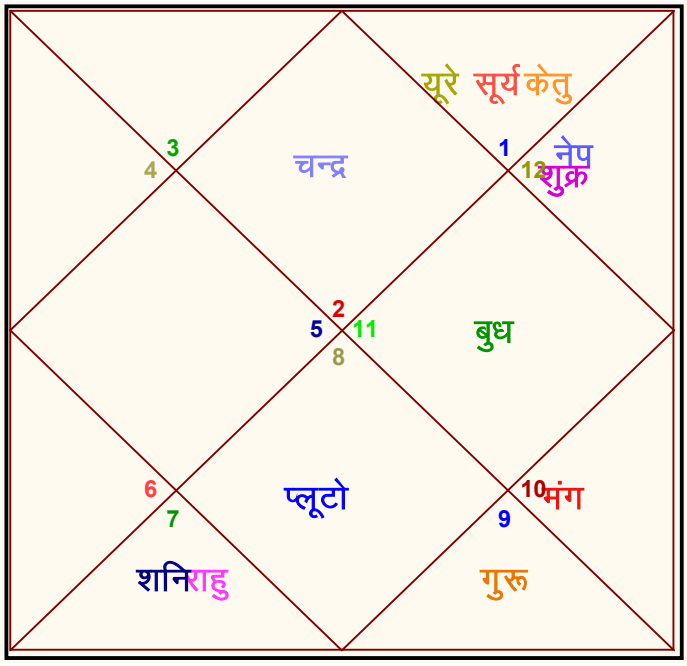

षष्ठांश कुण्डली, एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 60 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 0.5 डिग्री मापता है। यह कुण्डली अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है और इसका उपयोग मुख्य रूप से किसी व्यक्ति के जीवन को प्रभावित करने वाले सबसे गहरे कर्म प्रभावों को प्रकट करने के लिए किया जाता है। यह एक व्यक्ति के पूर्व जीवन के कर्मों, अव्यक्त झुकावों और उनकी गतिविधियों के सूक्ष्म प्रभावों को प्रकट करता है, जिससे ज्योतिषियों को कर्म असंतुलन को ठीक करने और अत्यधिक संतोषप्रद जीवन जीने का मार्गदर्शन करने में सहायता मिलती है।

षोडश वर्ग कुण्डली

पंचमांश कुण्डली (डी 5)

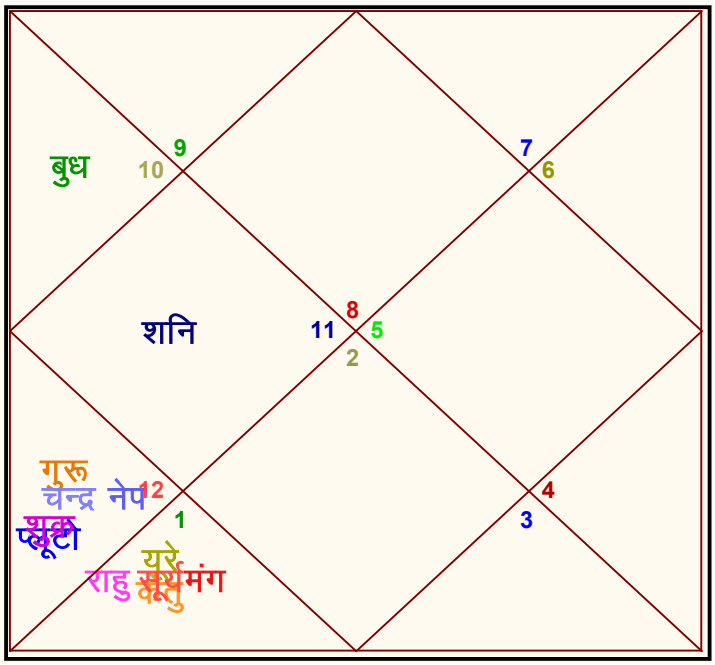

पंचांश कुण्डली एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 5 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक को 6 डिग्री में मापता है। यह कुण्डली पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में अक्सर उपयोग नहीं किया जाता है, लेकिन यह आधुनिक अभ्यास में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। यह मुख्य रूप से जीवन के विभिन्न पहलुओं में किसी व्यक्ति की छिपी हुई प्रतिभा और क्षमता में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए उपयोग किया जाता है। यह उन ज्योतिषियों के लिए उपयोगी जानकारी हो सकती है जो लोगों को उनके विशेष कौशल और गुणों की खोज करने और उन्हें बढ़ावा देने में मार्गदर्शन करते हैं।

षष्टमांश कुण्डली (डी 6)

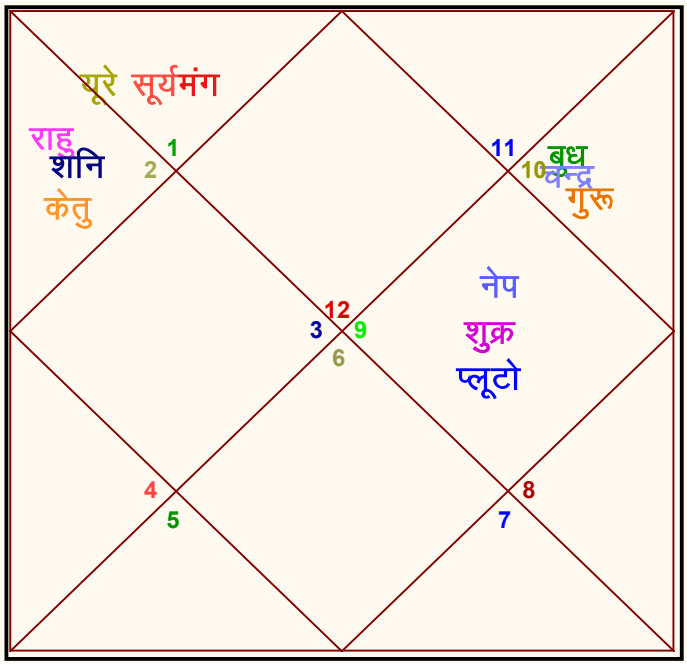

षष्टांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 6 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक की माप 5 डिग्री है। इस कुण्डली का पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में अक्सर उपयोग नहीं किया जाता है, लेकिन यह आधुनिक अभ्यास में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। इसका प्राथमिक उद्देश्य किसी व्यक्ति की छिपी हुई शक्तियों और जीवन के कई हिस्सों में खामियों को प्रकट करना है। षष्ठांश कुण्डली ज्योतिषियों को उनकी क्षमता की खोज करने और उन्हें बढ़ावा देने के साथ–साथ समस्याओं पर काबू पाने में मार्गदर्शन करने में सहायता कर सकता है।

अष्टमांश कुण्डली (डी 8)

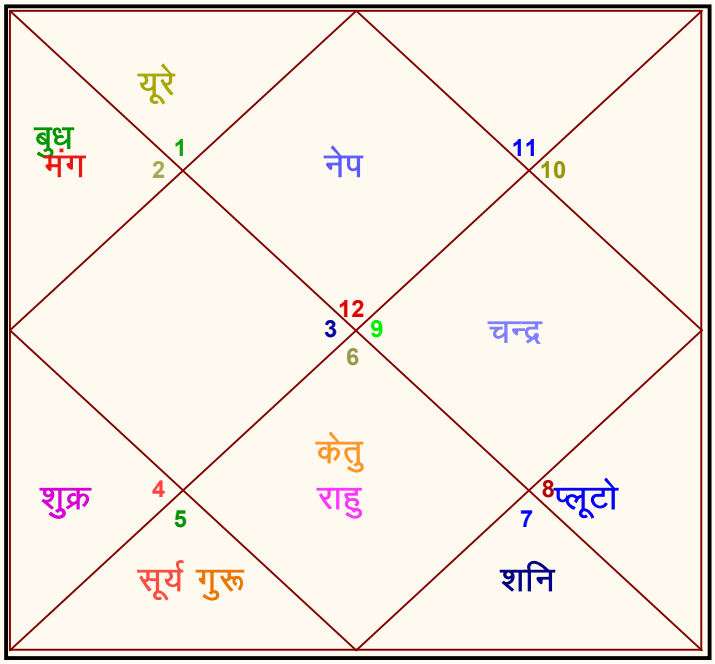

अष्टांश कुण्डली, एक विभाजन कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 8 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक का माप 3.75 डिग्री है। यह कुण्डली पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में शायद ही कभी उपयोग किया जाता है और वर्तमान अभ्यास में इसका बहुत कम उपयोग होता है। यह आमतौर पर किसी व्यक्ति की विशिष्ट विशेषताओं और उनके जीवन पथ से जुड़ी विशेषताओं का पता लगाने के लिए उपयोग किया जाता है। अष्टांश कुण्डली ज्योतिषियों को लोगों को उनके जीवन के कई पहलुओं को समझने और सुधारने में मदद करने के लिए अधिक जानकारी दे सकता है।

एकादशांश कुण्डली (डी 11)

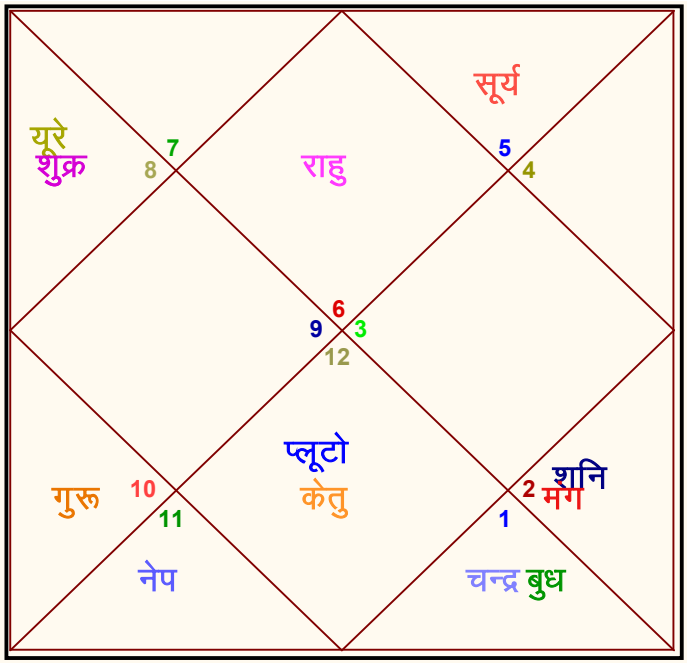

एकादशांश कुण्डली, एक विभागीय कुण्डली है जो प्रत्येक राशि को मुख्य जन्म कुण्डली में 11 बराबर भागों में विभाजित करता है, प्रत्येक 2.73 डिग्री के आसपास फैला हुआ है। हांलाकि यह प्रायः पारंपरिक वैदिक ज्योतिष में नियोजित नहीं होता है, यह वर्तमान अभ्यास में लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। सामान्यतः इसका उपयोग किसी व्यक्ति की उपलब्धियों और जीवन के कई पहलुओं में सफलता, विशेष रूप से उनकी नौकरी और करियर में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए किया जाता है। एकादशांश कुण्डली ज्योतिषियों को उनके चुने हुए क्षेत्र में उनकी अधिकतम क्षमता तक पहुंचने में सहायता करने के लिए उपयोगी जानकारी प्रदान कर सकता है।

सर्वाष्टकवर्ग (337)

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	2	1	6	4	3	4	3	5	4	2	3	2	39
♃ गुरू	3	5	3	6	4	4	7	5	3	5	6	5	56
♂ मंगल	4	2	4	3	1	4	3	5	3	3	5	2	39
☉ सूर्य	3	2	6	7	3	4	3	4	5	4	4	3	48
♀ शुक्र	5	4	1	4	5	7	6	5	3	5	3	4	52
☿ बुध	7	3	4	5	4	4	5	5	5	4	5	3	54
☽ चन्द्रमा	3	4	5	5	4	5	4	6	2	3	5	3	49
योग	27	21	29	34	24	32	31	35	25	26	31	22	337

ग्रहों के बल का मूल्यांकन

- ग्रहों के बल का मूल्यांकन
- घटनाओं की भविष्यवाणी
- अनुकूल समय की पहचान
- उपाचारीय ज्योतिष

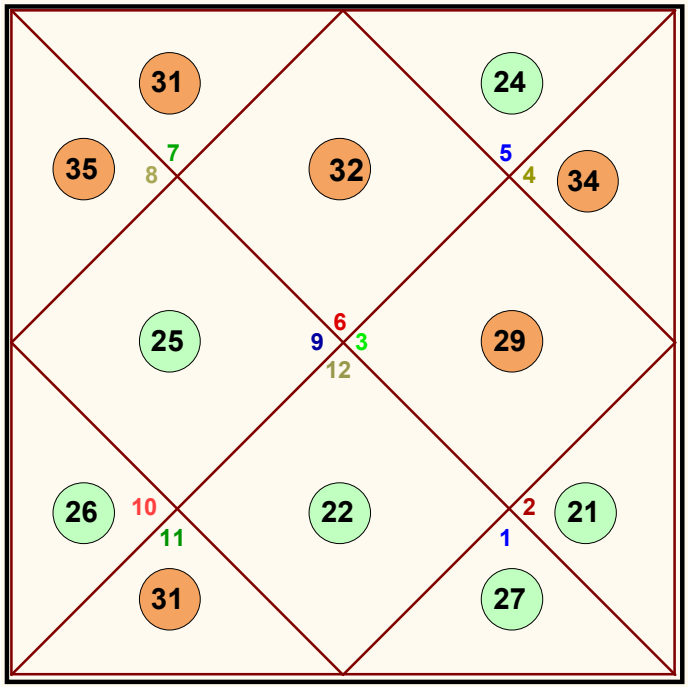

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

सर्वाष्टकवर्ग योग

दमरूक योग : आपकी जन्म कुण्डली के सर्वाष्टक वर्ग के मध्य भाग (पाँचवी से आठवीं भाव राशि तक) में सबसे कम शुभ बिन्दु हैं, इस कारण आपकी कुण्ड़ली में दमरूक योग है। आप अपने जीवन के दूसरे चरण (लगभग 24 से 48 वर्ष) की अपेक्षा पहले चरण (24 वर्ष तक) और तीसरे चरण (लगभग 48 से 72 वर्ष) में अधिक समृद्ध रहेंगे।

सूर्य भिन्नाष्टक वर्ग

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
♃ गुरू	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	0	4
♂ मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
☉ सूर्य	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	1	8
♀ शुक्र	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	3
☿ बुध	1	0	0	1	1	1	1	0	0	1	0	1	7
☽ चन्द्रमा	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
AC लग्न	0	0	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	6
योग	3	2	6	7	3	4	3	4	5	4	4	3	48

सूर्य का कारकत्व

- आत्मा एवं स्व
- अधिकार और नेतृत्व
- स्वास्थ्य और जीवन शक्ति
- पिता और पितातुल्य व्यक्ति
- कैरियर और सफलता

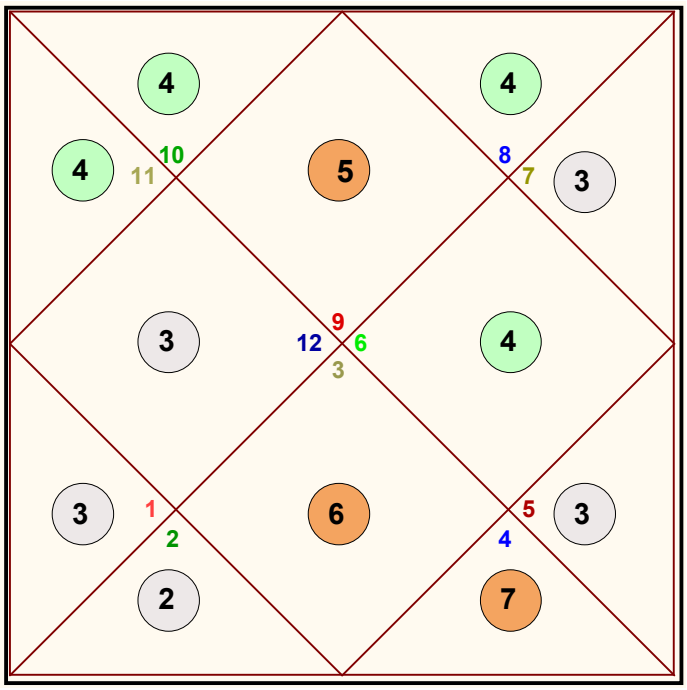

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

चन्द्रमा भिन्नाष्टक वर्ग

राशि		मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव		VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄	शनि	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
♃	गुरू	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	0	0	7
♂	मंगल	0	1	1	0	1	1	0	0	1	1	1	0	7
☉	सूर्य	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	1	0	6
♀	शुक्र	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	7
☿	बुध	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
☽	चन्द्रमा	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	1	6
AC	लग्न	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
योग		3	4	5	5	4	5	4	6	2	3	5	3	49

चन्द्रमा का कारकत्व

- मन और भावनाएँ
- माँ और मातातुल्य स्त्री
- घर और पारिवारिक जीवन
- कल्पना और रचनात्मकता
- विकास और पोषण

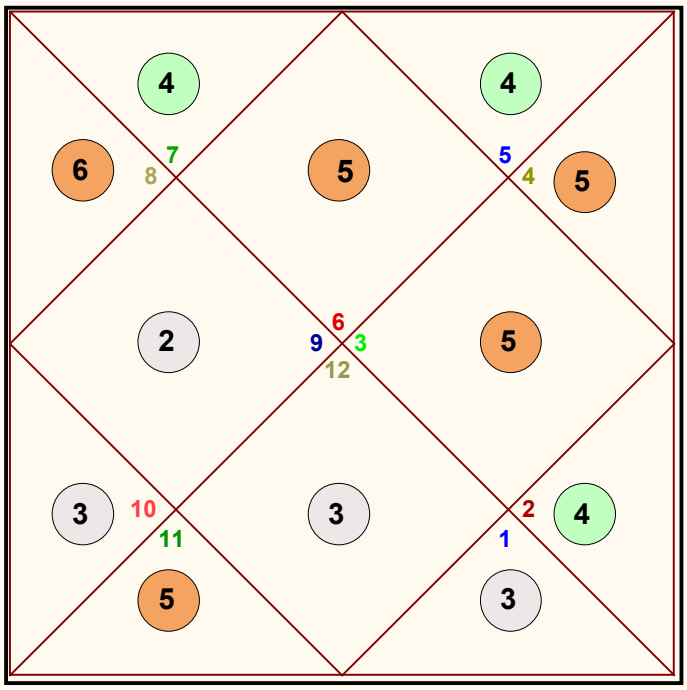

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

मंगल भिन्नाष्टक वर्ग

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	1	0	0	1	0	0	1	1	1	1	7
♃ गुरू	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	0	4
♂ मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
☉ सूर्य	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	1	0	5
♀ शुक्र	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
☿ बुध	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	4
☽ चन्द्रमा	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
AC लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	0	0	1	0	5
योग	4	2	4	3	1	4	3	5	3	3	5	2	39

मंगल का कारकत्व

- ऊर्जा और क्रिया
- जुनून और संचालन
- आक्रामकता और संघर्ष
- नेतृत्व और उद्यमशीलता
- अभियांत्रिकी और तकनीकी कौशल

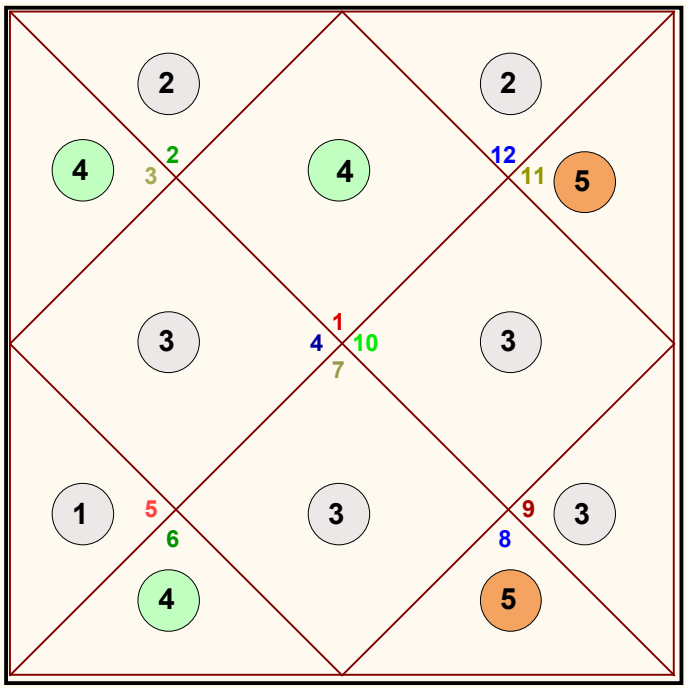

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

बुध भिन्नाष्टक वर्ग

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
♃ गुरू	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
♂ मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
☉ सूर्य	1	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	5
♀ शुक्र	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	1	1	8
☿ बुध	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	0	1	8
☽ चन्द्रमा	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	1	0	6
AC लग्न	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	1	0	7
योग	7	3	4	5	4	4	5	5	5	4	5	3	54

बुध का कारकत्व

- बुद्धि और संचार
- वाणिज्य और व्यवसाय
- अधिगम और शिक्षा
- यात्रा और संचालन
- रचनात्मकता और कला

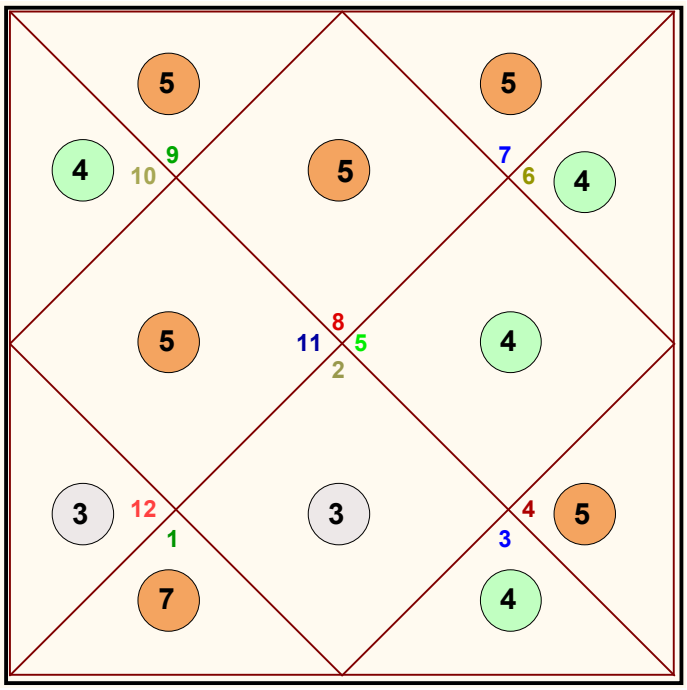

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

गुरू भिन्नाष्टक वर्ग

राशि		मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव		VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄	शनि	0	1	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
♃	गुरू	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	1	8
♂	मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
☉	सूर्य	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	1	1	9
♀	शुक्र	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	0	6
☿	बुध	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	8
☽	चन्द्रमा	0	1	0	1	0	0	1	0	0	1	0	1	5
AC	लग्न	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
योग		3	5	3	6	4	4	7	5	3	5	6	5	56

गुरू का कारकत्व

- बुद्धि और ज्ञान
- विकास और विस्तार
- नेतृत्व और अधिकार
- संतान और परिवार
- आध्यात्मिकता और धर्म

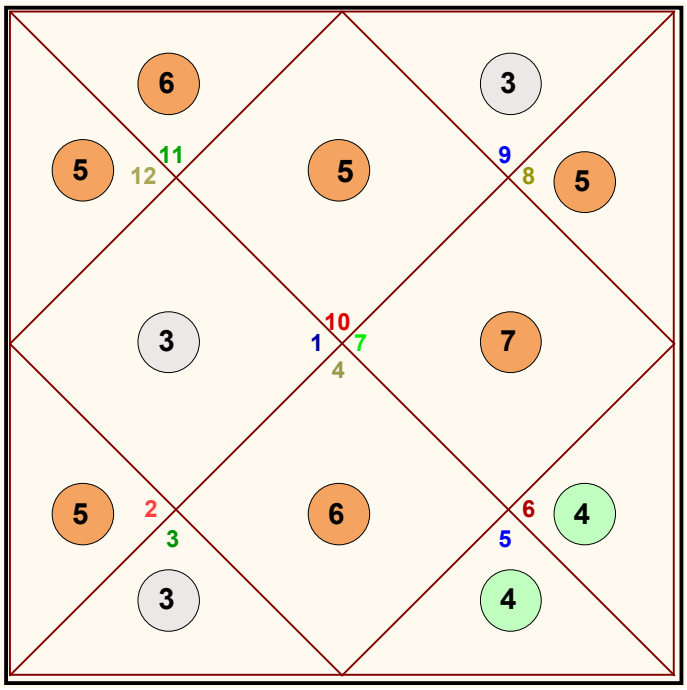

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

शुक्र भिन्नाष्टक वर्ग

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	1	7
♃ गुरू	0	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	0	5
♂ मंगल	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	1	6
☉ सूर्य	0	0	0	1	0	0	1	1	0	0	0	0	3
♀ शुक्र	1	1	0	0	1	1	1	1	0	1	1	1	9
☿ बुध	1	0	0	1	0	1	0	0	0	1	0	1	5
☽ चन्द्रमा	1	1	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	9
AC लग्न	1	1	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	8
योग	5	4	1	4	5	7	6	5	3	5	3	4	52

शुक्र का कारकत्व

- प्रेम और रोमांच
- विवाह और साझेदारी
- कला और सौंदर्यशास्त्र
- विलासिता और सुखसुविधा
- वित्त और धन

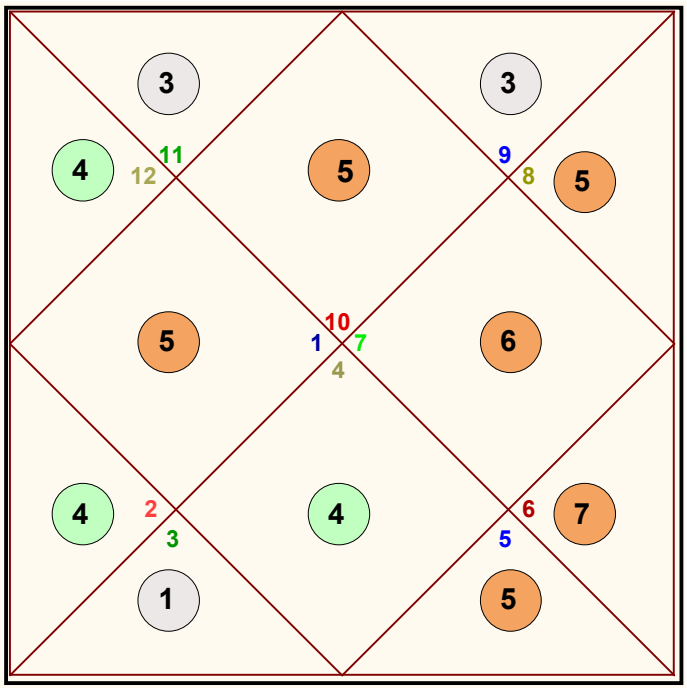

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

शनि भिन्नाष्टक वर्ग

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव	VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄ शनि	1	0	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	4
♃ गुरू	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	4
♂ मंगल	0	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	6
☉ सूर्य	0	0	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	7
♀ शुक्र	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	0	0	3
☿ बुध	1	0	1	1	1	1	1	0	0	0	0	0	6
☽ चन्द्रमा	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
AC लग्न	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	6
योग	2	1	6	4	3	4	3	5	4	2	3	2	39

शनि का कारकत्व

- कठिन परिश्रम और अनुशासन
- बाधाएं और चुनौतियां
- समय और कर्म
- अधिकार और नेतृत्व
- आध्यात्मिकता और वैराग्य

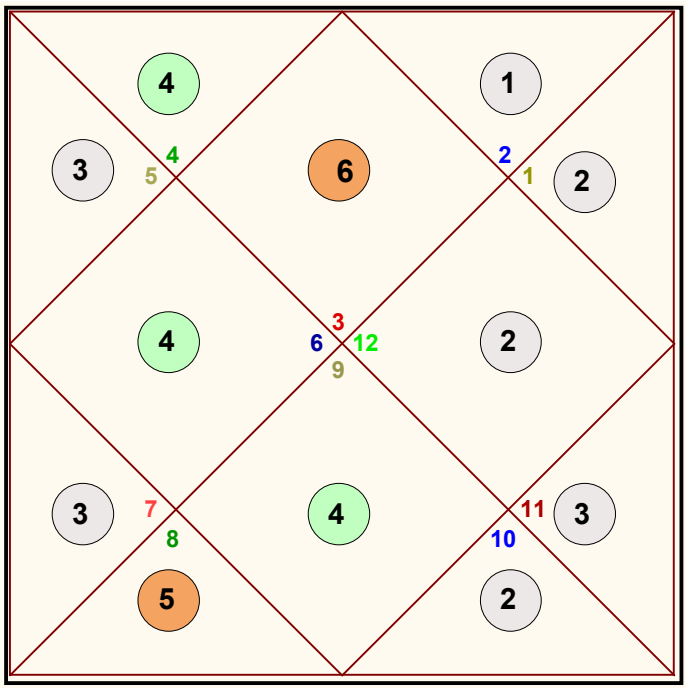

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

राहु भिन्नाष्टक वर्ग

राशि		मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	
भाव		VIII	IX	X	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	
♄	शनि	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
♃	गुरू	1	1	1	1	0	1	1	1	0	1	1	0	9
♂	मंगल	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	5
☉	सूर्य	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	1	1	6
♀	शुक्र	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	1	7
☿	बुध	1	0	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	7
☽	चन्द्रमा	0	0	1	1	1	0	0	1	0	0	1	0	5
AC	लग्न	0	0	1	1	0	0	0	1	0	0	1	0	4
योग		5	3	6	3	4	6	2	6	1	3	7	3	49

राहु का कारकत्व

- आकांक्षा और सनक
- महत्वाकांक्षा और सफलता
- भ्रम और धोखा
- विदेश भूमि और यात्रा
- आध्यात्मिकता और प्रबोधन

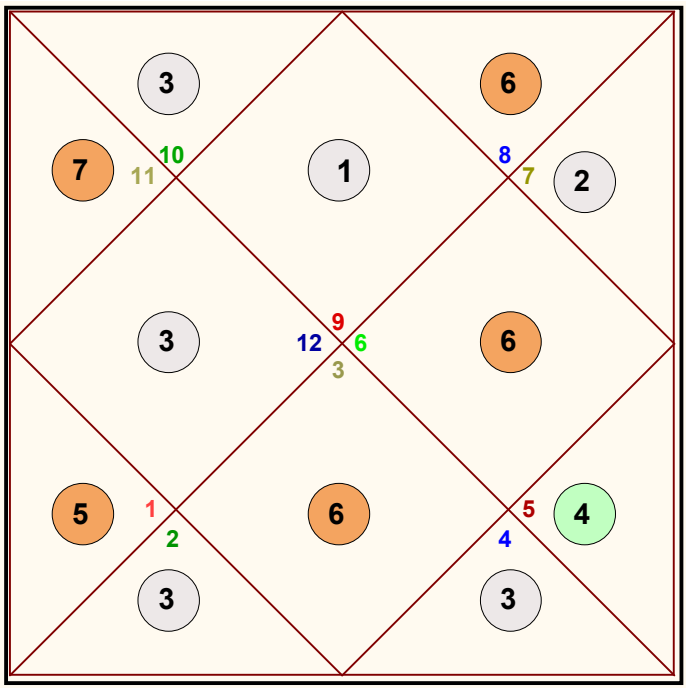

Legends :

शुभ मिश्रित अशुभ

सर्वाष्टक वर्ग के महत्वपूर्ण बिन्दु

लग्न कुण्डली

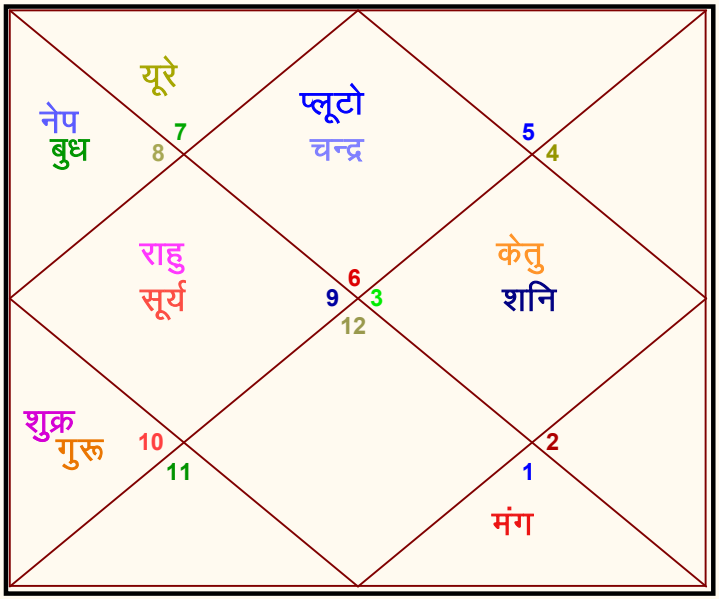

सर्वाष्टक वर्ग कुण्डली

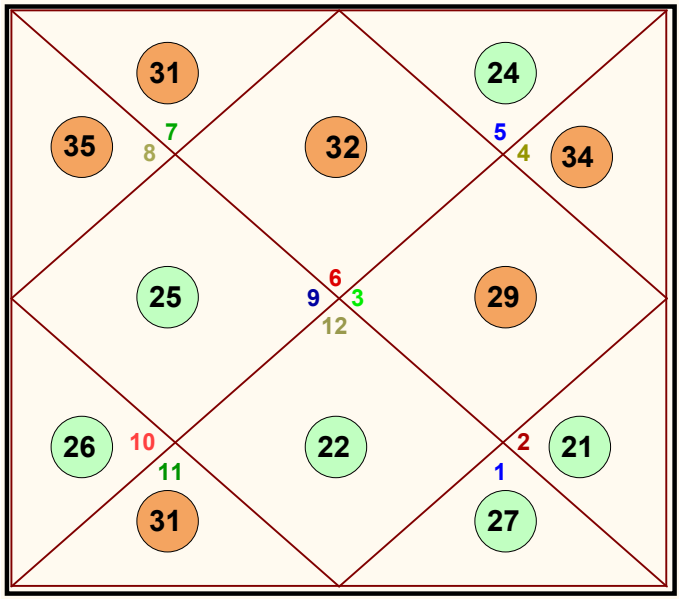

तत्व चक्र

सर्वाष्टक वर्ग बिन्दु	पूर्णांकं	प्राप्ति	शुभ दिशा
अग्नि त्रिकोन	84.25	76	पूर्व
पृथ्वी त्रिकोन	84.25	79	दक्षिण
वायु त्रिकोन	84.25	91	पश्चिम
जल त्रिकोन	84.25	91	उत्तर

(विशेष– सबसे ज्यादा बिन्दु सबसे शुभ दिशा को इंगित करता है (पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर)। अगर दोनो भागों के बिन्दुओं की संख्या बराबर या आसपास हैं तो शुभ दिशा (उपू0, दपू0, उप0 और दप0) होगी।)

भुवन चक्र

सर्वाष्टक वर्ग बिन्दु	पूर्णांकं	प्राप्ति	निष्कर्ष
केन्द्र भाव–राशि	112.33	108	मेहनत और लगन
पनफरा भाव–राशि	112.33	118	आर्थिक स्थिति
अपोक्लिम् भाव–राशि	112.33	111	वित्त हानि

दिशा चक्र

भाग	सर्वाष्टक बिन्दु	पूर्णांकं	प्राप्ति	निष्कर्ष
बन्धुक	भाग्य त्रिकोन	84.25	79	बन्धु –बान्धवो से सहायता
सेवक	कर्म त्रिकोन	84.25	91	नौकरी से अर्जन
पोषक	लाभ त्रिकोन	84.25	91	लाभ और धन
घातक	व्यय त्रिकोन	84.25	76	दुर्भाग्य और हानि

लग्न कुण्डली

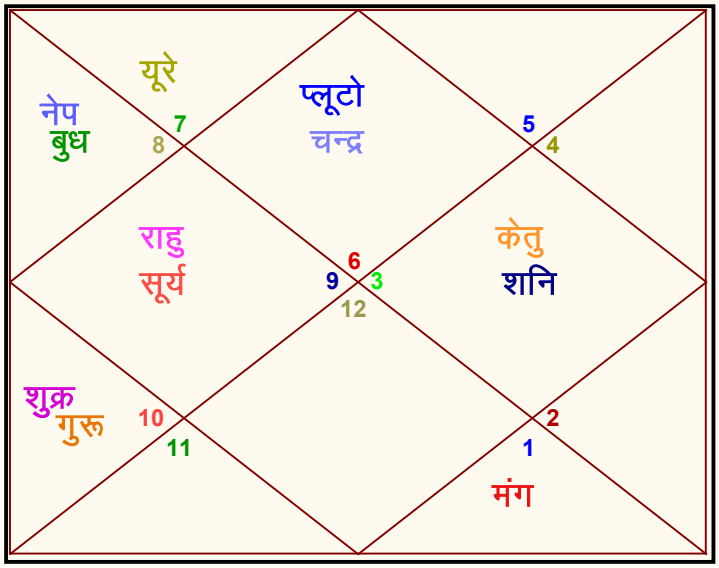

सर्वाष्टक वर्ग कुण्डली

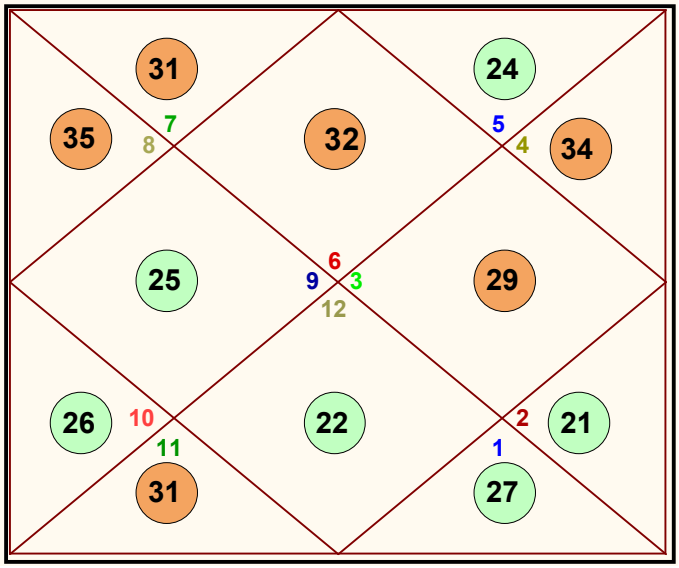

जीवन के महत्वपूर्ण कालखण्डो का अवलोकन

भाग	समयावधि	राशि		स. व. बिन्दु	योग	टिप्पणी
1st	0 - 24 Years	♍	कन्या	32	123	असाधारण
		♎	तुला	31		
		♏	वृश्चिक	35		
		♐	धनु	25		
2nd	25-48 Years	♑	मकर	26	106	अच्छा
		♒	कुम्भ	31		
		♓	मीन	22		
		♈	मेष	27		
3rd	> 48 Years	♉	वृष	21	108	अच्छा
		♊	मिथुन	29		
		♋	कर्क	34		
		♌	सिहं	24		

1 - 105	106 - 118	> 118
खराब	अच्छा	असाधारण

कष्ट तुल्य भाव

भाव	राशि		स. व. बिन्दु	योग	टिप्पणी
6	♒	कुम्भ	31	82	< 84 Good
8	♈	मेष	27		
12	♌	सिहं	24		> 84 Not Good

सुदर्शन चक्र

वैदिक ज्योतिष में सुदर्शन चक्र एक महत्वपूर्ण उपकरण है जो किसी व्यक्ति के जीवन के तीन प्राथमिक पहलुओं, सूर्य (आत्मा), चंद्रमा (मन), और लग्न (शरीर) का प्रतिनिधित्व करने वाला एक व्यापक .ष्टिकोण प्रदान करता है। यह जन्म कुंडली के एकी.त विश्लेषण की अनुमति देता है, सटीक भविष्यवाणियों और व्यापक समझ में सहायता प्रदान करता है। यह तीन अलगअलग .ष्टिकोणों से गोचर का विश्लेषण करके घटनाओं के समय निर्धारण में भी मदद करता है। अंत में, यह समय अवधि की समग्र गुणवत्ता और किसी व्यक्ति के जीवन पर उनके प्रभावों को प्रकट करता है।

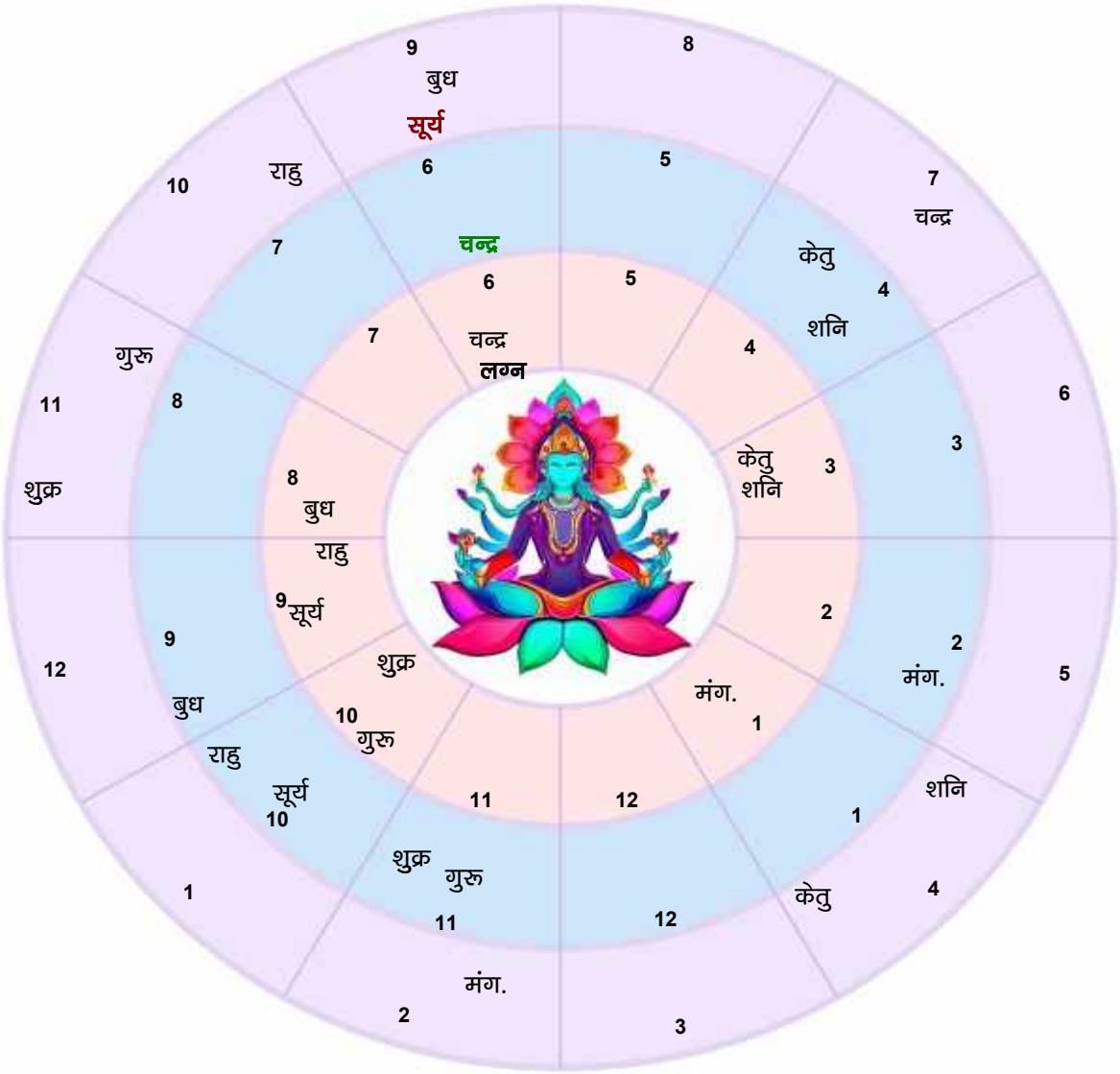

सुदर्शन चक्र शुभ और अशुभ ग्रहों के प्रभाव को दर्शाता है यह (i) लग्न (ii) चन्द्रमा और (iii)सूर्य की स्थिति से इन प्रभावों को देखता है। यह जातक की उम्र को भी दर्शाता है कि कब ये प्रभाव जातक पर पड़ेगें।

यदि केवल शुभ ग्रहों (वृहस्पति, शुक्र वुध, चन्द्रमा) का प्रभाव है तो पूरा साल खुशीयो से भरा होगा और मांगलिक कार्य होगें। यदि केवल अशुभ ग्रहों (मंगल, शनि, राहु, केतू, सुर्य) का प्रभाव है तो यह साल अमंगलकारी होगा।

षडबल और भावबल

बल का नाम	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	गुरू	शुक्र	शनि
उच्च बल	17.42	15.66	37.77	38.38	04.31	35.33	16.07
सप्त वर्ग बल	135.00	93.75	157.50	131.25	110.63	110.63	65.63
युग्म अयुग्म बल	30.00	30.00	15.00	15.00	15.00	15.00	30.00
केन्द्रादी बल	60.00	60.00	30.00	15.00	30.00	30.00	60.00
द्रेक्कन बल	15.00	00.00	15.00	15.00	00.00	00.00	00.00
स्थान बल	**257.42**	**199.41**	**255.27**	**214.63**	**159.94**	**190.96**	**171.69**
वांछित स्थान बल	165	133	96	165	165	133	96
वांछित अंश	156.01	149.93	265.90	130.08	96.93	143.58	178.85
दिग बल	**08.89**	**25.69**	**31.92**	**42.80**	**23.44**	**55.31**	**36.68**
वांछित दिग बल	35	50	30	35	35	50	30
वांछित अंश	25.41	51.38	106.40	122.29	66.97	110.62	122.28
नतोन्नत बल	09.58	50.42	50.42	09.58	00.00	09.58	50.42
पक्ष बल	34.58	25.42	34.58	25.42	25.42	25.42	34.58
त्रिभाग बल	00.00	00.00	00.00	00.00	60.00	60.00	00.00
वर्ष बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	15.00
मास बल	00.00	00.00	00.00	30.00	00.00	00.00	00.00
दिन बल	00.00	00.00	45.00	00.00	00.00	00.00	00.00
होरा बल	60.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
अयन बल	00.30	34.23	43.09	57.64	07.83	06.24	00.12
युद्ध बल	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00	00.00
काल बल	**104.47**	**110.06**	**173.09**	**122.64**	**93.25**	**101.24**	**100.12**
वांछित काल बल	112	100	67	112	112	100	67
वांछित अंश	93.28	110.06	258.35	109.50	83.26	101.24	149.44
चेष्टा बल	**00.30**	**25.42**	**07.50**	**30.00**	**45.00**	**45.00**	**60.00**
वांछित चेष्टा बल	50	30	40	50	50	30	40
वांछित अंश	00.60	84.72	18.75	60.00	90.00	150.00	150.00
नैसर्गिक बल	**60.00**	**51.43**	**17.14**	**25.71**	**34.29**	**42.86**	**08.57**
द्रिक बल	**-31.39**	**-02.62**	**-10.34**	**-23.64**	**-17.60**	**-19.69**	**00.23**
कुल षड्बल	**399.69**	**409.39**	**474.58**	**412.14**	**338.31**	**415.68**	**377.30**
षड्बल (रूप में)	**6.66**	**6.82**	**7.91**	**6.87**	**5.64**	**6.93**	**6.29**
न्यूनतम वांछनिय	390	360	300	420	390	330	300
वांछनिय अंश	102.48	113.72	158.19	98.13	86.75	125.96	125.77
तुलनात्मक स्थिति	**5**	**4**	**1**	**3**	**7**	**2**	**6**
इष्ट फल	**04.96**	**19.95**	**16.83**	**33.93**	**13.93**	**39.88**	**31.05**
कष्ट फल	**55.04**	**40.05**	**43.17**	**26.07**	**46.07**	**20.12**	**28.95**
दिप्ति बल	**100.00**	**25.42**	**40.81**	**26.59**	**15.23**	**52.01**	**58.02**

भाव सँख्या	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII
भाव राशि	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिहं
भावाधिपति बल	412.14	415.68	474.58	338.31	377.30	377.30	338.31	474.58	415.68	412.14	409.39	399.69
भाव दिग्बल	60.00	50.00	20.00	00.00	50.00	10.00	30.00	40.00	50.00	30.00	10.00	40.00
भाव दृष्टिबल	-09.32	26.29	-27.68	-21.62	-14.73	-13.15	-22.75	24.81	-23.33	-07.66	-09.70	-01.82
भावबल योग	**462.82**	**491.97**	**466.91**	**316.69**	**412.57**	**374.15**	**345.57**	**539.39**	**442.35**	**434.49**	**409.69**	**437.87**
भावबल (रूप में)	**7.71**	**8.20**	**7.78**	**5.28**	**6.88**	**6.24**	**5.76**	**8.99**	**7.37**	**7.24**	**6.83**	**7.30**
तुलनात्मक स्थिति	**4**	**2**	**3**	**12**	**8**	**10**	**11**	**1**	**5**	**7**	**9**	**6**

विंशोत्तरी दशा (1)

Moon (5 y.5 m.26 d.)

दशा बैलेंश

N.C.Lahiri (023:29:36)

अयनांश

चन्द्रमा (10 वर्ष)

18/12/1973 To 14/06/1979

1st भाव स्वनक्षत्र विशेष	कन्या राशि हस्ता (2) नक्षत्र	सम संबंन्ध 11 भावपति
चन्द्रमा	-------	-------
मंगल	-------	-------
राहु	-------	-------
गुरू	-------	-------
शनि	14-04-1975	00.00
बुध	13-09-1976	01.32
केतु	14-04-1977	02.74
शुक्र	13-12-1978	03.32
सूर्य	14-06-1979	04.99

मंगल (7 वर्ष)

14/06/1979 To 14/06/1986

8th भाव स्वराशि विशेष	मेष राशि अश्वि. (2) नक्षत्र	मित्र संबंन्ध 8 , 3 भावपति
मंगल	10-11-1979	05.49
राहु	28-11-1980	05.90
गुरू	04-11-1981	06.95
शनि	13-12-1982	07.88
बुध	10-12-1983	08.99
केतु	08-05-1984	09.98
शुक्र	08-07-1985	10.39
सूर्य	13-11-1985	11.55
चन्द्रमा	14-06-1986	11.90

राहु (18 वर्ष)

14/06/1986 To 13/06/2004

4th भाव वक्री विशेष	धनु राशि मूला (2) नक्षत्र	सम संबंन्ध भावपति
राहु	24-02-1989	12.49
गुरू	20-07-1991	15.19
शनि	26-05-1994	17.59
बुध	13-12-1996	20.44
केतु	31-12-1997	22.99
शुक्र	31-12-2000	24.04
सूर्य	25-11-2001	27.04
चन्द्रमा	26-05-2003	27.94
मंगल	13-06-2004	29.44

गुरू (16 वर्ष)

13/06/2004 To 13/06/2020

5th भाव नीच विशेष	मकर राशि श्रव. (3) नक्षत्र	सम संबंन्ध 4 , 7 भावपति
गुरू	01-08-2006	30.49
शनि	12-02-2009	32.62
बुध	20-05-2011	35.15
केतु	25-04-2012	37.42
शुक्र	25-12-2014	38.35
सूर्य	13-10-2015	41.02
चन्द्रमा	12-02-2017	41.82
मंगल	19-01-2018	43.15
राहु	13-06-2020	44.09

शनि (19 वर्ष)

13/06/2020 To 14/06/2039

10th भाव वक्री विशेष	मिथुन राशि अरि. (1) नक्षत्र	मित्र संबंन्ध 5 , 6 भावपति
शनि	17-06-2023	46.49
बुध	24-02-2026	49.50
केतु	05-04-2027	52.19
शुक्र	05-06-2030	53.30
सूर्य	17-05-2031	56.46
चन्द्रमा	16-12-2032	57.41
मंगल	25-01-2034	59.00
राहु	01-12-2036	60.10
गुरू	14-06-2039	62.95

बुध (17 वर्ष)

14/06/2039 To 13/06/2056

3rd भाव स्वनक्षत्र विशेष	वृश्चिक राशि ज्येष्ठा (1) नक्षत्र	सम संबंन्ध 10 , 1 भावपति
बुध	10-11-2041	65.49
केतु	07-11-2042	67.90
शुक्र	07-09-2045	68.89
सूर्य	14-07-2046	71.72
चन्द्रमा	13-12-2047	72.57
मंगल	10-12-2048	73.99
राहु	29-06-2051	74.98
गुरू	04-10-2053	77.53
शनि	13-06-2056	79.80

विंशोत्तरी दशा (2)

केतु (7 वर्ष)

13/06/2056 To 14/06/2063

10th भाव वक्री विशेष	मिथुन राशि मृग. (4) नक्षत्र	मित्र संबंन्ध भावपति
केतु	10-11-2056	82.49
शुक्र	10-01-2058	82.90
सूर्य	17-05-2058	84.06
चन्द्रमा	16-12-2058	84.41
मंगल	14-05-2059	85.00
राहु	01-06-2060	85.40
गुरू	08-05-2061	86.45
शनि	17-06-2062	87.39
बुध	14-06-2063	88.50

शुक्र (20 वर्ष)

14/06/2063 To 14/06/2083

5th भाव विशेष	मकर राशि श्रव. (1) नक्षत्र	सम संबंन्ध 9 , 2 भावपति
शुक्र	13-10-2066	89.49
सूर्य	13-10-2067	92.82
चन्द्रमा	14-06-2069	93.82
मंगल	14-08-2070	95.49
राहु	14-08-2073	96.65
गुरू	13-04-2076	99.65
शनि	14-06-2079	102.32
बुध	14-04-2082	105.49
केतु	14-06-2083	108.32

सूर्य (6 वर्ष)

14/06/2083 To 14/06/2089

4th भाव विशेष	धनु राशि मूला (1) नक्षत्र	मित्र संबंन्ध 12 भावपति
सूर्य	01-10-2083	109.49
चन्द्रमा	01-04-2084	109.79
मंगल	07-08-2084	110.29
राहु	02-07-2085	110.64
गुरू	20-04-2086	111.54
शनि	02-04-2087	112.34
बुध	06-02-2088	113.29
केतु	13-06-2088	114.14
शुक्र	14-06-2089	114.49

वर्तमान दशा/अन्तर/प्रत्यन्तर/ सूक्ष्म/ प्राण दशा

दशा	ग्रह	आरम्भ	समाप्त
महादशा	शनि	13:06:2020 (16:22:55)	14:06:2039 (05:31:03)
अन्तर्रदशा	बुध	17:06:2023 (06:31:03)	24:02:2026 (17:31:03)
प्रत्यन्तर्रदशा	बुध	17:06:2023 (06:31:03)	03:11:2023 (10:52:33)
सूक्ष्मदशा	गुरू	23:09:2023 (20:36:17)	12:10:2023 (09:59:09)
प्राणदशा	राहु	09:10:2023 (15:10:43)	12:10:2023 (09:59:09)

नोट : – सभी दिए गये समय दशा के समाप्ति काल के हैं।

विंशोत्तरी दशा ग्रहों की अवधि के निर्धारण के लिए वैदिक ज्योतिष में प्रयुक्त एक प्रणाली है, जिसे एक व्यक्ति के जीवन र दशा के रूप में भी जाना जाता है। 'विंशोत्तरी' शब्द का अर्थ संस्कृत में '120' है, जो सभी ग्रहों की अवधि के एक पूर्ण चक्र में वर्षों की कुल संख्या का प्रतिनिधित्व करता है।

यह दशा किसी व्यक्ति के जन्म के समय चंद्रमा की स्थिति पर आधारित है, और यह वैदिक ज्योतिष के नौ ग्रहों में से प्रत्येक को निश्चित अवधि प्रदान करती है। इस प्रणाली में स्थिति के आधार पर प्रत्येक ग्रह को 6 से 20 वर्ष तक की एक विशिष्ट संख्या दी जाती है।

प्रत्येक ग्रहों की अवधि के दौरान, विचाराधीन/संबंधित ग्रह का व्यक्ति के जीवन पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। यह प्रभाव सकारात्मक या नकारात्मक हो सकता है, जो व्यक्ति के जन्मकुण्डली और उस समय के विशिष्ट ग्रहों की स्थिति पर निर्भ करता है।

विंशोत्तरी दशा को वैदिक ज्योतिष में एक महत्वपूर्ण उपकरण माना जाता है, क्योंकि यह किसी व्यक्ति के जीवन में प्रमुख घटनाओं और परिवर्तनों की भविष्यवाणी करने के लिए एक विस्तृत और सटीक प्रणाली प्रदान करता है। ज्योतिषियों द्वार करियर, रिश्ते, स्वास्थ्य, और किसी व्यक्ति के जीवन के अन्य पहलूओं के बारे में भविष्यवाणी करने के लिए इसका व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है और यह भविष्य में मार्गदर्शन या अंतर्दृष्टि की तलाश करने वालों के लिए एक मूल्यवान उपकरण हो सकता है।

चन्द्रमा दशा

(18:12:1973 To 14:06:1979)

चन्द्रमा अन्तर

चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--
गुरू	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--

मंगल अन्तर

मंगल	-------	--
राहु	-------	--
गुरू	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--

राहु अन्तर

राहु	-------	--
गुरू	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--

गुरू अन्तर

गुरू	-------	--
शनि	-------	--
बुध	-------	--
केतु	-------	--
शुक्र	-------	--
सूर्य	-------	--
चन्द्रमा	-------	--
मंगल	-------	--
राहु	-------	--

शनि अन्तर

(18:12:1973 To 14:04:1975)

शनि	-------	--
बुध	05-03-1974	00.00
केतु	08-04-1974	00.21
शुक्र	13-07-1974	00.31
सूर्य	11-08-1974	00.57
चन्द्रमा	28-09-1974	00.65
मंगल	01-11-1974	00.78
राहु	27-01-1975	00.87
गुरू	14-04-1975	01.11

बुध अन्तर

(14:04:1975 To 13:09:1976)

बुध	26-06-1975	01.32
केतु	26-07-1975	01.52
शुक्र	20-10-1975	01.60
सूर्य	15-11-1975	01.84
चन्द्रमा	28-12-1975	01.91
मंगल	28-01-1976	02.03
राहु	14-04-1976	02.11
गुरू	23-06-1976	02.32
शनि	13-09-1976	02.51

केतु अन्तर

(13:09:1976 To 14:04:1977)

केतु	25-09-1976	02.74
शुक्र	31-10-1976	02.77
सूर्य	10-11-1976	02.87
चन्द्रमा	28-11-1976	02.90
मंगल	11-12-1976	02.95
राहु	12-01-1977	02.98
गुरू	09-02-1977	03.07
शनि	15-03-1977	03.15
बुध	14-04-1977	03.24

शुक्र अन्तर

(14:04:1977 To 13:12:1978)

शुक्र	24-07-1977	03.32
सूर्य	24-08-1977	03.60
चन्द्रमा	13-10-1977	03.68
मंगल	18-11-1977	03.82
राहु	17-02-1978	03.92
गुरू	09-05-1978	04.17
शनि	14-08-1978	04.39
बुध	08-11-1978	04.65
केतु	13-12-1978	04.89

सूर्य अन्तर

(13:12:1978 To 14:06:1979)

सूर्य	22-12-1978	04.99
चन्द्रमा	07-01-1979	05.01
मंगल	17-01-1979	05.05
राहु	14-02-1979	05.08
गुरू	10-03-1979	05.16
शनि	08-04-1979	05.23
बुध	04-05-1979	05.30
केतु	14-05-1979	05.38
शुक्र	14-06-1979	05.40

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

मंगल दशा

(14:06:1979 To 14:06:1986)

मंगल अन्तर

(14:06:1979 To 10:11:1979)

मंगल	22-06-1979	05.49
राहु	15-07-1979	05.51
गुरू	04-08-1979	05.57
शनि	27-08-1979	05.63
बुध	17-09-1979	05.69
केतु	26-09-1979	05.75
शुक्र	21-10-1979	05.77
सूर्य	28-10-1979	05.84
चन्द्रमा	10-11-1979	05.86

राहु अन्तर

(10:11:1979 To 28:11:1980)

राहु	06-01-1980	05.90
गुरू	27-02-1980	06.05
शनि	27-04-1980	06.19
बुध	21-06-1980	06.36
केतु	13-07-1980	06.51
शुक्र	15-09-1980	06.57
सूर्य	04-10-1980	06.75
चन्द्रमा	06-11-1980	06.80
मंगल	28-11-1980	06.89

गुरू अन्तर

(28:11:1980 To 04:11:1981)

गुरू	12-01-1981	06.95
शनि	07-03-1981	07.07
बुध	25-04-1981	07.22
केतु	15-05-1981	07.35
शुक्र	10-07-1981	07.41
सूर्य	27-07-1981	07.56
चन्द्रमा	25-08-1981	07.61
मंगल	14-09-1981	07.69
राहु	04-11-1981	07.74

शनि अन्तर

(04:11:1981 To 13:12:1982)

शनि	07-01-1982	07.88
बुध	05-03-1982	08.06
केतु	29-03-1982	08.21
शुक्र	04-06-1982	08.28
सूर्य	24-06-1982	08.46
चन्द्रमा	28-07-1982	08.52
मंगल	21-08-1982	08.61
राहु	20-10-1982	08.67
गुरू	13-12-1982	08.84

बुध अन्तर

(13:12:1982 To 10:12:1983)

बुध	03-02-1983	08.99
केतु	24-02-1983	09.13
शुक्र	25-04-1983	09.19
सूर्य	13-05-1983	09.35
चन्द्रमा	12-06-1983	09.40
मंगल	03-07-1983	09.48
राहु	27-08-1983	09.54
गुरू	14-10-1983	09.69
शनि	10-12-1983	09.82

केतु अन्तर

(10:12:1983 To 08:05:1984)

केतु	19-12-1983	09.98
शुक्र	13-01-1984	10.00
सूर्य	20-01-1984	10.07
चन्द्रमा	02-02-1984	10.09
मंगल	10-02-1984	10.13
राहु	04-03-1984	10.15
गुरू	24-03-1984	10.21
शनि	16-04-1984	10.27
बुध	08-05-1984	10.33

शुक्र अन्तर

(08:05:1984 To 08:07:1985)

शुक्र	18-07-1984	10.39
सूर्य	08-08-1984	10.58
चन्द्रमा	13-09-1984	10.64
मंगल	08-10-1984	10.74
राहु	11-12-1984	10.81
गुरू	05-02-1985	10.98
शनि	14-04-1985	11.14
बुध	13-06-1985	11.32
केतु	08-07-1985	11.49

सूर्य अन्तर

(08:07:1985 To 13:11:1985)

सूर्य	14-07-1985	11.55
चन्द्रमा	25-07-1985	11.57
मंगल	02-08-1985	11.60
राहु	21-08-1985	11.62
गुरू	07-09-1985	11.67
शनि	27-09-1985	11.72
बुध	15-10-1985	11.78
केतु	23-10-1985	11.83
शुक्र	13-11-1985	11.85

चन्द्रमा अन्तर

(13:11:1985 To 14:06:1986)

चन्द्रमा	01-12-1985	11.90
मंगल	13-12-1985	11.95
राहु	14-01-1986	11.99
गुरू	11-02-1986	12.07
शनि	17-03-1986	12.15
बुध	16-04-1986	12.25
केतु	29-04-1986	12.33
शुक्र	03-06-1986	12.36
सूर्य	14-06-1986	12.46

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

राहु दशा

(14:06:1986 To 13:06:2004)

राहु अन्तर

(14:06:1986 To 24:02:1989)

राहु	09-11-1986	12.49
गुरू	20-03-1987	12.89
शनि	23-08-1987	13.25
बुध	10-01-1988	13.68
केतु	07-03-1988	14.06
शुक्र	19-08-1988	14.22
सूर्य	07-10-1988	14.67
चन्द्रमा	29-12-1988	14.81
मंगल	24-02-1989	15.03

गुरू अन्तर

(24:02:1989 To 20:07:1991)

गुरू	21-06-1989	15.19
शनि	07-11-1989	15.51
बुध	11-03-1990	15.89
केतु	01-05-1990	16.23
शुक्र	24-09-1990	16.37
सूर्य	07-11-1990	16.77
चन्द्रमा	19-01-1991	16.89
मंगल	11-03-1991	17.09
राहु	20-07-1991	17.23

शनि अन्तर

(20:07:1991 To 26:05:1994)

शनि	01-01-1992	17.59
बुध	28-05-1992	18.04
केतु	28-07-1992	18.44
शुक्र	17-01-1993	18.61
सूर्य	10-03-1993	19.08
चन्द्रमा	05-06-1993	19.23
मंगल	05-08-1993	19.46
राहु	08-01-1994	19.63
गुरू	26-05-1994	20.06

बुध अन्तर

(26:05:1994 To 13:12:1996)

बुध	05-10-1994	20.44
केतु	29-11-1994	20.80
शुक्र	03-05-1995	20.95
सूर्य	18-06-1995	21.37
चन्द्रमा	04-09-1995	21.50
मंगल	28-10-1995	21.71
राहु	16-03-1996	21.86
गुरू	18-07-1996	22.24
शनि	13-12-1996	22.58

केतु अन्तर

(13:12:1996 To 31:12:1997)

केतु	05-01-1997	22.99
शुक्र	09-03-1997	23.05
सूर्य	29-03-1997	23.22
चन्द्रमा	30-04-1997	23.28
मंगल	22-05-1997	23.36
राहु	18-07-1997	23.43
गुरू	08-09-1997	23.58
शनि	07-11-1997	23.72
बुध	31-12-1997	23.89

शुक्र अन्तर

(31:12:1997 To 31:12:2000)

शुक्र	02-07-1998	24.04
सूर्य	26-08-1998	24.54
चन्द्रमा	25-11-1998	24.69
मंगल	28-01-1999	24.94
राहु	11-07-1999	25.11
गुरू	04-12-1999	25.56
शनि	26-05-2000	25.96
बुध	28-10-2000	26.44
केतु	31-12-2000	26.86

सूर्य अन्तर

(31:12:2000 To 25:11:2001)

सूर्य	17-01-2001	27.04
चन्द्रमा	13-02-2001	27.08
मंगल	04-03-2001	27.16
राहु	23-04-2001	27.21
गुरू	06-06-2001	27.35
शनि	28-07-2001	27.47
बुध	12-09-2001	27.61
केतु	01-10-2001	27.74
शुक्र	25-11-2001	27.79

चन्द्रमा अन्तर

(25:11:2001 To 26:05:2003)

चन्द्रमा	10-01-2002	27.94
मंगल	11-02-2002	28.06
राहु	04-05-2002	28.15
गुरू	16-07-2002	28.38
शनि	10-10-2002	28.58
बुध	27-12-2002	28.81
केतु	28-01-2003	29.03
शुक्र	29-04-2003	29.11
सूर्य	26-05-2003	29.36

मंगल अन्तर

(26:05:2003 To 13:06:2004)

मंगल	18-06-2003	29.44
राहु	14-08-2003	29.50
गुरू	04-10-2003	29.66
शनि	04-12-2003	29.80
बुध	27-01-2004	29.96
केतु	19-02-2004	30.11
शुक्र	23-04-2004	30.17
सूर्य	12-05-2004	30.35
चन्द्रमा	13-06-2004	30.40

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

गुरू दशा

(13:06:2004 To 13:06:2020)

गुरू अन्तर

(13:06:2004 To 01:08:2006)

गुरू	25-09-2004	30.49
शनि	27-01-2005	30.77
बुध	17-05-2005	31.11
केतु	02-07-2005	31.41
शुक्र	08-11-2005	31.54
सूर्य	17-12-2005	31.89
चन्द्रमा	20-02-2006	32.00
मंगल	07-04-2006	32.18
राहु	01-08-2006	32.30

शनि अन्तर

(01:08:2006 To 12:02:2009)

शनि	26-12-2006	32.62
बुध	06-05-2007	33.02
केतु	29-06-2007	33.38
शुक्र	30-11-2007	33.53
सूर्य	15-01-2008	33.95
चन्द्रमा	01-04-2008	34.08
मंगल	25-05-2008	34.29
राहु	12-10-2008	34.44
गुरू	12-02-2009	34.82

बुध अन्तर

(12:02:2009 To 20:05:2011)

बुध	09-06-2009	35.15
केतु	28-07-2009	35.48
शुक्र	12-12-2009	35.61
सूर्य	23-01-2010	35.99
चन्द्रमा	02-04-2010	36.10
मंगल	20-05-2010	36.29
राहु	21-09-2010	36.42
गुरू	09-01-2011	36.76
शनि	20-05-2011	37.06

केतु अन्तर

(20:05:2011 To 25:04:2012)

केतु	09-06-2011	37.42
शुक्र	05-08-2011	37.48
सूर्य	22-08-2011	37.63
चन्द्रमा	19-09-2011	37.68
मंगल	09-10-2011	37.76
राहु	29-11-2011	37.81
गुरू	14-01-2012	37.95
शनि	08-03-2012	38.07
बुध	25-04-2012	38.22

शुक्र अन्तर

(25:04:2012 To 25:12:2014)

शुक्र	05-10-2012	38.35
सूर्य	23-11-2012	38.80
चन्द्रमा	12-02-2013	38.93
मंगल	10-04-2013	39.15
राहु	03-09-2013	39.31
गुरू	11-01-2014	39.71
शनि	14-06-2014	40.07
बुध	30-10-2014	40.49
केतु	25-12-2014	40.87

सूर्य अन्तर

(25:12:2014 To 13:10:2015)

सूर्य	09-01-2015	41.02
चन्द्रमा	02-02-2015	41.06
मंगल	19-02-2015	41.13
राहु	04-04-2015	41.17
गुरू	13-05-2015	41.29
शनि	28-06-2015	41.40
बुध	09-08-2015	41.53
केतु	26-08-2015	41.64
शुक्र	13-10-2015	41.69

चन्द्रमा अन्तर

(13:10:2015 To 12:02:2017)

चन्द्रमा	23-11-2015	41.82
मंगल	21-12-2015	41.93
राहु	04-03-2016	42.01
गुरू	08-05-2016	42.21
शनि	24-07-2016	42.39
बुध	01-10-2016	42.60
केतु	29-10-2016	42.79
शुक्र	19-01-2017	42.87
सूर्य	12-02-2017	43.09

मंगल अन्तर

(12:02:2017 To 19:01:2018)

मंगल	04-03-2017	43.15
राहु	24-04-2017	43.21
गुरू	08-06-2017	43.35
शनि	01-08-2017	43.47
बुध	19-09-2017	43.62
केतु	09-10-2017	43.75
शुक्र	04-12-2017	43.81
सूर्य	21-12-2017	43.96
चन्द्रमा	19-01-2018	44.01

राहु अन्तर

(19:01:2018 To 13:06:2020)

राहु	30-05-2018	44.09
गुरू	24-09-2018	44.45
शनि	10-02-2019	44.77
बुध	14-06-2019	45.15
केतु	04-08-2019	45.49
शुक्र	28-12-2019	45.63
सूर्य	10-02-2020	46.03
चन्द्रमा	23-04-2020	46.15
मंगल	13-06-2020	46.35

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शनि दशा

(13:06:2020 To 14:06:2039)

शनि अन्तर

(13:06:2020 To 17:06:2023)

शनि	05-12-2020	46.49
बुध	09-05-2021	46.96
केतु	12-07-2021	47.39
शुक्र	11-01-2022	47.57
सूर्य	07-03-2022	48.07
चन्द्रमा	07-06-2022	48.22
मंगल	10-08-2022	48.47
राहु	21-01-2023	48.64
गुरू	17-06-2023	49.10

बुध अन्तर

(17:06:2023 To 24:02:2026)

बुध	03-11-2023	49.50
केतु	30-12-2023	49.88
शुक्र	11-06-2024	50.03
सूर्य	31-07-2024	50.48
चन्द्रमा	21-10-2024	50.62
मंगल	17-12-2024	50.84
राहु	14-05-2025	51.00
गुरू	22-09-2025	51.40
शनि	24-02-2026	51.76

केतु अन्तर

(24:02:2026 To 05:04:2027)

केतु	20-03-2026	52.19
शुक्र	26-05-2026	52.25
सूर्य	15-06-2026	52.44
चन्द्रमा	19-07-2026	52.49
मंगल	12-08-2026	52.59
राहु	11-10-2026	52.65
गुरू	04-12-2026	52.82
शनि	06-02-2027	52.96
बुध	05-04-2027	53.14

शुक्र अन्तर

(05:04:2027 To 05:06:2030)

शुक्र	14-10-2027	53.30
सूर्य	11-12-2027	53.82
चन्द्रमा	17-03-2028	53.98
मंगल	23-05-2028	54.25
राहु	13-11-2028	54.43
गुरू	16-04-2029	54.91
शनि	16-10-2029	55.33
बुध	29-03-2030	55.83
केतु	05-06-2030	56.28

सूर्य अन्तर

(05:06:2030 To 17:05:2031)

सूर्य	22-06-2030	56.46
चन्द्रमा	21-07-2030	56.51
मंगल	10-08-2030	56.59
राहु	01-10-2030	56.65
गुरू	16-11-2030	56.79
शनि	10-01-2031	56.91
बुध	28-02-2031	57.06
केतु	21-03-2031	57.20
शुक्र	17-05-2031	57.25

चन्द्रमा अन्तर

(17:05:2031 To 16:12:2032)

चन्द्रमा	05-07-2031	57.41
मंगल	07-08-2031	57.55
राहु	02-11-2031	57.64
गुरू	18-01-2032	57.87
शनि	19-04-2032	58.09
बुध	10-07-2032	58.34
केतु	13-08-2032	58.56
शुक्र	17-11-2032	58.65
सूर्य	16-12-2032	58.92

मंगल अन्तर

(16:12:2032 To 25:01:2034)

मंगल	09-01-2033	59.00
राहु	11-03-2033	59.06
गुरू	03-05-2033	59.23
शनि	07-07-2033	59.38
बुध	02-09-2033	59.55
केतु	25-09-2033	59.71
शुक्र	02-12-2033	59.77
सूर्य	22-12-2033	59.96
चन्द्रमा	25-01-2034	60.01

राहु अन्तर

(25:01:2034 To 01:12:2036)

राहु	30-06-2034	60.10
गुरू	16-11-2034	60.53
शनि	29-04-2035	60.91
बुध	24-09-2035	61.36
केतु	23-11-2035	61.77
शुक्र	15-05-2036	61.93
सूर्य	06-07-2036	62.41
चन्द्रमा	01-10-2036	62.55
मंगल	01-12-2036	62.79

गुरू अन्तर

(01:12:2036 To 14:06:2039)

गुरू	03-04-2037	62.95
शनि	28-08-2037	63.29
बुध	06-01-2038	63.69
केतु	01-03-2038	64.05
शुक्र	02-08-2038	64.20
सूर्य	17-09-2038	64.62
चन्द्रमा	03-12-2038	64.75
मंगल	26-01-2039	64.96
राहु	14-06-2039	65.11

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

बुध दशा

(14:06:2039 To 13:06:2056)

बुध अन्तर

(14:06:2039 To 10:11:2041)

बुध	16-10-2039	65.49
केतु	07-12-2039	65.83
शुक्र	01-05-2040	65.97
सूर्य	14-06-2040	66.37
चन्द्रमा	27-08-2040	66.49
मंगल	17-10-2040	66.69
राहु	26-02-2041	66.83
गुरू	24-06-2041	67.19
शनि	10-11-2041	67.52

केतु अन्तर

(10:11:2041 To 07:11:2042)

केतु	01-12-2041	67.90
शुक्र	30-01-2042	67.95
सूर्य	17-02-2042	68.12
चन्द्रमा	19-03-2042	68.17
मंगल	10-04-2042	68.25
राहु	03-06-2042	68.31
गुरू	21-07-2042	68.46
शनि	16-09-2042	68.59
बुध	07-11-2042	68.75

शुक्र अन्तर

(07:11:2042 To 07:09:2045)

शुक्र	28-04-2043	68.89
सूर्य	19-06-2043	69.36
चन्द्रमा	13-09-2043	69.50
मंगल	12-11-2043	69.74
राहु	16-04-2044	69.90
गुरू	01-09-2044	70.33
शनि	12-02-2045	70.71
बुध	09-07-2045	71.15
केतु	07-09-2045	71.56

सूर्य अन्तर

(07:09:2045 To 14:07:2046)

सूर्य	22-09-2045	71.72
चन्द्रमा	18-10-2045	71.76
मंगल	05-11-2045	71.83
राहु	22-12-2045	71.88
गुरू	01-02-2046	72.01
शनि	22-03-2046	72.13
बुध	05-05-2046	72.26
केतु	23-05-2046	72.38
शुक्र	14-07-2046	72.43

चन्द्रमा अन्तर

(14:07:2046 To 13:12:2047)

चन्द्रमा	26-08-2046	72.57
मंगल	25-09-2046	72.69
राहु	12-12-2046	72.77
गुरू	19-02-2047	72.98
शनि	12-05-2047	73.17
बुध	24-07-2047	73.40
केतु	23-08-2047	73.60
शुक्र	17-11-2047	73.68
सूर्य	13-12-2047	73.92

मंगल अन्तर

(13:12:2047 To 10:12:2048)

मंगल	03-01-2048	73.99
राहु	27-02-2048	74.05
गुरू	15-04-2048	74.19
शनि	12-06-2048	74.33
बुध	02-08-2048	74.48
केतु	23-08-2048	74.62
शुक्र	23-10-2048	74.68
सूर्य	10-11-2048	74.85
चन्द्रमा	10-12-2048	74.90

राहु अन्तर

(10:12:2048 To 29:06:2051)

राहु	29-04-2049	74.98
गुरू	31-08-2049	75.36
शनि	25-01-2050	75.70
बुध	06-06-2050	76.11
केतु	30-07-2050	76.47
शुक्र	02-01-2051	76.62
सूर्य	17-02-2051	77.04
चन्द्रमा	06-05-2051	77.17
मंगल	29-06-2051	77.38

गुरू अन्तर

(29:06:2051 To 04:10:2053)

गुरू	17-10-2051	77.53
शनि	25-02-2052	77.83
बुध	22-06-2052	78.19
केतु	09-08-2052	78.51
शुक्र	26-12-2052	78.64
सूर्य	05-02-2053	79.02
चन्द्रमा	15-04-2053	79.14
मंगल	02-06-2053	79.32
राहु	04-10-2053	79.46

शनि अन्तर

(04:10:2053 To 13:06:2056)

शनि	09-03-2054	79.80
बुध	26-07-2054	80.22
केतु	21-09-2054	80.60
शुक्र	04-03-2055	80.76
सूर्य	22-04-2055	81.21
चन्द्रमा	13-07-2055	81.34
मंगल	08-09-2055	81.57
राहु	03-02-2056	81.73
गुरू	13-06-2056	82.13

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

केतु दशा

(13:06:2056 To 14:06:2063)

केतु अन्तर

(13:06:2056 To 10:11:2056)		
केतु	22-06-2056	82.49
शुक्र	17-07-2056	82.51
सूर्य	24-07-2056	82.58
चन्द्रमा	06-08-2056	82.60
मंगल	14-08-2056	82.63
राहु	06-09-2056	82.66
गुरू	26-09-2056	82.72
शनि	19-10-2056	82.77
बुध	10-11-2056	82.84

शुक्र अन्तर

(10:11:2056 To 10:01:2058)		
शुक्र	20-01-2057	82.90
सूर्य	10-02-2057	83.09
चन्द्रमा	18-03-2057	83.15
मंगल	11-04-2057	83.25
राहु	14-06-2057	83.31
गुरू	10-08-2057	83.49
शनि	16-10-2057	83.65
बुध	16-12-2057	83.83
केतु	10-01-2058	84.00

सूर्य अन्तर

(10:01:2058 To 17:05:2058)		
सूर्य	16-01-2058	84.06
चन्द्रमा	27-01-2058	84.08
मंगल	03-02-2058	84.11
राहु	22-02-2058	84.13
गुरू	11-03-2058	84.18
शनि	01-04-2058	84.23
बुध	19-04-2058	84.28
केतु	26-04-2058	84.33
शुक्र	17-05-2058	84.35

चन्द्रमा अन्तर

(17:05:2058 To 16:12:2058)		
चन्द्रमा	04-06-2058	84.41
मंगल	17-06-2058	84.46
राहु	18-07-2058	84.50
गुरू	16-08-2058	84.58
शनि	19-09-2058	84.66
बुध	19-10-2058	84.75
केतु	31-10-2058	84.84
शुक्र	06-12-2058	84.87
सूर्य	16-12-2058	84.97

मंगल अन्तर

(16:12:2058 To 14:05:2059)		
मंगल	25-12-2058	85.00
राहु	16-01-2059	85.02
गुरू	05-02-2059	85.08
शनि	01-03-2059	85.14
बुध	22-03-2059	85.20
केतु	31-03-2059	85.26
शुक्र	24-04-2059	85.28
सूर्य	02-05-2059	85.35
चन्द्रमा	14-05-2059	85.37

राहु अन्तर

(14:05:2059 To 01:06:2060)		
राहु	11-07-2059	85.40
गुरू	31-08-2059	85.56
शनि	31-10-2059	85.70
बुध	24-12-2059	85.87
केतु	15-01-2060	86.02
शुक्र	19-03-2060	86.08
सूर्य	08-04-2060	86.25
चन्द्रमा	10-05-2060	86.31
मंगल	01-06-2060	86.39

गुरू अन्तर

(01:06:2060 To 08:05:2061)		
गुरू	17-07-2060	86.45
शनि	09-09-2060	86.58
बुध	27-10-2060	86.73
केतु	16-11-2060	86.86
शुक्र	12-01-2061	86.91
सूर्य	29-01-2061	87.07
चन्द्रमा	26-02-2061	87.12
मंगल	18-03-2061	87.19
राहु	08-05-2061	87.25

शनि अन्तर

(08:05:2061 To 17:06:2062)		
शनि	11-07-2061	87.39
बुध	07-09-2061	87.56
केतु	30-09-2061	87.72
शुक्र	07-12-2061	87.79
सूर्य	27-12-2061	87.97
चन्द्रमा	30-01-2062	88.03
मंगल	22-02-2062	88.12
राहु	24-04-2062	88.18
गुरू	17-06-2062	88.35

बुध अन्तर

(17:06:2062 To 14:06:2063)		
बुध	07-08-2062	88.50
केतु	28-08-2062	88.64
शुक्र	27-10-2062	88.69
सूर्य	15-11-2062	88.86
चन्द्रमा	15-12-2062	88.91
मंगल	05-01-2063	88.99
राहु	28-02-2063	89.05
गुरू	17-04-2063	89.20
शनि	14-06-2063	89.33

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

शुक्र दशा

(14:06:2063 To 14:06:2083)

शुक्र अन्तर

(14:06:2063 To 13:10:2066)

शुक्र	03-01-2064	89.49
सूर्य	04-03-2064	90.04
चन्द्रमा	13-06-2064	90.21
मंगल	23-08-2064	90.49
राहु	22-02-2065	90.68
गुरू	03-08-2065	91.18
शनि	12-02-2066	91.63
बुध	03-08-2066	92.15
केतु	13-10-2066	92.63

सूर्य अन्तर

(13:10:2066 To 13:10:2067)

सूर्य	01-11-2066	92.82
चन्द्रमा	01-12-2066	92.87
मंगल	22-12-2066	92.95
राहु	15-02-2067	93.01
गुरू	05-04-2067	93.16
शनि	02-06-2067	93.30
बुध	23-07-2067	93.45
केतु	14-08-2067	93.60
शुक्र	13-10-2067	93.65

चन्द्रमा अन्तर

(13:10:2067 To 14:06:2069)

चन्द्रमा	03-12-2067	93.82
मंगल	08-01-2068	93.96
राहु	08-04-2068	94.06
गुरू	28-06-2068	94.31
शनि	03-10-2068	94.53
बुध	28-12-2068	94.79
केतु	02-02-2069	95.03
शुक्र	14-05-2069	95.13
सूर्य	14-06-2069	95.40

मंगल अन्तर

(14:06:2069 To 14:08:2070)

मंगल	09-07-2069	95.49
राहु	10-09-2069	95.56
गुरू	06-11-2069	95.73
शनि	13-01-2070	95.89
बुध	14-03-2070	96.07
केतु	08-04-2070	96.24
शुक्र	18-06-2070	96.30
सूर्य	09-07-2070	96.50
चन्द्रमा	14-08-2070	96.56

राहु अन्तर

(14:08:2070 To 14:08:2073)

राहु	25-01-2071	96.65
गुरू	20-06-2071	97.10
शनि	10-12-2071	97.50
बुध	14-05-2072	97.98
केतु	17-07-2072	98.40
शुक्र	16-01-2073	98.58
सूर्य	11-03-2073	99.08
चन्द्रमा	11-06-2073	99.23
मंगल	14-08-2073	99.48

गुरू अन्तर

(14:08:2073 To 13:04:2076)

गुरू	21-12-2073	99.65
शनि	24-05-2074	100.01
बुध	09-10-2074	100.43
केतु	05-12-2074	100.81
शुक्र	16-05-2075	100.97
सूर्य	04-07-2075	101.41
चन्द्रमा	23-09-2075	101.54
मंगल	19-11-2075	101.77
राहु	13-04-2076	101.92

शनि अन्तर

(13:04:2076 To 14:06:2079)

शनि	14-10-2076	102.32
बुध	27-03-2077	102.82
केतु	02-06-2077	103.27
शुक्र	12-12-2077	103.46
सूर्य	08-02-2078	103.98
चन्द्रमा	15-05-2078	104.14
मंगल	21-07-2078	104.41
राहु	11-01-2079	104.59
गुरू	14-06-2079	105.07

बुध अन्तर

(14:06:2079 To 14:04:2082)

बुध	07-11-2079	105.49
केतु	07-01-2080	105.89
शुक्र	27-06-2080	106.05
सूर्य	18-08-2080	106.53
चन्द्रमा	13-11-2080	106.67
मंगल	12-01-2081	106.90
राहु	16-06-2081	107.07
गुरू	01-11-2081	107.50
शनि	14-04-2082	107.87

केतु अन्तर

(14:04:2082 To 14:06:2083)

केतु	09-05-2082	108.32
शुक्र	19-07-2082	108.39
सूर्य	09-08-2082	108.58
चन्द्रमा	13-09-2082	108.64
मंगल	08-10-2082	108.74
राहु	11-12-2082	108.81
गुरू	06-02-2083	108.98
शनि	14-04-2083	109.14
बुध	14-06-2083	109.32

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

सूर्य दशा

(14:06:2083 To 14:06:2089)

सूर्य अन्तर

(14:06:2083 To 01:10:2083)

सूर्य	19-06-2083	109.49
चन्द्रमा	28-06-2083	109.50
मंगल	05-07-2083	109.53
राहु	21-07-2083	109.55
गुरू	05-08-2083	109.59
शनि	22-08-2083	109.63
बुध	07-09-2083	109.68
केतु	13-09-2083	109.72
शुक्र	01-10-2083	109.74

चन्द्रमा अन्तर

(01:10:2083 To 01:04:2084)

चन्द्रमा	16-10-2083	109.79
मंगल	27-10-2083	109.83
राहु	23-11-2083	109.86
गुरू	18-12-2083	109.93
शनि	16-01-2084	110.00
बुध	11-02-2084	110.08
केतु	21-02-2084	110.15
शुक्र	23-03-2084	110.18
सूर्य	01-04-2084	110.26

मंगल अन्तर

(01:04:2084 To 07:08:2084)

मंगल	08-04-2084	110.29
राहु	28-04-2084	110.31
गुरू	15-05-2084	110.36
शनि	04-06-2084	110.41
बुध	22-06-2084	110.46
केतु	30-06-2084	110.51
शुक्र	21-07-2084	110.53
सूर्य	27-07-2084	110.59
चन्द्रमा	07-08-2084	110.61

राहु अन्तर

(07:08:2084 To 02:07:2085)

राहु	25-09-2084	110.64
गुरू	08-11-2084	110.77
शनि	31-12-2084	110.89
बुध	15-02-2085	111.04
केतु	06-03-2085	111.16
शुक्र	30-04-2085	111.22
सूर्य	16-05-2085	111.37
चन्द्रमा	13-06-2085	111.41
मंगल	02-07-2085	111.49

गुरू अन्तर

(02:07:2085 To 20:04:2086)

गुरू	10-08-2085	111.54
शनि	25-09-2085	111.64
बुध	06-11-2085	111.77
केतु	23-11-2085	111.88
शुक्र	10-01-2086	111.93
सूर्य	25-01-2086	112.06
चन्द्रमा	18-02-2086	112.10
मंगल	07-03-2086	112.17
राहु	20-04-2086	112.22

शनि अन्तर

(20:04:2086 To 02:04:2087)

शनि	14-06-2086	112.34
बुध	02-08-2086	112.49
केतु	22-08-2086	112.62
शुक्र	19-10-2086	112.68
सूर्य	05-11-2086	112.84
चन्द्रमा	04-12-2086	112.88
मंगल	24-12-2086	112.96
राहु	14-02-2087	113.02
गुरू	02-04-2087	113.16

बुध अन्तर

(02:04:2087 To 06:02:2088)

बुध	16-05-2087	113.29
केतु	03-06-2087	113.41
शुक्र	24-07-2087	113.46
सूर्य	09-08-2087	113.60
चन्द्रमा	04-09-2087	113.64
मंगल	22-09-2087	113.71
राहु	07-11-2087	113.76
गुरू	19-12-2087	113.89
शनि	06-02-2088	114.00

केतु अन्तर

(06:02:2088 To 13:06:2088)

केतु	14-02-2088	114.14
शुक्र	06-03-2088	114.16
सूर्य	12-03-2088	114.22
चन्द्रमा	23-03-2088	114.23
मंगल	30-03-2088	114.26
राहु	19-04-2088	114.28
गुरू	06-05-2088	114.34
शनि	26-05-2088	114.38
बुध	13-06-2088	114.44

शुक्र अन्तर

(13:06:2088 To 14:06:2089)

शुक्र	13-08-2088	114.49
सूर्य	31-08-2088	114.65
चन्द्रमा	01-10-2088	114.70
मंगल	22-10-2088	114.79
राहु	16-12-2088	114.85
गुरू	03-02-2089	115.00
शनि	02-04-2089	115.13
बुध	23-05-2089	115.29
केतु	14-06-2089	115.43

Note - All the Dates are indiacating Dasha End Date.

विस्तृत पंचागं विवरण

पंचागं ज्योतिष के पांच प्रमुख घटकों का सम्मिश्रण होता है– वार, तिथि, नक्षत्र, योग और करण, जो ज्योतिषियों को जातक के पंचाग फल की गणना करने में सहायता करता है। जातक के जन्म के समय इन पांच कारकों को ध्यान में रखते हुए ज्योतिषी जीवन के उतार–चढ़ाव को दर्शाते हुए एक स्पष्ट चित्र बना सकता है।

प्रमादी

संवत्सर

दक्षिण

अयन

हेमन्त

ऋतु

पौष

चन्द्र मास

कृष्ण

पक्ष

सोमवार

वार

नवमी

तिथि

हस्ता

नक्षत्र

गरिज

करण

सौभाग्य

सूर्य सिद्धान्त योग

रात्रि जन्म

दिवा / रात्रि जन्म

वृष

द्रेष्काण

ब्राह्स्पत्य/संवत्सर में जन्म

आपका जन्म प्रमादी संवत्सर में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ अनुकूल योग मौजूद नहीं हैं, और/या यदि कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव मौजूद नहीं हैं, तो आपको कुछ प्रतिकूल परिणाम प्राप्त होने की संभावना है। आप बह बुद्धिमान या ज्ञानी नहीं हो सकते हैं, और उत्तम आजीविका कमाने के लिए पर्याप्त कुशल नहीं हो सकते हैं। तो भी आप वृथा अभिमानी प्रकृति और अत्यधिक घमंडी स्वभाव के हो सकते हैं, एवं विद्वेषी व लालची व्यक्ति हो सकते हैं। आप विचारहीन और झगड़ालु हो सकते हैं, कई लोगों का विरोध कर सकते हैं, तथा निन्दनीय व बुरे कामों को करने में आपको विशेष सुख मिल सकता है।

अयन में जन्म

आपका जन्म सूर्य के दक्षिणायन (यमयायन) में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो संकेत अनुकूल नहीं हैं। आप कुछ हद तक दम्भी और हठी प्रकृति या असहिष्णु स्वभाव वाले व्यक्ति हो सकते हैं। आप कठोर हृदय वाले या कपटी हो सकते हैं। आप कृषि कार्यों और/या मवेशियों के पालन से अपनी जीविकोपार्जन कर सकते हैं। साथ ही, आप कुछ ऐसे कार्यों को करने में संलग्न हो सकते हैं, जहां आपके द्वारा किए गए कार्यों की अपेक्षा आपको प्राप्त होने वाला पारिश्रमिक बिल्कुल भी सामंजस्यपूर्ण नहीं हो सकता है।

ऋतु में जन्म

आपका जन्म हेमन्त ऋतु में हुआ है। यदि कुछ प्रतिकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में मौजूद नहीं हैं, तो ये संकेत अनुकूल हैं। आप अत्यंत बुद्धिमान, विचारवान, ज्ञानी और विवेकशील व्यक्ति होंगे। आप स्वतन्त्र विचारों के साथ–साथ उदार प्रवृत्ति वाले व्यक्ति होंगे और सदैव न्यायसंगत कार्य करने में संलग्न रहेंगे। आपकी धार्मिक रूचि उत्कृष्ट होगी और आप अपनी आजीविका एक वरिष्ठ सलाहकार या एक परामर्शदाता बनकर अर्जित कर सकते हैं। आप सुन्दर आचरण और विनम्र प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे– जिसके लिए लोग आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे।

चन्द्र मास में जन्म

आपका जन्म पौष मास (दिसम्बर/जनवरी) में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली मे कुछ संशोधनकारी प्रभाव मौजूद नहीं हैं, तो संकेत बहुत अनुकूल नहीं हैं। यद्यपि आप आकर्षक व्यक्तित्व और सुन्दर स्वरूप वाले होंगे, फिर भी, आपकी शारीरिक संरचना कमजोर हो सकती है, आपको अपने माता–पिता से आर्थिक सहयोग प्राप्त नहीं हो सकता है।, तो भी आप लापरवाही से खर्च कर सकते हैं। साथ ही, आप गोपनीय प्रकृति के हो सकते हैं और अपने विचार व निर्णय अपने तक ही सीमित रख सकते हैं– जिससे आप अपने विरोधियों को आघात पहुंचाने में सक्षम हो सकते हैं। सुखद पहलु यह है, कि आप धार्मिक विचारों वाले, पवित्र ग्रन्थों का अध्ययन करने के शौकीन और विद्वानों व धर्मपरायण लोगों का उचित सम्मान करने वाले होंगे।

पक्ष में जन्म

आपका जन्म कृष्ण पक्ष में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो ये संकेत अनुकूल नहीं हैं। आपकी शारीरिक संरचना कुछ–कुछ कमजोर हो सकती है और आप आसानी से रोगादि से ग्रसित हो सकते हैं। आप चंचल प्रकृति और अस्थिर स्वभाव वाले हो सकते हैं। आप पर शरारती और/या झगड़ालु होने का छाप लग सकती है। आप बहुत भावुक प्रकृति के हो सकते हैं, चीजों को उनके उचित परिपेक्ष्य में देखे बिना ही आप राई को पहाड़ बना सकते हैं। इसके अतिरिक्त, आप कामुक हो सकते हैं और अपने जीवनसाथी की खुशामद कर सकते हैं।

वार में जन्म

आपका जन्म मंगलवार को हुआ है। दिवसपति मंगल की स्थिति आपकी कुण्डली में काफी महत्वपूर्ण है। इसका फल भाव में इसकी स्थिति के अनुसार– और भी अधिक महत्वपूर्ण होगा। सामान्यतः अन्य सारे संकेत अनुकूल हैं। आप प्रबल जोश से भरे भावुक व्यक्ति होंगे– सशक्त और वचनबद्ध, यहां तक कि कुछ जल्दबाजी के कार्यों को करने के लिए भी आपमें आकस्मिक शक्ति का प्रवाह होगा। आपमें व्यंग्यपूर्ण तरीके से बात करने की प्रवृत्ति हो सकती है एवं आप संघर्ष व विजय के शौकीन हो सकते हैं। आप धातुओं, भूमि, स्थावर सम्पत्ति अथवा पुलिस, सुरक्षा आदि जैसे रोजगार से अपनी आजीविका का उपार्जन कर सकते हैं।

दिवा / रात्रि में जन्म

आपका जन्म रात्रि के समय में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आप कुछ हद तक आलसी हो सकते हैं और आपको दिन में सोने का शौक हो सकता है। आप कुछ–कुछ गोपनीय प्रकृति के हो सकते हैं और आप अपनी कुछ इच्छायें या उद्देश्य गुप्त रखना चाहेंगे। इसके अतिरिक्त आप थोड़े कामुक भी हो सकते हैं– जिसकी वजह से आप अपने जीवनसाथी से दबे हो सकते हैं। आप सक्रिय, उर्जावान, आशावादी और उत्साह से परिपूर्ण होंगे।

सूर्य सिद्धान्त योग में जन्म

सूर्य–सिद्धान्त के अनुसार आपका जन्म सौभाग्य योग में हुआ है। यह योग अनुकूल श्रेणी से संबंध रखता है। इस योग में जन्म होने के कारण, आप कई मामलों में अत्यंत भाग्यशाली होंगे। आप सदाचारी प्रवृत्ति वाले विद्वान और बुद्धिमान व्यक्ति होंगे और सदैव न्यायसंगत मार्ग का चयन करेंगे। आपके व्यवहार, ईमानदारी, विवेकशीलता और दूरदर्शिता के लिए लोग आपको अधिक सम्मान देंगे और उनसे संबंधित महत्वपूर्ण मामलों में आपसे विशिष्ट सलाह ले सकते हैं।

तिथि में जन्म

आपका जन्म नवमी तिथि को हुआ है। आपका अपने पिता से नजदीकी लगाव होगा और शिक्षकों व उपदेशकों के प्र सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे, लेकिन स्वभाव से आप कुछ हद तक भिन्न हो सकते हैं– जिसकी वजह से आपके कुछ अपने लोग ही आपका विरोध कर सकते हैं या आपसे फायदा उठाने का प्रयास कर सकते हैं। आपका धार्मिक रुझा उत्कृष्ट होगा और आपमें न्याय व शिष्टाचार की समझ अत्यंत सराहनीय होगी। आप कर्कश व कड़क बोली तथा भ्रष प्रकृति के हो सकते हैं, यहां तक कि आपके अपने लोग भी आपके बुरे बर्ताव के कारण आपकी निन्दा कर सकते हैं

करन में जन्म

आपका जन्म गरिजा करन में हुआ है। यह चर श्रेणी का पांचवां करन है। आप उत्तम स्वास्थ्य, सुगठित शारीरिक संरचना, सुन्दर स्वरूप और मनोहारी बर्ताव से सुसम्पन्न होंगे। आप बुद्धिमान और ज्ञानी होंगे, उदार वादी विचारों वा सम्माननीय और दूसरों के प्रति हितकारी भाव रखने वाले होंगे। आप चतुर होंगे, किन्तु विवेकपूर्ण भी होंगे, आप अपने सभी शत्रुओं को पूर्णतः परास्त करने में सक्षम होंगे– किन्तु आप ऐसा बिना किसी गुट, सामाजिक संघ या कपटपूर्ण कार्यों का सहारा लिए ही करेंगे। आपकी सफलता की कुंजी आपकी सहनशीलता, दृढ़ता, समझदारी और समय पर कार्य करने की आदत होगी। आप अपना मार्ग स्वयं बनाने में सक्षम होंगे और दीर्घकाल में अपने समकालीनों से आगे निकल जाएंगे।

नक्षत्र में जन्म

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा हस्त नक्षत्र में स्थित है। इस नक्षत्र में जन्म लेने के कारण, आप अनेक मामलों में बह् भाग्यशाली होंगे। आप सक्रिय आदतों, संवेदनशील प्रकृति और विचारशील प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे। आप अत्यंत बुद्धिम और सुशिक्षित होंगे। इसके अतिरिक्त, आपको पवित्र प्राचीन ग्रन्थों का अध्ययन करने में गहन रूचि होगी, या फिर, आप ललित कलाओं की किसी विधा में प्रवीणता अर्जित कर सकते हैं। आप रचनात्मक कल्पना और उत्कृष्ट विचारों सम्पन्न होंगे। आप एक लेखक, सम्पादक, अंशदाता, आलोचक आदि के रूप में विख्यात हो सकते हैं। आपके व्यवसा का कुछ संबंध नगर निगम, जल–कार्य, व्यापारी जलयान (मर्चेन्ट–नेवी), आयात–निर्यात आदि से हो सकता है, आपव आय उत्कृष्ट होगी।

द्रेष्काण में जन्म

आपकी कुण्डली में, लग्न कन्या राशि के तीसरे द्रेष्काण में स्थित है– जो वृषभ द्रेष्काण के समकक्ष है। इस योग के कारण, आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। आपकी शारीरिक संरचना औसत होगी, लेकिन काया स्थूल और आकृतियां स्पष्ट होंगी। आपको आडम्बर से घृणा होगी, अतः आप समस्याओं से मुक्त रहेंगे, आपमें चीजों का हल खोजने और कुछ लोगों को नियुक्त करने की विलक्षण क्षमता होगी– जो उनको हल कर सकें तथा आप उनको अप मित्रों व परिचितों के दायरे में पाएंगे। वित्तिय मामलों में भी आप चिन्ता मुक्त रहेंगे। आपकी अपनी आय बहुत उत्तम होगी और आवश्यकता पड़ने पर दूसरों से भी आप मदद प्राप्त करेंगे। ईश्वर आपको एक शांतिपूर्ण और खुशहाल जीवन के आनन्द का वरदान देंगे।

आपका लग्न कन्या

वैदिक ज्योतिष में लग्न भाव को बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। एक व्यक्ति के जन्म के समय जो राशि आसमान में उदित होती है, उसे व्यक्ति का लग्न कहा जाता है तथा उस भाव में जो राशि होती है उसे लग्न राशि कहा जाता है। लग्न भाव ज्योतिष के माध्यम से एक व्यक्ति के जीवन के सूक्ष्मतम क्षणों की गणना करने में सहायता करता है। जबकि वार्षिक, मासिक, साप्ताहिक एवं दैनिक भविष्यवाणी सूर्य राशि व चंद्र राशि के आधार पर किया जाता है।

सामान्य विशेषताएँ

आपकी लग्न राशि कन्या है। इस राशि को भौतिक, सामान्य या लचीली राशि के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। अन्य कई नैसर्गिक गुणात्मक विशेषताएं भी इसमें विद्यमान हैं। यह नीरस और मानवीय प्रकृति की राशि है।

इस लग्न में जन्म लेने के कारण, आप मेधावी, अध्ययनशील और विनोदपूर्ण प्रकृति के होंगे। आपके कार्य करने के तरीके बहुत नियमबद्ध और सुव्यवस्थित होंगे, आप बहुत ज्ञानी व्यक्ति होंगे– निपुणता प्राप्त करने के उद्देश्य से आप सदैव ज्ञान की खोज में लगे रहेंगे। आपका झुकाव निरन्तर अनौपचारिक अध्ययन अथवा अनुसंधान की ओर बना रहेगा, तंत्र–मंत्र और इससे संबंधित विषयों में भी आपकी रूचि हो सकती है। आपमें धैर्य व दृढ़ता का भण्डार हो सकता है।

आपको कला और साहित्य में भी काफी रूचि हो सकती है। सामान्यतः अपने सभी मामलों में आप आदतन आलोचक और सख्त होंगे, तो भी आप कोमल वाणी, व्यावहारिक, परोपकारी और विवेकपूर्ण प्रकृति के होंगे। आप सादा जीवन और उच्च विचार में विश्वास रखेंगे और बहुत विवेकपूर्ण ढंग से अपने मौद्रिक मामलों का प्रबन्ध करेंगे। आप विचित्र वस्तुओं के उत्साही संग्रहकर्ता हो सकते हैं– संभवतः जिसने आपके जीवन के किसी समय के दौरान आपकी कल्पना को आकर्षित किया हो, लेकिन किसी भी संग्रहित वस्तु से अलग ना होने की आपकी एक विचित्र आदत हो सकती है।

शारीरिक रूप और व्यक्तित्व

आप गौर वर्ण के हो सकते हैं। आप मध्यम कद और गोल चेहरे व सुगठित छरहरी शारीरिक संरचना वाले हो सकते हैं। आपकी आँखें सुन्दर होंगी। आपकी आवाज कुछ–कुछ तेज हो सकती है। साथ ही आप कुछ हद तक अस्थिर मस्तिष्क वाले हो सकते हैं और बढ़ती उम्र के साथ उदास प्रवृत्ति अपना सकते हैं।

आपकी विशेषताएँ

आपमें विश्लेषण करने की अनोखी क्षमता विद्यमान होगी। आप बुद्धिमान और धारणशील स्मृति वाले होंगे। आप लड़ाई–झगड़ों से दूर रहने का प्रयास करेंगे और शांति व एकता आपको पसन्द होगी। आप बहुत नियमबद्ध ढंग से कार्य करेंगे। आपको कई क्षेत्रों का ज्ञान होगा। आप विवेकशील होंगे और व्यर्थ में धन खर्च नहीं करेंगे। आपको कल और संगीत में रूचि होगी।

नौकरी / व्यवसाय

आप एक सफल परामर्शदाता, वकील, चिकित्सक, शिक्षक, प्राध्यापक, सांख्यिकीविद, कम्प्यूटर प्रोग्रामर, गणितज्ञ, लेखाकार, गायक, लेखक, प्रबन्धक हो सकते हैं। आप परिवहन, यात्रा, टेलिफोन, आभूषण के व्यवसाय से लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

नकारात्मक लक्षण

आप भ्रमित और अस्थिर दिमाग वाले हो सकते हैं। आपमें आत्म–विश्वास की कमी हो सकती है। आप यथार्थवादी नहीं हो सकते हैं और अज्ञात सपनों के पीछे भाग सकते हैं।

विशेष गुण

1– आप बुद्धिजीवी और अत्यंत ग्रहणशील व्यक्ति होंगे।
2– आप कर्तव्यनिष्ठ और अपने कार्यों में बहुत व्यवस्थित होंगे। आप प्रत्येक क्षण के बारे में विचार करेंगे।
3– आप विनम्र, धार्मिक और मधुर वाणी वाले व्यक्ति होंगे।

कुण्डली के लिए शुभ/अशुभ ग्रह

1– दूसरे व नौवें भाव का स्वामी शुक्र, शुभ है।
2– लग्नेश बुध, सर्वाधिक शुभ है।
3– सातवें भाव का स्वामी बृहस्पति, मारकेश है।
4– चंद्रमा अशुभ है।
5– तीसरे व आठवें भाव का स्वामी मंगल, सर्वाधिक अशुभ है।
6– सूर्य और शनि तटस्थ हैं।

कन्या लग्न में जन्मे विशिष्ट व्यक्ति

क्रिकेटर– अजहरूद्दीन, सचिन तेंदुलकर, वेंकटेश प्रसाद, उद्योगपति– लाला चैतराम, वैल्स की राजकुमारी– प्रिंसेज़ डायना, यू. एस. ए. के पूर्व राष्ट्रपति– जॉन एफ. केनेडी, बिल क्लींटन, भारत के पूर्व राष्ट्रपति– डॉ. राधाकृष्णन, पूर्व प्रधानमंत्री– राजीव गांधी, पी. वी. नरसिंह राव, टेनिस खिलाड़ी– लिएन्डर पेस।

चन्द्र राशि दर्शन

आपकी राशि कन्या

वैदिक ज्योतिष में कुण्डली परीक्षण के लिए सूर्य राशि की अपेक्षा चंद्र राशि को अधिक महत्व दिया जाता है। वैदिक ज्योतिष कहता है कि जन्मकुण्डली में यदि चंद्रमा लग्न की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली है, तो लग्न या लग्न राशि के स्थान पर चंद्र राशि को केन्द्र मानकर अध्ययन करना चाहिए। चंद्र कुण्डली व्यक्ति के अनेक गुप्त रहस्यों को उजागर करती है, जिसे सूर्य कुण्डली के माध्यम से उजागर नहीं किया जा सकता है।

मानसिक अवस्था

आपकी कुण्डली में चंद्रमा कन्या राशि में स्थित है– जो कि बुध द्वारा संचालित है। यह एक साधारण, नकारात्मक अं भौतिक राशि है। आप शांत, मनमौजी और कुछ–कुछ ढुलमुल प्रकृति के होंगे, किन्तु आप बहुत ज्यादा महात्वाकांक्षी नहीं हो सकते हैं, आपमें डींग हाकने वाली आदतें बिल्कुल नहीं होंगी और आप मिथ्याभिमान से सदैव घृणा करेंगे। यद्यपि आपकी बौद्धिक क्षमता काफी ऊँची होगी और आप बौद्धिक कार्यो में संलग्न रहेंगे, तो भी आप उत्तरदायित्वपूर्ण एवं किसी के अधीन तक भी रहकर काम करना पसन्द कर सकते हैं। ऐसा आप अपने जीवन में शांति की कीमत व महत्ता को बढाने के लिए करेंगे और अनावश्यक तनावों से सदैव दूर रहना चाहेंगे।

आपको अपने घर से काफी लगाव होगा और आपके प्रिय पारिवारिक जन आपके जीवन को बहुत आनन्दमय व खुशहाल बनाएंगे। कृषि, कृषि संबंधी उत्पाद, दवाएं, औषधि, भोज्य–पदार्थ, बेकरी, मिष्ठान–भंडार, घरेलू उपभोग की वस्तुएं और अन्य घरेलू उपकरण आपको अपेक्षाकृत अधिक आकर्षित करेंगे। आपका अपने सहकर्मियों, वरिष्ठों व अधीनस्थों के साथ समान रूप से सौहार्दपूर्ण संबंध होगा और यदि आपका कोई घरेलू नौकर है, तो उसका व्यवहार आपके प्रति बहुत अच्छा होगा एवं आपको बहुत सम्मान देगा। फुर्तीला व चौकन्ना रहना आपका सहज स्वभाव होगा, साथ ही आप कुछ हद तक रहस्यात्मक भी हो सकते हैं– जो कि आपको असाधारण रूप से सहनशील बनाएगा। पारिवारिक भाग्य का अत्यधिक पतन, या जटिल घरेलू विवाद, अथवा अन्य प्रकार का थोपा हुआ अवरोध या प्रारम्भिक जीवन के अभाव आपको कुछ हद तक अन्तर्मुखी या एकान्तप्रिय बना सकते हैं।

आप विश्लेषण–विज्ञान का औपचारिक अध्ययन कर सकते हैं, किन्तु कला–कौशल में भी आपकी उतनी ही रूचि होगी– आपको ना केवल सैद्धान्तिक विषय–सामग्री के अध्ययन की तीव्र इच्छा होगी, बल्कि आप प्रयोगात्मक पक्ष या व्यावहारिक दृष्टिकोण में भी रूचि रखेंगे– जिसको आप अपेक्षाकृत अधिक महत्वपूर्ण समझेंगे। आप अपने खुद के कुछ मौलिक निष्कर्ष निकाल सकते हैं अथवा कुछ तथ्यों की खोज कर सकते हैं या कुछ उपकरणों का अविष्कार कर सकते हैं– जो कि सांसारिक गतिविधियों में उपयोगी साबित होगी। जैसे–जैसे समय व्यतीत होगा, आपकी परिपक्वत व योगदान की क्षमता में वृद्धि होगी, आपमें जोशपूर्ण व हंसमुख प्रकृति का विकास होगा, बातचीत करने में कुशल अं रमणीय संकेत करने में माहिर होंगे। संभवतः कुछ अन्तर्देशीय दूरस्थ स्थानों या विदेशों की भी यात्रा कर सकते हैं– शैक्षणिक या सांस्कृतिक उद्देश्य से।

आपका विशिष्ट व्यक्तित्व

यह अंतर्दृष्टिपूर्ण रिपोर्ट आपके अद्वितीय चारित्रिक गुणों की गहरी समझ प्रदान करती है, जिससे व्यक्तिगत विकास और आत्म-जागरूकता संभव होती है। इस भविष्यवाणी के महत्व को जानें –

(1) आपकी अनुपम शक्तियों, कमजोरियों, और व्यवहारिक प्रवृत्तियों की गहरी समझ बढ़ाने में।
(2) व्यक्तिगत विकास और आत्म-सुधार के क्षेत्रों की पहचान करने में, जो आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान में वृद्धि करता है।
(3) अपनी पारस्परिक शैली और भावनात्मक आवश्यकताओं को समझकर संबंधों और संवाद को बेहतर बनाने में।
(4) आपकी वास्तविक प्रेरणाओं और जीवन के उद्देश्य का पता लगाने में, जो आपको संतोषजनक और असली जीवन पथ की ओर मार्गदर्शन करता है।
(5) अपने व्यक्तिगत और पेशेवर लक्ष्यों को अपनी प्राकृतिक प्रतिभाओं और क्षमताओं के साथ समन्वित करने में, जो सफलता और संतुष्टि सुनिश्चित करता है।
(6) आपको अपने अद्वितीय गुणों को गले लगाने और सूचित निर्णय लेने के लिए सशक्त बनाने में, जो अंततः आत्म-स्वीकृति और खुशी की ओर ले जाता है।

आपके आंतरिक संसार की एक झलक : आपका अद्वितिय व्यक्तित्व

आपमें स्थितियों का विश्लेषण करने और उन विवरणों पर ध्यान देने की प्राकृतिक क्षमता है, जो अन्य लोग संभवतः देख नहीं सकते हैं। आप तेज दिमाग वाले है और जीवन के प्रति व्यावहारिक दृष्टिकोण है।

आप अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए समर्पित और केंद्रित हैं। आपमें एक मजबूत काम की नैतिकता है और आप अपने कार्य कुशलता के साथ करते हैं। आप अपने काम में गर्व महसूस करते हैं और सम्पूर्णता की ओर प्रयास करते हैं।

आप वह व्यक्ति नहीं हैं जो आकर्षण का केन्द्र बनना चाहते हैं। आप पर्दे के पीछे काम करना पसंद करते हैं और अपने काम को स्वयं बोलने देते हैं। आप अपनी उपलब्धियों के प्रति विनम्र होते हैं और अपनी उपलब्धियों के बारे में शेखी नहीं मारते।

आप एक विश्वसनीय और जिम्मेदार व्यक्ति हैं, और लोग प्रायः आपसे मदद और मार्गदर्शन के लिए आपके पास आते हैं। आप अपनी प्रतिबद्धताओं को गंभीरता से लेते हैं और हमेशा अपने वादों का पालन करते हैं।

आपका जीवन के प्रति एक व्यावहारिक और यथार्थवादी दृष्टिकोण है। आप अनावश्यक जोखिम उठाने में विश्वास नहीं करते हैं और चीजों के प्रति सतर्क दृष्टिकोण अपनाना पसंद करते हैं। आप जमीन से जुड़े हुए व्यक्ति हैं और आपको वास्तविकता की अच्छी समझ

है।

आपमें चीजों को संगठित करने और कुशलता से काम करने की अन्तर्निहित क्षमता है। आप पहले से ही चीजों की योजना बनाना पसंद करते हैं और मौके के लिए चीजों को छोड़ना पसंद नहीं करते। आपको अपने जीवन में एक संरचित दिनचर्या पसंद है।

आप सामाजिक स्थितियों में शर्मीले और संयमी नजर आ सकते हैं। आपको केंद्रीय स्थान लेने की बजाय देखना और सुनना पसंद है। आप वार्तालाप शुरू करने वाले नहीं होते हैं लेकिन एक बार जब आप सहज महसूस करते हैं, तो आप एक बड़े श्रोता हो सकते हैं और मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकते हैं।

आपमें अपने और अपने आस-पास के लोगों के लिए उच्च मानक हैं। आप सम्पूर्णता की ओर प्रयास करते हैं और जब चीजें आपकी उम्मीदों को पूरा नहीं करती हैं, तो आप समालोचना कर सकते हैं। हालांकि, यह आपको एक महान समस्या-समाधानकर्ता और विस्तार-उन्मुख व्यक्ति भी बना सकता है।

स्वास्थ्य सुख

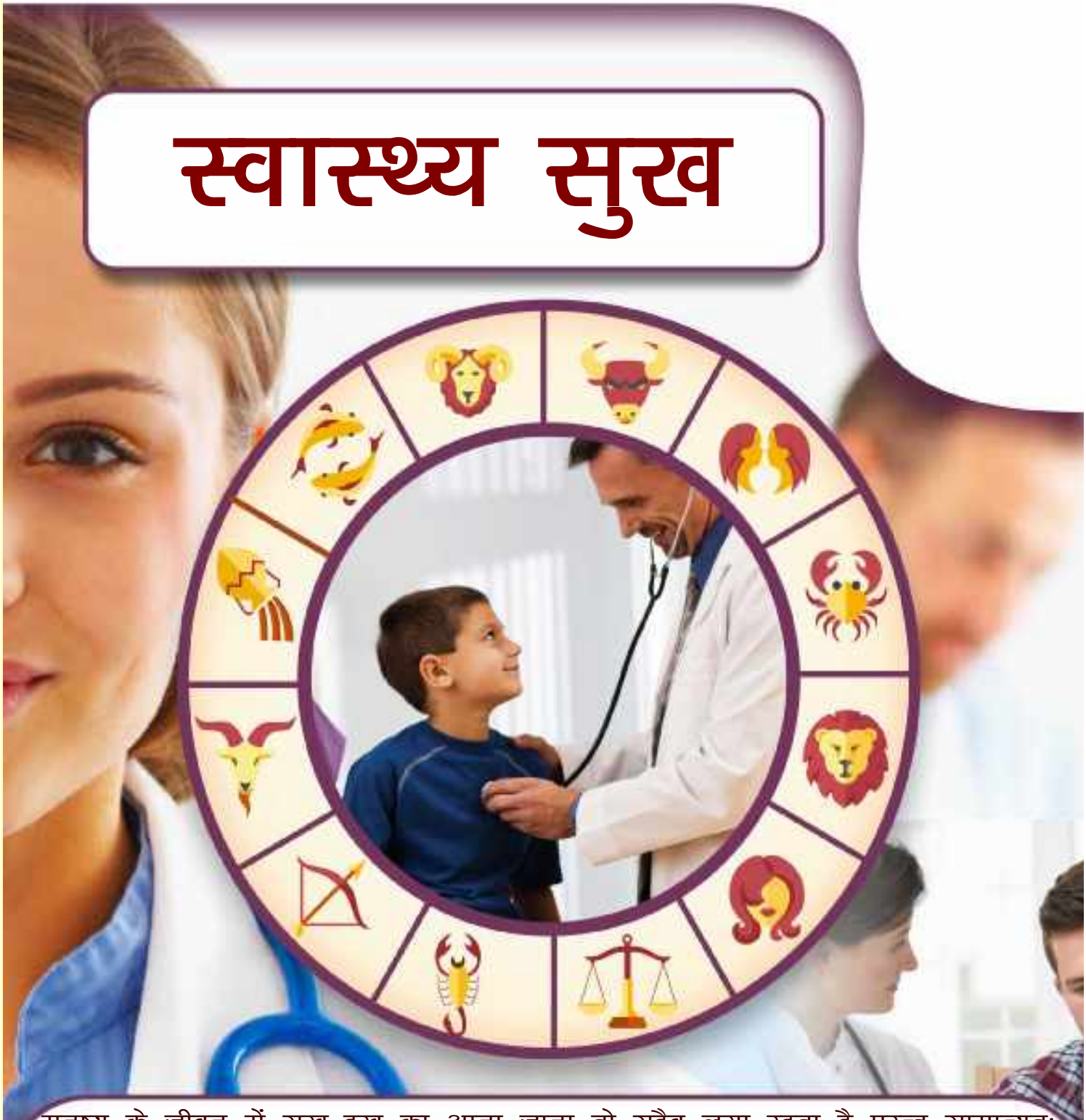

मनुष्य के जीवन में सुख–दुख का आना जाना तो सदैव लगा रहता है परन्तु सामान्यतः देखा जाए तो उसे सबसे अधिक कष्ट उसके शारीरिक अस्वस्थता के समय ही होता है। यदि शारीरिक रूप से व्यक्ति अस्वस्थ है तो उसके आस–पास का वातावरण कितना ही सुखमय क्यों न हो उससे उसको किसी प्रकार के सुख की अनुभूति नहीं होती। कहा जाता है कि जान है तो जहान है। वास्तविकता भी यही है कि व्यक्ति यदि स्वस्थ्य रहेगा तभी उसका जीवन जीवंत माना जाएगा, तभी उसे जीवन के अन्य सुखों का भरपूर आनन्द प्राप्त होगा अन्यथा जीवन के किसी भी प्रकार के सुख से वह वंचित रह जाएगा। इसलिए स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहना और उसके लिए सभी प्रकार के चिकित्सीय व आवश्यक होने पर ज्योतिषिय उपाय आदि भी करना चाहिए। चिकित्सा के बिना स्वास्थ्य का ठीक हो पाना संभव नहीं हो सकता, परन्तु कई बार ऐसा होता है कि चिकित्सीय उपचार का व्यक्ति के रोग पर कोई असर ही नहीं होता ऐसी स्थिति में यदि ग्रहों की दशा को देखकर उपचार के साथ–साथ ज्योतिषिय उपाय भी किया जाय तो संभवतः रोग से निजात शीघ्रता से पाया जा सके।

आपका स्वास्थ्य और आरोग्य

यह आपके स्वास्थ्य और आरोग्य के लिए भविष्यवाणी है, जो आपके विशिष्ट नक्षत्र पर आधारित है। यह व्यक्तिगत रिपोर्ट महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करती है, जो आपके उत्तम स्वास्थ्य को बनाए रखने और संतुलित जीवन जीने में मदद करती है। इस भविष्यवाणी का महत्व समझें –

(1) आपकी संभावित स्वास्थ्य समस्याओं की पहचान करके, जो आपके स्वास्थ्य के सकारात्मक प्रबंधन और समय रहते हस्तक्षेप की अनुमति देती है।
(2) आपकी अंतर्निहित शक्तियाँ और कमजोरियाँ प्रकट करना, जो आपको शारीरिक, मानसिक, और भावनात्मक स्वास्थ्य का समर्थन करने वाले जीवनशैली की दिशा में मार्गदर्शन करती है।
(3) आपके नक्षत्र की अद्वितीय विशेषताओं के अनुरूप, व्यक्तिगत आहार और व्यायाम की सिफारिशें देना।
(4) आपके तनाव प्रबंधन और क्षमता को बढ़ावा देना, जिससे आपका जीवन संतुलित और सार्थक बने।
(5) लाभप्रद आदतों और दिनचर्याओं पर मार्गदर्शन प्रदान करना, जिससे आप ऊर्जा और दीर्घायु को बनाए रख सकें।
(6) आपको आपके स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती के बारे में सूचित निर्णय लेने में सशक्त बनाना, जो अंततः आपको एक खुश, स्वस्थ जीवन की ओर ले जाता है।

शारीरिक स्वास्थ्य और ऊर्जा का स्तर

हस्त नक्षत्र वायु तत्व से जुड़ा हुआ है, जो गति और फुर्ती का प्रतीक है। आपका शारीरिक स्वास्थ्य और जीवनशक्ति अच्छी हो सकती है, लेकिन आप वात दोष में असंतुलन से पीड़ित हो सकते हैं, जो सुखापन और जोड़ों के दर्द का कारण बन सकता है।

मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक स्थिरता

हस्त नक्षत्र चंद्रमा ग्रह से संबंधित है, जो भावनाओं और सहज ज्ञान पर शासन करता है। आप संवेदनशील हो सकते हैं तथा आपको मानसिक एवं भावनात्मक स्थिरता को बढ़ाने वाले अभ्यासों से लाभ हो सकता है, जैसे कि ध्यान और प्राणायाम।

आहार और पोषण की आवश्यकताएं

आपको वात दोष को संतुलित करने के लिए स्वास्थवर्द्धक वसाओं और तेलों से भरपूर संतुलित आहार से लाभ हो सकता है। आप वात दोष में असंतुलन से पीड़ित हो सकते हैं और आपको अच्छी तरह से जल का सेवन करने तथा दालचीनी व अदरक जैसे गर्म मसालों को भोजन में शामिल करने जैसे अभ्यासों से लाभ हो सकता है।

फिटनेस और व्यायाम

शारीरिक गतिविधियाँ हस्त नक्षत्र की ऊर्जा को संतुलित करने में मदद कर सकती हैं तथा उत्तम स्वास्थ्य एवं सुखद जीवन को बढ़ावा दे सकती हैं। आपको योग, पिलाटीस, और मार्शल आर्ट्स

जैसी गतिविधियों से शारीरिक शक्ति और लचीलापन बढ़ाने में लाभ हो सकता है।

तनाव प्रबंधन और आराम की तकनीकें

आप तनाव और चिंता से ग्रसित हो सकते हैं। ध्यान, आरोमाथेरेपी, और सौम्य योग जैसी विश्राम तकनीकें विश्राम को बढ़ावा दे सकती हैं और तनाव को कम कर सकती हैं।

नींद का पैटर्न और गुणवत्ता

उत्तम स्वास्थ्य के लिए अच्छी नींद अत्यंत आवश्यक है। आपको एक शांत नींद का माहौल बनाने और एक नियमित सोने की दिनचर्या स्थापित करने से अच्छी नींद के पैटर्न और गुणवत्ता में सुधार हो सकता है।

आध्यात्मिक वृद्धि और आंतरिक सामंजस्य

हस्त नक्षत्र आधयात्मिक विकास और आंतरिक परिवर्तन से संबंधित है। आपको प्रार्थना, ध्यान, और आत्म-मंथन जैसे अभ्यासों से आंतरिक शांति और आध्यात्मिक विकास को बढ़ाने में लाभ हो सकता है।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए सुझाव

उत्तम स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए, आपको संतुलित आहार, नियमित व्यायाम, तनाव प्रबंधन, और अच्छी नींद की आदतों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। आपको अपनी भावनात्मक आरोग्यता के प्रति भी ध्यान देना चाहिए और स्वयं की देखभाल और सचेतनता का अभ्यास करना चाहिए।

अच्छे स्वास्थ्य के उपाय

आयुर्वेदिक उपचार जैसे कि हर्बल सप्लीमेंट्स, तेल की मालिश, और गर्म स्नान उत्तम स्वास्थ्य को बनाए रखने में मददगार हो सकते हैं। हालांकि, व्यक्तियों को किसी भी नए उपचार या सप्लीमेंट्स की कोशिश करने से पहले चिकित्सक से परामर्श करना चाहिए।

शिक्षा, विद्या और विद्वता

प्राचीन समय में शिक्षा का स्वरूप वर्तमान शिक्षा से पूर्णतया भिन्न था। तब शिक्षा को अर्थोपार्जन का माध्यम न मानकर ज्ञान व मोक्ष प्राप्ति का माध्यम माना जाता था। इसलिए उस समय की शिक्षा में इस प्रकार की प्रतियोगिता नहीं थी जो कि वर्तमान समय की शिक्षा में दृष्टिगोचर होती है। इस वैज्ञानिक युग में जिस गति से विकास हुआ उसी गति से अर्थोपार्जन के लिए अनेकोंनेक स्रोत खुलते चले गए एवं इस विकास की गति को अत्यधिक गति प्रदान के लिए शिक्षा का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता चला गया। आज स्थिति यह है कि यदि कोई अशिक्षित रह जाता है तो उसे निश्चित तौर पर इस विकसित युग में अविकसित होकर ही जीना पड़ेगा। शिक्षा प्राप्त करना भी अब उतना आसान नहीं है। इस क्षेत्र में प्रतियोगिता ही एक मात्र बाधा नहीं है बल्कि अन्य अनेक बाधाएं भी हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली तो ऐसी हो गई है कि उससे धनोपार्जन का माध्यम बनाने के लिए पहले उसमें धन का निवेश करना भी आवश्यक है। ऐसी बाधाएं तो सामाजिक तौर पर सबको पार करनी पड़ती हैं, परन्तु जीवन में व्यक्तिगत रूप से भी कई बार शिक्षा के मार्ग में बाधाएं आने लगती हैं। इन बाधाओं के कारण व्यक्ति का भविष्य बाधित होता है, उसका विकास बाधित होता है या संक्षिप्त में कहा जाए तो उसके जीवन का प्रत्येक क्षेत्र प्रभावित होता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति चाहता है कि वह या उसकी संतान उच्च से उच्च शिक्षा ग्रहण कर सके, किन्तु इन बाधाओं के कारण सबके लिए ऐसा संभव नहीं होता। ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से व्यक्ति के शिक्षा में आने वाली बाधाओं में भी ग्रहों का प्रभाव समाहित होता है। ग्रहों के प्रतिकूल होने की दशा में शिक्षा बाधित होती है। इसलिए इन बाधाओं से सचेत रहने के लिए इसके बारे में जानना भी आवश्यक है।

शिक्षा और सीखने की क्षमता

यह भविष्यवाणियां आपकी शिक्षा के लिए हैं, जो आपके विशिष्ट नक्षत्र के आधार पर हैं। यह व्यक्तिगत रिपोर्ट महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करती है जो आपको शैक्षिक परिदृश्य को समझने और अपने शैक्षिक प्रयासों में सफलता प्राप्त करने में सहायता करती है। इस भविष्यवाणी का महत्व समझें –

(1) आपकी नैसर्गिक शिक्षण शैली, शक्तियाँ और कमजोरियाँ पहचानने में, जिससे आपके शैक्षिक अनुभव सफल और आनंदमय हो सकें।
(2) अपने शिक्षा संबंधी लक्ष्यों को अपनी प्राकृतिक प्रतिभाओं और क्षमताओं के साथ समन्वित करने में, जिससे पूर्णता और पुरस्कार प्राप्त हो सकें।
(3) अधिकतम उपयुक्त विषयों और अध्ययन क्षेत्रों का पता लगाने में, जिससे आप अपने चुने हुए क्षेत्र में समृद्ध और उत्कृष्ट हो सकें।
(4) संभावित चुनौतियों का पता लगाने और आपकी शैक्षिक यात्रा में किसी भी बाधाओं को पार करने के लिए मार्गदरशन प्रदान करने में।
(5) आपकी प्रेरणा, एकाग्रता और संकल्प को बढ़ावा देने में, जिससे आपका शैक्षिक प्रदर्शन सुधर सके और व्यक्तिगत विकास हो सके।
(6) आपको अपनी शिक्षा के बारे में सूचित निर्णय लेने में सशक्त बनाने में, जो अंततः आपको सफलता और संतुष्टि की ओर ले जाता है।

स्वभाविक योग्यता

आप स्वाभाविक रूप से रचनात्मक हैं और चीजों को बनाने के लिए अपने हाथों का उपयोग करने की प्रतिभा है। आप संवाद में कुशल हैं और दूसरों को मनाने की प्राकृतिक क्षमता रखते हैं।

अध्ययन की शैली

आपकी सीखने की शैली व्यावहारिक है तथा आप व्यावहारिक व अनुभवात्मक अधिगम के माध्यम से सबसे अच्छी तरह सीखते हैं। आप छोटे समूहों में और एक-एक करके अनुदेशन के माध्यम से सीखने से भी लाभ उठाते हैं।

सर्वोत्तम विषय

कला, डिज़ाइन, और प्रौद्योगिकी से संबंधित विषय आपके लिए सबसे उत्तम हैं। आप चिकित्सा या मनोविज्ञान जैसे क्षेत्रों में भी उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं।

विद्याध्ययन का सरल मार्ग

आपको ऐसे शैक्षिक पथ का अनुसरण करना चाहिए जो आपको अपनी रचनात्मकता को व्यक्त करने और अपने हाथों के साथ काम करने की अनुमति दे। आप कला, डिज़ाइन, या प्रौद्योगिकी,

साथ ही चिकित्सा या मनोविज्ञान जैसे क्षेत्रों में करियर बनाने पर विचार कर सकते हैं।

उपाय

आप अपने मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को सुधारने के लिए ध्यान या योग का अभ्यास करके लाभ उठा सकते हैं। आप अपनी प्राकृतिक प्रतिभाओं को बढ़ाने के लिए पन्ना या टोपाज जैसे रत्न धारण कर सकते हैं।

विद्याध्ययन में कठिनाइयाँ

आप पूर्णतावाद की प्रवृत्ति के साथ संघर्ष कर सकते हैं और स्वयं के काम के प्रति अत्यधिक आलोचनात्मक हो सकते हैं। आप अनिश्चितता से संघर्ष कर सकते हैं और चुनाव करने में कठिनाई हो सकती है।

सर्वोत्तम सुझाव

इन चुनौतियों को दूर करने के लिए, आपको अपनी निर्णय लेने की क्षमताओं का विकास करना चाहिए और अपने परिपूर्णतावाद को अपनी रचनात्मक प्रवृत्तियों में लागू करने के तरीके ढूंढ़ना चाहिए। आपको अपनी क्षमताओं पर आत्मविश्वास बढ़ाने और अपने निर्णय पर भरोसा करना सीखने पर भी काम करना चाहिए। इसके अतिरिक्त, आप अपने चुने हुए क्षेत्र में अधिक अनुभवी लोगों से मार्गदर्शन और सलाह लेकर लाभ उठा सकते हैं।

नौकरी, ब्यापार और ब्यवसाय

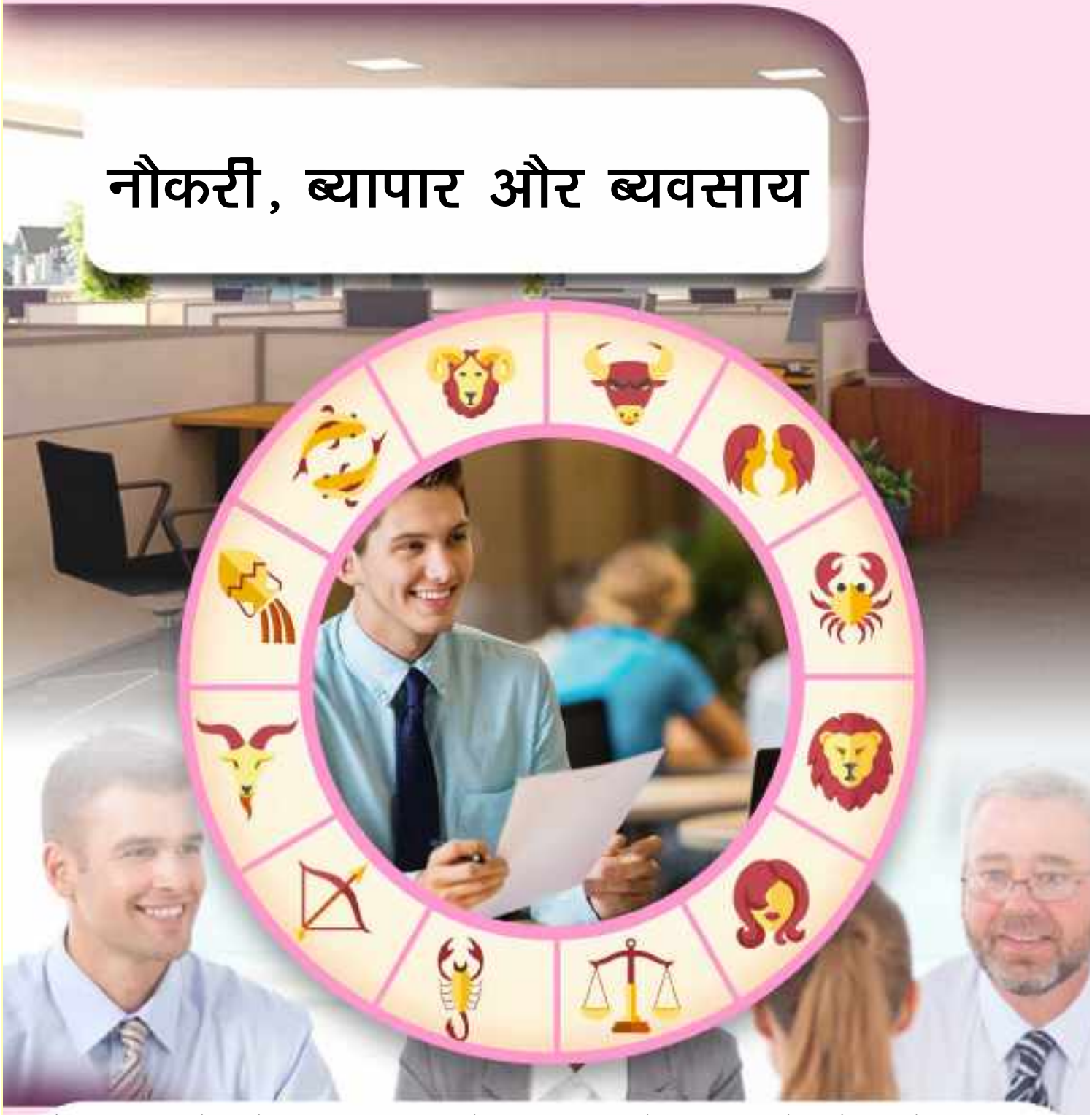

भौतिक संसार में रहते हुए मनुष्य की अनेक आवश्यकताओं का जन्म होता है। जिन्हें पूरा करने के लिए उसे विभिन्न प्रकार के कार्य व व्यवसाय को अपनाना पड़ता है। सभी प्रकार की जरूरतों को पूर्ण करने हेतु मनुष्य का आर्थिक रूप से सुदृढ़ होना आवश्यक है। जबकि वर्तमान समय में इस तरह की परिस्थिति व प्रतिस्पर्द्धा का माहौल बन गया है कि सभी एक दूसरे से आर्थिक व सामाजिक स्तर पर आगे निकलना चाहते हैं। ऐसी परिस्थिति में कोई बहुत आगे निकल जाता है तथा कोई इतना पिछे रह जाता है कि उसके लिए अपनी आम जरूरतों को पूरा कर पाना भी कठिन होने लगता है। जीवन का प्रत्येक पक्ष किसी न किसी रूप से आर्थिक पक्ष से अवश्य जुड़ा हुआ है। ऐसे में व्यवसाय, नौकरी आदि में किसी भी प्रकार की बाधा आना जीवन में कठिनाई उत्पन्न कर देता है। ये बाधाएं किसी भी प्रकार की हो सकती हैं जैसे किसी प्रकार की कोई व्यापारिक दुर्घटना, हानि, ऋण में वृद्धि, शत्रुओं द्वारा किया षडयंत्र आदि। यद्यपि बाह्य तौर पर इन्हें परिस्थितिजन्य माना जाता है, परन्तु ज्योतिषशास्त्र के अनुसार इस प्रकार की बाधाएं ग्रहों के प्रतिकूल प्रभावों के कारण उत्पन्न होती हैं। यदि व्यक्ति अपनी जन्मकुण्डली में स्थित ग्रहों के प्रतिकूल प्रभावों को समय रहते जान कर उसके लिए उपाय करे तो संभवतः वह इन बाधाओं को दूर करने में सफल भी हो सकता है।

आपका व्यावसाय, कार्यक्षेत्र और जॉब प्रोफ़ाइल

यह भविष्यवाणी आपके व्यावसायिक जीवन या करियर के लिए है, जो आपके जन्म नक्षत्र पर आधारित है। यह व्यक्तिगत रिपोर्ट महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करती है जो आपको व्यावसायिक परिवेश में संचालन करने और करियर में सफलता प्राप्त करने में सहायता करती है। इस भविष्यवाणी के महत्व को निम्नलिखित बातों से समझिए –

(1) आपकी अन्तर्निहित व्यावसायिक शक्तियों और कमजोरियां की पहचान करना, आपको सबसे उपयुक्त करियर पथ की ओर मार्गदर्शन करना।
(2) विभिन्न उद्योगों में सफलता और विकास की आपकी क्षमताओं को उजागर करना, आपके लिए एक पूर्णतः संतोषप्रद व पुरस्कृत व्यावसायिक यात्रा सुनिश्चित करना।
(3) आपके नक्षत्र की अद्वितीय विशेषताओं के अनुसार, प्रभावशाली संचार, टीमवर्क और नेतृत्व पर व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्रदान करना।
(4) आपके करियर में संभावित चुनौतियों को उजागर करना और आपके व्यावसायिक जीवन में किसी भी बाधा को दूर करने के उपाय प्रदान करना।
(5) आपकी निर्णय क्षमता, रचनात्मकता, और अनुकूलन क्षमता को बढ़ावा देना, जो बेहतर प्रदर्शन और नौकरी संतुष्टि प्रदान करेगी।
(6) आपको सशक्त करना ताकि आप अपने व्यावसाय, काम, या नौकरी के बारे में सूचित निर्णय ले सकें, जो अंततः सफलता और संपूर्णता की ओर ले जाता है।

जॉब प्रोफ़ाइल

आपको अपने कौशलपूर्ण और रचनात्मक प्रकृति के लिए जाना जाता है, जो आपको उत्कृष्ट शिल्पकार और कारीगर बनाता है। आप चीज़ों को व्यवस्थित करने में भी अच्छे हैं और विस्तार-उन्मुख हैं, जो आपको प्रशासनिक भूमिकाओं के लिए उपयुक्त बनाता है। अतः, आप जौहरी, दर्जी, कलाकार, ग्राफ़िक डिज़ाइनर, इंजीनियर, इवेंट प्लानर, और लेखाकार जैसे पेशों में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं।

कार्यक्षेत्र का वातावरण

आपकी प्रगति के लिए कार्य वातावरण को सुव्यवस्थित और संरचित होना चाहिए। आपको एक ऐसे वातावरण में काम करना चाहिए जो रचनात्मकता और नवाचार को बढ़ावा देता हो, जिसमें आपके सर्वश्रेष्ठ कार्य निष्पादन में सहायता करने के लिए पर्याप्त संसाधन और उपकरण हों। आप परिश्रमी हैं और अपने काम के प्रति समर्पित हैं, तथा आपको उत्पादकता के लिए अनुकूल कार्य वातावरण की आवश्यकता होती है।

कौशल और योग्यताएं

आप उत्कृष्ट संचार और संगठनात्मक कौशलों से स्वाभाविक रूप से सम्पन्न हैं। आप विस्तार-उन्मुख हैं, दस्तकारी में बहुत निपुण हैं, और समस्या सुलझाने में कुशल होते हैं। आपको

डिज़ाइन, कला, इंजीनियरिंग, लेखाकारिता, और व्यवसाय प्रशासन जैसे विषयों में पाठ्यक्रमों में शामिल होना चाहिए। आप संचार, संगठनात्मक कौशल, और नेतृत्व के पाठ्यक्रमों से भी लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

कार्य के घंटे

आप मेहनती होते हैं और अपने काम के प्रति समर्पित होते हैं, और आप अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अतिरिक्त घंटों तक काम करने के लिए तैयार होते हैं। आप एक लचीले वातावरण में काम कर सकते हैं, लेकिन आपको ट्रैक पर बने रहने के लिए किसी संरचना की जरूरत हो सकती है।

करियर में उन्नति

आपके करियर में विकास की उत्कृष्ट संभावनाएं हैं। आप मेहनत, समर्पण, और नई कौशलों अर्जित करके उच्च पदों तक पहुंच सकते हैं। आपको सीखने और अपने कौशल सेट को विस्तारित करने के अवसरों का लाभ उठाना चाहिए।

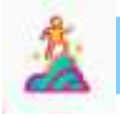

करियर में चुनौतियां

आप बहुत अधिक विवरण-उन्मुख हो सकते हैं, जिसके कारण आप बड़े लक्ष्य को देखने से चूक सकते हैं। आप दूसरों को कार्य सौंपने में संघर्ष कर सकते हैं और स्वयं को अधिक काम करने की प्रवृत्ति हो सकती है। आपको अपने सहयोगियों पर विश्वास करना और जरूरत पड़ने पर दूसरों को जिम्मेदारियां सौंपना सीखना चाहिए।

पुरस्कार और सम्मान

आप अपने कठिन परिश्रम और समर्पण के लिए मान्यता और पुरस्कार की उम्मीद कर सकते हैं। आप एक कुशल शिल्पकार और कारीगर हैं, तथा आपके काम को अक्सर सराहा एवं महत्व दिया जाता है। कठिन परिश्रम, समर्पण, और नई कौशलों की प्राप्ति के साथ, आप अपने करियर में सफलता प्राप्त कर सकते हैं तथा संतुष्टिजनक व पुरस्.त पेशेवर जीवन का आनंद ले सकते हैं।

धन – संपत्ति

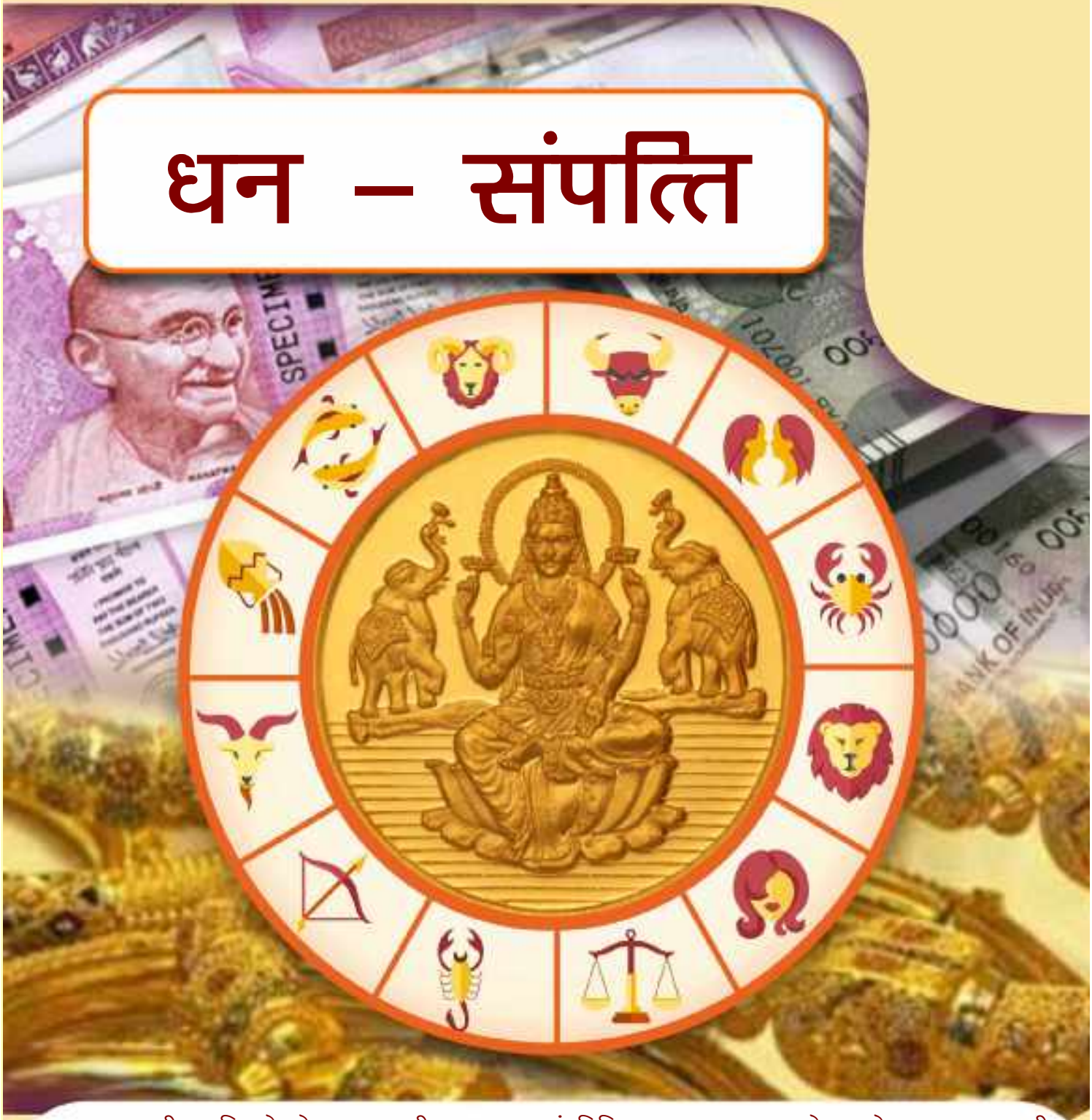

मनुष्य का जीवन मिलने के बाद उसकी आवश्यकताएं विभिन्न रूप धारण करके उसके समक्ष आ खड़ी होती हैं और इन आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उसे किसी न किसी रूप में धन की आवश्यकत जरूर पड़ती है। मनुष्य का वर्तमान हो अथवा भविष्य आर्थिक पक्ष से अधिक प्रभावित होता है। यदि व्यक्ति का आर्थिक पक्ष सुदृढ़ है तो उसकी अनेक समस्याएं आसानी से दूर हो जाती हैं, परन्तु यह आवश्यक नहीं सबकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ ही हो। किसी के पास अपार धन होता है तो कोई धन के अभाव में अपना जीवन बहुत ही कठिनाई में व्यतीत करता है। जीवन में धन से जुड़ी हुई बाधाएं अनेक रूप में आती हैं। यह आवश्यक नहीं कि जिसके पास धनार्जन के अच्छे साधन हो अथवा जिसका व्यापा व आय अधिक हो उसे धन का कभी अभाव नहीं होता, एवं जिसकी आय कम होती है उसे ही धन बाधा का सामना करना पड़ता है। धन संबंधी बाधा तो किसी के भी जीवन में किसी भी स्वरूप में आ सकती है। ऐसी परिस्थिति जब व्यक्ति को धन की आवश्यकता हो और उसके पास प्रत्यक्ष रूप से धन उपलब्ध न हो तो उसे धन बाधा कहा जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इस प्रकार की परिस्थितियां ग्रहों के योग से निर्मित होती हैं। यही कारण है कि एक ही माता–पिता की दो संतान माता–पिता द्वारा समान रूप से धन वितरण करने के बाद भी कोई धनवान व कोई गरीब हो जाती है। इसलिए इन ग्रह के योग को जानना व्यक्ति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण बन जाता है।

आपकी वित्तीय स्थिरता और आर्थिक विकास

यह आपके धन और वित्त के संदर्भ में भविष्यवाणी है, जो आपके नक्षत्र पर आधारित है। यह व्यक्तिगत रिपोर्ट महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि प्रदान करती है जो आपको वित्तीय परिदृश्य को समझने और आर्थिक सफलता प्राप्त करने में मदद करती है। इस भविष्यवाणी के महत्व को समझें –

(1) आपकी नैसर्गिक वित्तीय शक्तियों और कमजोरियों को समझने के लिए, जो आपको सूचित वित्तीय निर्णयों की दिशा में मार्गदर्शन करती है।
(2) आपके धन सृजन और संचय की संभावनाओं का पता लगाने, जो आपको अपने वित्तीय अवसरों का अधिकतम उपयोग करने का सामर्थ्य प्रदान करती है।
(3) निवेश के लिए सबसे शुभ समयावधियों की पहचान करने, जो आपके वित्तीय प्रयासों में सफलता और वृद्धि सुनिश्चित करती है।
(4) आपके नक्षत्र की अद्वितीय विशेषताओं के अनुसार बजट बनाने, बचत, और वित्तीय योजना पर व्यक्तिगत मार्गदर्शन प्रदान करने।
(5) संभावित वित्तीय चुनौतियों का पता लगाना और आपके धन संबंधी यात्रा में किसी भी बाधा को दूर करने के उपाय प्रदान करना।
(6) आपको अपने पैसे और वित्त के बारे में सूचित निर्णय लेने में सशक्त बनाना, जो अंततः वित्तीय स्थिरता और समृद्धि की दिशा में ले जाता है।

आपकी वित्तीय क्षमता

आपकी वित्तीय क्षमता उत्तम है। आपके पास धन प्रबंधन करने की प्राकृतिक क्षमता है, और आपको अपनी मितव्ययीता एवं सतर्क वित्तीय योजना के लिए जाना जाता है। आप प्रायः वित्तीय विश्लेषण में कुशल होते हैं और लाभदायक अवसरों को पहचानने की पारखी नज़र होती है। आप मेहनती और अनुशासित होते हैं, जो आपको अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करता है।

धन और समृद्धि

अपने जीवन में आपको वित्तीय सफलता मिलने की संभावना है। आपमें धन संचय की प्रबल इच्छा होती है और प्रायः वित्तीय स्थिरता प्राप्त करने की आवश्यकता से प्रेरित होते हैं। आपको स्थिर आय का स्रोत मिलने की संभावना है और आप अपनी सतर्क योजना और प्रबंधन के माध्यम से एक दृढ़ वित्तीय आधार बना सकते हैं।

वित्तीय लक्षण और विशेषताएं

आपको अपनी व्यावहारिकता और मितव्ययीता के लिए जाना जाता है। आपकी अनावशयक चीजों पर खर्च करने की प्रवृत्ति नहीं होती है और प्रायः भविष्य की आवश्यकताओं के लिए पैसे बचाते हैं। आप विस्तार-उन्मुख भी होते हैं तथा लागत को कम करने एवं लाभ को बढ़ाने के तरीके खोजने में कुशल होते हैं। आप जोखिम उठाने वाले नहीं होते, और सुरक्षित व सुनिश्चित वित्तीय

साधनों में निवेश करना पसंद करते हैं।

वित्तीय दृष्टिकोण को बेहतर कैसे बनायें ?

आप अपने वित्तीय कौशल और ज्ञान को विकसित करके अपने वित्तीय दृष्टिकोण को बेहतर बना सकते हैं। आप शेयर बाजार, म्यूचुअल फंड, और अन्य वित्तीय साधनों के बारे में जानने में समय लगा सकते हैं। आप अंशकालिक नौकरियां करके या एक साइड बिजनेस शुरू करके अपनी आय बढ़ाने के तरीकों का भी पता लगा सकते हैं।

धन प्रबंधन के सुझाव

आप कुछ मूलभूत धन प्रबंधन सुझावों का अनुसरण करके अपनी वित्तीय स्थिति को बेहतर बना सकते हैं। आप बजट बना सकते हैं, अपने व्यय पर नजर रख सकते हैं, और वित्तीय लक्ष्य निर्धारित कर सकते हैं। आप आवेगपूर्ण खरीदारी से बच सकते हैं और खरीदारी की सूची के अनुसार चल सकते हैं। इसके अलावा, यह सुनिश्चित करने के लिए आप अपनी बचत और निवेश को स्वचालित कर सकते हैं कि नियमित रूप से पैसे बचा सकें।

वित्तीय सफलता में सुधार के लिए उपाय

आपकी वित्तीय सफलता को बढ़ाने के लिए, आप गायत्री मंत्र का जप जैसे कुछ उपाय कर सकते हैं, जिसके बारे में माना जाता है कि वह दैवीय कृपा प्रदान करता है। आप धर्मार्थ कार्यों के लिए दान भी कर सकते हैं, जो आपके कर्म को सुधारने में और वित्तीय समृद्धि लाने में मदद कर सकता है।

निवेश की योजनाएं

आप रूढ़िवादी निवेशक हैं, और आपको निम्न जोखिम वाले निवेश जैसे निश्चित जमा और ब०न्ड पसंद हैं। हालांकि, आप म्यूचुअल फंड्स या शेयर बाजार में निवेश करने पर भी विचार कर सकते हैं, बशर्ते कि आप अपनी शोध करें और बुद्धिमानी से निवेश करें। आपको अपने पोर्टफोलियो का विविधीकरण करना चाहिए ताकि जोखिम को कम किया जा सके।

दीर्घकालिक वित्तीय वृद्धि के लिए योजनाएं

आप एक वित्तीय योजना बनाकर दीर्घकालिक वित्तीय वृद्धि की योजना बना सकते हैं, जिसमें आपके वित्तीय लक्ष्य, व्यय, और बचत शामिल हैं। आपको नियमित रूप से अपनी योजना की समीक्षा और अद्यतन करनी चाहिए ताकि आप अपने वित्तीय उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए निर्धारित पथ पर रहें। आप एक सेवानिवृत्त योजना या पेंशन योजना में निवेश करने पर भी विचार कर सकते हैं ताकि एक सुविधाजनक भविष्य सुनिश्चित किया जा सके।

मकान/आवास सुख

मनुष्य का जीवन प्राप्त होने के बाद उसके जीवन में तरह–तरह की जरूरतें आती हैं, परन्तु जो मूलभूत आवश्यकताएं हैं उनमें से सबसे पहले वह भोजन और फिर वस्त्र के बारे में सोचता है और जब उसे पूरा कर लेता है तो उसके बाद उसे अपने रहने के लिए एक ऐसे आवास की जरूरत महसूस होती है जिसमें वह सुख–शांति से अपने परिवार के साथ रह सके। चूंकि प्रत्येक व्यक्ति की यह इच्छा होती है कि उसके पास उसका स्वयं का घर व सभी प्रकार की भौतिक सुख सुविधाएं हों, परन्तु वास्तव में सब कुछ हासिल कर पाना इतना आसान भी नहीं होता है। इन्हें प्राप्त करनें में अनेक बाधाएं आती हैं। किसी के जीवन में ये बाधाएं अधिक होती हैं तो किसी में कुछ कम एवं किसी को बहुत आसानी से सब कुछ उपलब्ध हो जाता है। ज्योतिष में इसी उतार–चढ़ाव के खेल को ग्रहों व भाग्य का खेल कहा जाता है जो कि सबका अलग–अलग होने के कारण सबको अलग–अलग परिस्थितियों में जीवन व्यतीत करना पड़ता है।

घर, मकान, या निवास स्थल के लिए सुझाव

ये आपके घर, मकान, या निवास स्थल के लिए भविष्यवाणी हैं, जो आपके नक्षत्र (तारा) के आधार पर तैयार की गई हैं, यह आपके रहन-सहन को ग्रहों के प्रभाव से कैसे प्रभावित करते हैं, इसका पता लगाने का एक महत्वपूर्ण उपकरण है। इस 2 से 3 पृष्ठीय विश्लेषण में आपके जन्म नक्षत्र का गहरा अध्ययन किया गया है, जिसमें देखा गया है कि आपके घर का माहौल आपकी सफलता, खुशी, और सामान्य कल्याण कैसे प्रभावित करता है। नक्षत्रों के आधार पर भविष्यवाणी के महत्व को समझें –

(1). अपनी प्राकृतिक ऊर्जा के साथ समन्वित एक घर बनाने से संतुलित और उत्साहजनक वातावरण बनेगा।
(2). अपने जीवन लक्ष्यों के साथ अपने घर को समन्वित करके आपको समृद्ध होने और व्यक्तिगत कठिनाइयों को पार करने में सहायता करना।
(3). आपके घर में संवाद और पारिवारिक संबंधों को सुधारने तथा शांति व सामंजस्य को बढ़ावा देने में मदद करना।
(4). संभावित समस्याओं की पहचान करने और आपके घर से जुड़ी किसी भी बाधा को दूर करने हेतु समाधान प्रदान करना।
(5). एक ऐसा माहौल बनाना जो शारीरिक, मानसिक, और भावनात्मक स्वास्थ्य को बढ़ावा दे, ताकि स्वास्थ्य और कल्याण को अधिकतम किया जा सके।
(6). ज्योतिषीय और भौगोलिक चर के आधार पर आपके घर का आदर्श स्थान प्रकट करना।
(7). स्थानान्तरण या नवीनीकरण करने का सबसे शुभ समय बताना, ताकि सुचारू संक्रमण और सकारात्मक परिणाम सुनिश्चित किया जा सके।
(8). आवासीय लेआउट, रंग, और इंटीरियर डिजाइन पर व्यक्तिगत सलाह देना, ताकि सकारात्मक प्रभावों को अधिकतम किया जा सके और नकारात्मक प्रभावों को कम किया जा सके।
(9). अपने नक्षत्र की विशेषताओं के साथ अपने निवास को मिलान करने से आपका आध्यात्मिक सम्बंध मजबूत होगा।
(10). आपको ऐसे समझदार चुनाव करने में सक्षम बनाना जो आपकी जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाएं तथा आपको उपलब्धि और संतोष की ओर ले जाएं।

घर, मकान, या निवास स्थल का स्वामित्व

आप ऐसी संपत्तियों के मालिक हो सकते हैं जो आकर्षक, सुंदर, और अद्वितीय हों। आप ऐसी संपत्तियों में निवेश कर सकते हैं जिनमें भावनात्मक मूल्य या आपके सांस्.तिक मूलों से जुड़ाव हो। आपकी संपत्तियों में विलासिता की झलक हो सकती है और आपकी परिष्कृत रूचि भी प्रदर्शित हो सकती है।

इंटीरियर डिज़ाइन

आपके पास डिजाइन के प्रति प्राकृतिक ज्ञान होता है और आप अपने घरों का डिजाइन करने में बहुत ध्यान दे सकते हैं। आप अपने घर के इंटीरियर डिजाइन में रचनात्मकता, अद्वितीयता, और विस्तृत विवरणों के तत्वों को शामिल कर सकते हैं। आपको हाथ से बने, शिल्पकारी सजावटी वस्तुएं भी पसंद हो सकती हैं जो आपके सौंदर्य और शिल्प के प्रति प्यार को दर्शाती हैं।

आपके घर के लिए सही जगह

हस्त नक्षत्र का स्थान राशि चक्र के कन्या राशि में है, जो पवित्रता, सादगी, और स्वच्छता का सूचक है। आप ऐसे घरों में रहना पसंद कर सकते हैं जो शांत और सुखद वातावरण में स्थित हों, जो उन्हें प्रकृति से जुड़ने की अनुमति देता है। आपको ऐसे घर भी पसंद हो सकते हैं जो सांस्तिक या आध्यात्मिक केंद्रों के करीब हों जो उन्हें प्रेरित करते हैं।

परिवार की रहन–सहन की व्यवस्था

आपके लिए पारिवारिक बंधन महत्वपूर्ण हो सकते हैं और आप अपने प्रियजनों के लिए जोशपूर्ण और स्वागत करने वाला माहौल बनाने में बहुत सतर्क रह सकते हैं। आप ऐसे निवास स्थलों की रचना में कुशल हो सकते हैं जो समानता और संतुलन को बढ़ावा देते हैं, जिससे आपके परिवार की कुशलता में वृद्धि हो सकती है।

घर की देखभाल

आप घर की देखभाल के प्रति सतर्क हो सकते हैं और अपनी संपत्तियों के संरक्षण में बहुत ध्यान दे सकते हैं। आप नियमित रूप से अपने घरों की सफाई, व्यवस्थापन, और मरम्मत में सक्रिय हो सकते हैं ताकि उनका सौंदर्यात्मक और कार्यात्मक मूल्य बना रहे।

घर में सुधार

आपका घर सुधार और नवीनीकरण परियोजनाओं की ओर प्राकृतिक झुकाव हो सकता है। आप अपने निवास स्थलों में ऐसे परिवर्तन करने में आनंद ले सकते हैं जो उनकी सुंदरता, कार्यक्षमता, और ऊर्जा को बढ़ाते हैं। आपके पास स्वयं की जाने वाली परियोजनाओं की प्रतिभा भी हो सकती है और आप अपने घरों के लिए दस्तकारी या हाथ से बनाई गई वस्तुओं से आनंद ले सकते हैं।

रियल एस्टेट में निवेश

आपकी अचल संपत्ति निवेश में उत्तम दृष्टि हो सकती है और आप उच्च संभावना वाली संपत्तियों की पहचान करने में सक्षम हो सकते हैं। आप ऐसे निवेश भी कर सकते हैं जो आपके व्यक्तिगत मूल्यों के अनुसार हों और ऐसी संपत्तियों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं जिनमें भावनात्मक संबंध हो।

किराए की संपत्तियां

आप अच्छे मकान मालिक हो सकते हैं और किराएदारों को सुव्यवस्थित, आकर्षक, और कार्यात्मक निवास स्थल प्रदान कर सकते हैं। आप अपने निवास स्थलों के साथ संगत किराएदारों की पहचान करने में सक्षम हो सकते हैं तथा एक समरसतापूर्ण निवास वातावरण बनाने पर ध्यान केंद्रित कर

सकते हैं।

अच्छे घर/मकान/निवास के लिए युक्तियाँ

(1). सादगी और स्वच्छता के तत्वों को शामिल करके समरसतापूर्ण एवं संतुलित निवास पर्यावरण बनाने पर ध्यान केंद्रित करें।

(2). घर की सजावट और डिजाइन के लिए बारीकियों पर ध्यान दें, और हाथ से बनाए गए, दस्तकारी वस्तुओं का चयन करें जो आपके परिष्कृत रुचि को दर्शाते हैं।

(3). अपने निवास स्थल के सौंदर्यात्मक और कार्यात्मक मूल्य को बरकरार रखने के लिए घर की देखभाल को प्राथमिकता दें।

(4). अपने निवास स्थल में प्राकृतिक तत्वों को शामिल करें, जैसे कि पौधे या प्राकृतिक सामग्री, प्रकृति से जुड़ने के लिए।

(5). अपने परिवार और प्रियजनों के लिए एक जोशपूर्ण और स्वागत करने वाला माहौल बनाने के लिए अपनी सुख-सुविधा व स्वास्थ्य को प्राथमिकता दें।

अच्छे घर/मकान/निवास के लिए उपाय

(1). विघ्नहर्ता, भगवान श्रीगणेश की पूजा करें, और समरसतापूर्ण और समृद्ध निवास पर्यावरण के लिए उनके आशीर्वाद की प्रार्थना करें।

(2). अपने घर में एक यंत्र या पवित्र ज्यामितीय प्रतीक, जैसे कि श्री यंत्र, स्थापित करें, जो सकारात्मक ऊर्जा और समृद्धि को आकर्षित करता है।

(3). नियमित वास्तु उपाय करें, जैसे कि घी या कपूर का एक दीपक जलाना, जो निवास स्थल को शुद्ध करता है और नकारात्मक ऊर्जाओं को दूर करता है।

(4). हस्त नक्षत्र मंत्र, ''ओम् आदित्याय सोमाय मंगलाय बुधाय च'' का जाप करें, जिससे आप इस नक्षत्र के सकारात्मक गुणों के साथ खुद को समायोजित कर सकते हैं और अपने घर में कल्याण को बढ़ावा दे सकते हैं।

(5). दान करें या करुणा और सहानुभूति के कार्य करें जिससे सकारात्मक कर्म बने और आपके घर में समृद्धि को आकर्षित करे।

ज्योतिषीय उपचार

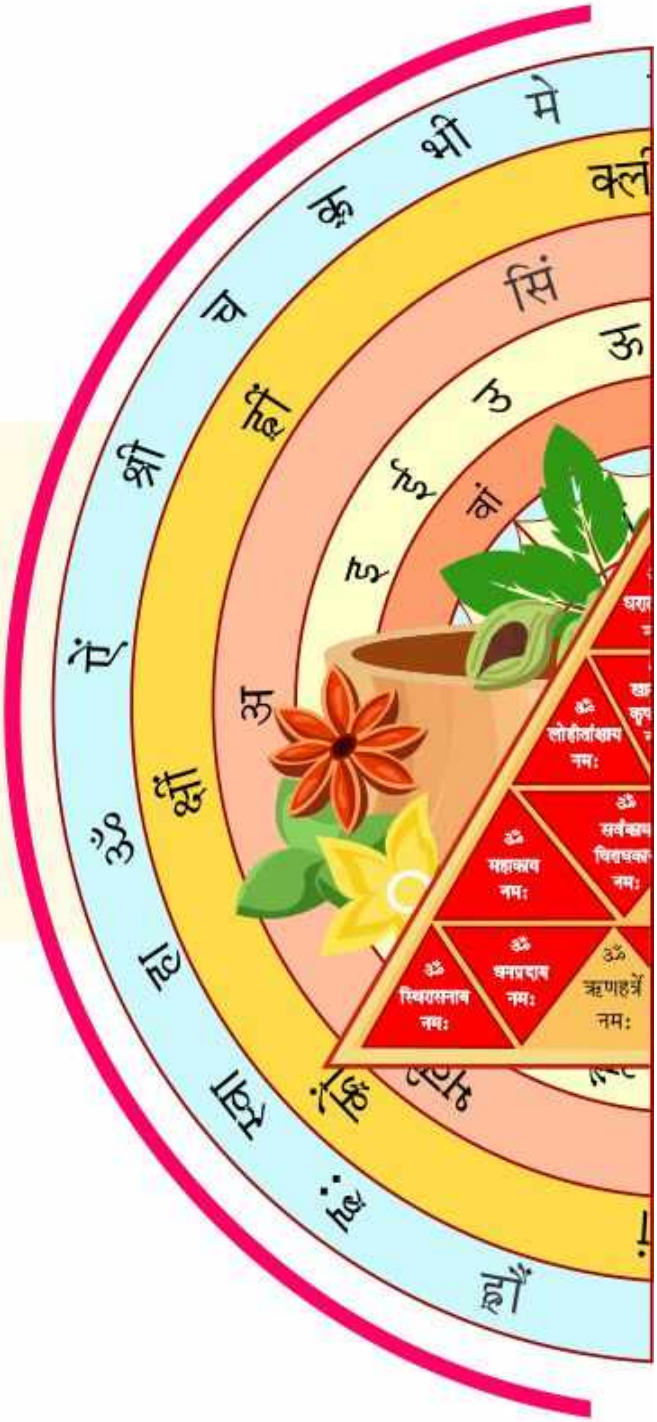

Name - Sample

Date - 18/12/1973 **Time - 01:45:00**

POB - Ballia (up), INDIA

Longitude - 084:10:00 E

Latitude - 025:45:00 N

MindSutra Software Technologies

www.mindsutra.com, www.webjyotishi.com

Contact - 9818193410, 9350247058

© Mindsutra's StarLight Premium 11

आपके लिए विस्तृत मार्गदर्शन

आप अपने विश्लेषणात्मक कौशल, विस्तार पर ध्यान देने और जीवन के लिए व्यावहारिक दृष्टिकोण के लिए जाने जाते हैं। सुबह की प्रार्थना और अनुष्ठानों में शामिल होने से आपकी ऊर्जा को संचालित करने और दिन के लिए एक सकारात्मक टोन सेट करने में मदद मिल सकती है। यहां आपके लिए कुछ सुझाई गई सुबह की प्रार्थनाएं और अनुष्ठान दिए गए हैं –

सुबह में क्या करें

1 ध्यान और प्राणायाम

मन को शांत करने और अपनी ऊर्जा को संतुलित करने के लिए अपने दिन की शुरुआत ध्यान और प्राणायाम जैसे अनुलोम-विलोम या भ्रामरी से करें।

2 सूर्य नमस्कार

सूर्य के प्रति आभार व्यक्त करने और शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक कल्याण में वृद्धि के लिए प्रतिदिन सूर्य नमस्कार का अभ्यास करें।

3 भगवान गणेश की पूजा करें

चूंकि बुध कन्या राशि का स्वामी ग्रह है, इसलिए बुध से जुड़े देवता भगवान गणेश की पूजा करने से स्पष्टता, ज्ञान और प्रयासों में सफलता मिल सकती है। गणेश अथर्वशीर्ष का पाठ करें या गणेश गायत्री मंत्र का जाप करें –

ओम एकदंताय विद्महे वक्रतुंडय धीमहि तन्नो दंती प्रचोदयात।।

4 नवग्रह स्तोत्रम

नवग्रह स्तोत्रम का पाठ नौ ग्रह देवताओं का आशीर्वाद लेने और ग्रहों के किसी भी बुरे प्रभाव को शांत करने के लिए करें।

5 भगवान गणेश की प्रार्थना

विघ्नहर्ता भगवान गणेश से प्रार्थना करें कि आपका दिन निर्विघ्न और सफल रहे –

वक्रतुंड महाकाय सूर्य कोटि समाप्रभा।
निर्विघ्नम कुरु मे देवा सर्व कार्येषु सर्वदा।।

6 भगवान विष्णु की पूजा करें

ज्ञान और जीविका के अवतार भगवान विष्णु की पूजा करने से आपको लाभ हो सकता है। विष्णु सहस्रनाम का पाठ करें या विष्णु गायत्री मंत्र का जाप करें –

ओम नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमही तन्नो विष्णु प्रचोदयात।।

7 योग का अभ्यास करें

शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक कल्याण में वृद्धि के लिए दैनिक योग अभ्यास करें। उत्तानासन, वीरभद्रासन, और पश्चिमोत्तानासन जैसे आसन आपके लिए विशेष रूप से फायदेमंद हो सकते हैं।

8 पवित्र ग्रंथों को पढ़ें या सुनें

दिव्य मार्गदर्शन और ज्ञान प्राप्त करने के लिए अपने दिन की शुरुआत भगवद गीता, उपनिषद या पतंजलि के योग सूत्र जैसे पवित्र ग्रंथों के अंशों को पढ़कर या सुनकर करें।

9 कृतज्ञता का अभ्यास करें

अपने जीवन में प्राप्त सभी आशीर्वादों के लिए ब्रह्मांड को धन्यवाद देते हुए कुछ क्षण .तज्ञता में बिताएं। इन सुबह की प्रार्थनाओं और अनुष्ठानों को अपनी दिनचर्या में शामिल करने से आपको व्यक्तिगत और आध्यात्मिक विकास के लिए अपने सहज गुणों का उपयोग करने में मदद मिल सकती है।

वेशभूषा और पहनावा

1 सरल और क्लासिक

आप ऐसे परिधानों की शैलियों को पसंद करते हैं जो सरल, क्लासिक और उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री से बने हों।

2 साफ–सुथरा और अच्छी तरह से सिलवाया गया

साफ–सुथरी रेखाओं वाले, अच्छी तरह से सिलवाए गए कट और सूक्ष्म विवरण वाले कपड़े चुनें जो आपके सावधानीपूर्वक और संगठित स्वभाव को दर्शाते हैं।

3 कार्यात्मक और व्यावहारिक

ऐसे कपड़े चुनें जो न केवल स्टाइलिश हों, बल्कि कार्यात्मक भी हों और आपकी दैनिक

गतिविधियों के लिए उपयुक्त हों।

रंग

1 हरा रंग

कन्या राशि का स्वामी ग्रह बुध है, इसलिए हरा रंग आपके लिए विशेष रूप से शुभ है। यह विकास, उपचार और दक्षता का प्रतिनिधित्व करता है।

2 भूरा

यह मटमैला और गहरा रंग भी आपके लिए अनुकूल हो सकता है, क्योंकि यह स्थिरता और व्यावहारिकता का प्रतीक है।

3 नेवी ब्लू

नेवी ब्लू आपके लिए संतुलन और व्यावसायिकता ला सकता है, जो बुध की बौद्धिक ऊर्जा से आपके संबंध को दर्शाता है।

4 तटस्थ रंग

अपने व्यावहारिक और विनम्र स्वभाव को दर्शाने के लिए बेज, ग्रे और सफेद जैसे तटस्थ रंगों को अपनाएं।

जीवन शैली

1 स्वास्थ्य और कुशलता

एक स्वस्थ जीवन शैली को बनाए रखने पर ध्यान दें, संतुलित आहार, नियमित व्यायाम और तनाव प्रबंधन तकनीकों को शामिल करें।

2 संगठन और दक्षता

अपने व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन के लिए एक संगठित और कुशल दृष्टिकोण विकसित करें, क्योंकि आप प्रायः विस्तार पर ध्यान देते हैं।

3 बौद्धिक खोज

बौद्धिक शौक या गतिविधियों में संलग्न रहें जो आपके विश्लेषणात्मक दिमाग और जिज्ञासा को उत्तेजित करते हैं, जैसे पढ़ना, पहेलियाँ सुलझाना, या नए कौशल सीखना।

सेवा और दूसरों की मदद करना

स्वयंसेवी कार्य या सामुदायिक भागीदारी में भाग लें, क्योंकि आपकी अक्सर सेवा करने और दूसरों की मदद करने की तीव्र इच्छा होती है।

आत्म–सुधार

लक्ष्य–निर्धारण, आत्मनिरीक्षण और अपने अनुभवों से सीखने के माध्यम से व्यक्तिगत विकास और आत्म–सुधार पर ध्यान दें।

ध्यान और सचेतन

अपने दिमाग को शांत करने और अपनी विश्लेषणात्मक ऊर्जा को संतुलित करने में मदद के लिए ध्यान और सचेतन किया का अभ्यास करें।

सरलता का सुख

साधारण सुखों को अपनाएं और रोजमर्रा की गतिविधियों में आनंद पाएं, जैसा कि आप अक्सर सादगी में सुंदरता की सराहना करते हैं।

क्या है कालसर्प योग ?

जब कुण्डली में सारे ग्रह राहु और केतु के अंशो के बीच में आ जाते हैं, तो कुण्डली को कालसर्प योग से ग्रसित माना जाता है। यदि एक भी ग्रह राहु और केतु के अंशो के बाहर रह जाता है, तो पूर्ण कालसर्प योग नहीं माना जाएगा। हालांकि, सारे ग्रह केतू और राहु के अंशों के बीच में आ जायें, तो भी आंशिक कालसर्प योग माना जाएगा।

कालसर्प योग का सामान्य प्रभाव–

1– किसी भी शुभ और महत्वपूर्ण कार्य को करते समय परेशानियों का सामना करना।
2– मानसिक तनाव।
3– आत्मविश्वास में कमी।
4– स्वास्थ्य संबंधी परेशानियां।
5– गरीबी और धन की कमी।
6– व्यापार में घाटा और नौकरी में परेशानी।
7– उत्तेजना और बेकार की चिंताएं।
8– मित्रों और शुभचिन्तकों से मनमुटाव।
9– मित्रों और शुभचिन्तकों की तरफ से विश्वासघात।
10– मित्रों, शुभचिन्तकों और रिश्तेदारों की ओर से किसी भी तरह का सहयोग नहीं प्राप्त होना।

आपकी कुण्डली में कालसर्प योग मौजूद नहीं है।

मांगलिक दोष (कुज दोष)

मांगलिक दोष (कुज दोष) निर्धारण के नियम

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजः।
मन्गलिक दोषवान्नारी पुंसां स्त्रीविनाशिनी।।

यदि कुण्डली में मंगल लग्न से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

यदि कुण्डली में मंगल चंद्रमा से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

यदि कुण्डली में मंगल शुक्र से पहले, चौथे, सातवें, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो तो मंगल दोष या कुज दोष का निर्माण होता है।

आपकी कुण्डली में मांगलिक दोष (कुज दोष)

आपकी कुण्डली में, मंगल लग्न से आठवीं राशि में स्थित है। आपकी कुण्डली में कुज दोष (या मांगलिक दोष) उपस्थित है।

आपकी कुण्डली में, मंगल चंद्र राशि से आठवीं राशि में स्थित है। आपकी कुण्डली में कुज दोष (या मांगलिक दोष) उपस्थित है।

आपकी कुण्डली में, मंगल शुक्र राशि से चौथी राशि में स्थित है। आपकी कुण्डली में कुज दोष (या मांगलिक दोष) उपस्थित है।

आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल शुक्र द्वारा अधिग्रहित राशि से चौथे भाव में स्थित है। यह आभासी रूप से कुज दोष (या मांगलिक दोष) का निर्माण करता है। लेकिन, चूंकि मंगल अपनी ही राशि में स्थित है, अतः यह एक अपवाद है– जैसाकि यह दोष स्वतः समाप्त हो जाता है। आपकी कुण्डली में कुज दोष तकनीकि रूप से अनुपस्थित माना जाएगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल चर राशि में स्थित है। कुछ लोगों के अनुसार यह एक अपवाद है, जहां पर कुज दोष को जांचने की कोई आवश्यकता ही नहीं है। आप मांगलिक दोष से मुक्त हैं– आप मंगली नहीं हैं। (हालांकि, इस विचार को बहुमत प्राप्त नहीं है।)

मांगलिक दोष (कुज दोष) का प्रभाव

मंगल दोष के प्रभाव से विवाह में देरी हो सकती है या विवाह होने में कई बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है। विवाह होने के बाद वर या वधू या दोनों को शारीरिक, मानसिक या आर्थिक रूप से कई परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। इसके प्रभाव से आपसी मतभेद/विवाद हो सकते हैं, एक–दूसरे पर दोषारोपण कर सकती हैं तथा तलाक की भी नौबत आ सकती है। दोष का प्रभाव अधिक होने की स्थिति में विवाहित दम्पत्ति में से किसी की या दोनों की सेहत अक्सर खराब रह सकती है या अकाल मृत्यु के भी शिकार हो सकते हैं।

मांगलिक दोष (कुज दोष) का उपाय

मंगल दोष को दूर करने के लिए वैदिक ज्योतिष से निम्न उपाय करें :–

मंगलवार (सूर्योदय से अगले दिन सूर्योदय तक) को उपवास करें। दिन के दौरान नमक का सेवन ना करें और यदि संभव हो, तो केवल तरल पदार्थों जैसे, चाय, कॉफी, दूध फलों का रस एवं दही आदि का ही सेवन करें। शाम के समय रोली से किसी थाली में एक त्रिकोण बनायें एवं पंचोपचार (लाल चंदन, लाल फल, धूप, दीपक एवं भोज्य पदार्थ) से पूजा करें। उसके बाद सूर्यास्त से पहले

गेहूं के आटे की रोटी, घी एवं गुड़ का सेवन करें।

मंगल दोष का प्रभाव अधिक होने की स्थिति में लगातार 108 दिनों तक रोज 21 बार मंगल चंडिका स्त्रोत का पाठ करें। सुबह में पूर्वाभिमुख बैठकर पंचमुखी दीपक जलायें एवं अपने इष्ट देव तथा मंगल की पंचोपचार से पूजा करें और निम्नलिखित मंत्र का जाप करें।

रक्ष रक्ष जगन्मातर्देवि मंगलचंडिके । हारिके विपदां राशे हर्षमंगलकारिके ।।
हर्षमंगलदक्षे च हर्षमंगलदायिके । शुभे मंगलदक्षे च शुभे मंगलचंडिके ।।
मंगले मंगलार्हे च सर्वमंगलमंगले । सदा मंगलदे देवि सर्वेषां मंगलालये ।।

केमुद्रुम योग

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः सोमाय नमः। (11000 बार)

दधिशंखतुशाराभं क्षीरोदोर्णवसभवम् नवमि्।
भाशिनं भवत्या भाम्भोर्मुकुटभुशणम्।।

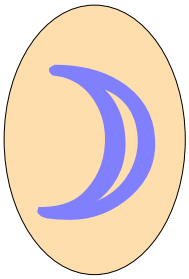

क्या है केमुद्रुम योग ?

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा के पहले और आगे वाले भाव में कोई ग्रह नहीं है, इस स्थिति में चन्द्रमा की स्थिति बहुत कमजोर मानी जाती है और केमुद्रम योग का निर्माण होता है। अक्सर ऐसे लोग निराश, अवसाद, अकेलेपन के शिकार रहते हैं – आत्मविश्वास की बहुत कमी पाई जाती है, समाज में आगे बढ़कर कोई काम नहीं कर पाते – मेहनत करने के बावजूद – मेहनत का फल नहीं मिलता। आपकी कुण्डली में चन्द्रमा अपने भाव में अकेला है, आपकी स्थिति और भी संघर्षमय हे जाती है, परन्तु आपके कर्मों के माध्यम से इस योग के दुष्प्राभाव से मुक्ति मिल सकती है।

उपाय क्या करें ?

(1) रुद्राष्टक का निरन्तर जप करें।
(2) सुबह केसर और दूध का सेवन करें।
(3) पंचामृत से भगवान शिव का अभिषेक करें।
(4) चांद की रौशनी में सफेद वस्त्र पहन कर गायत्री मंत्र का जाप करें।
(5) रात को सोते समय सफेद चंदन का लेप करें।
(6) अपनी मां से और सभी मां जैसी व्यक्ति से आर्शीवाद लेते रहे।
(7) विधवा औरतो की यथासंभव सहायता करते रहे।
(8) गरीब लोगों को दूध का दान करें।

सूर्य ग्रह का उपाय

ज्योतिष शास्त्र में सूर्य ग्रह को ग्रहों का राजा माना जाता है। जीवन में मान–सम्मान, नौकरी और समृद्धिशाली जीवन जीने के लिए सूर्य देव की कृपा जरूरी होती है और उनका आशीर्वाद पाने के लिए सूर्य ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ सूर्याय नमः

Every morning, one should offer water to the Sun and chant this mantra.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः

Om hraam hreem hroum sah suryaya namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ घृणिः सूर्याय नमः

Om Ghrinih Suryaya Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ भास्कराय विद्महे महातेजाय धीमहि ।
तन्नोः सूर्यः प्रचोदयात ।।

Om Bhaskaraya Vidmahe Mahatejaya Dhimahi,
Tanno Suryah Prachodayat.

व्रत और उपवास

सूर्य के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए सूर्य के गोचर, महादशा या अंतर्दशा के दौरान रविवार का व्रत (उपवास) रखना चाहिए। व्रत (उपवास) की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले रविवार से करना चाहिए। यह व्रत (उपवास) कम से कम 12 और अधिकतम 30 रविवार को रखना चाहिए। व्रत (उपवास) के दौरान खाने में गेहूँ के आटे की चपाती, गुड़, हलवा, घी का उपयोग करना चाहिए। नमक का प्रयोग बिल्कुल ना करें। खाना सूर्यास्त से पहले खाना चाहिए। यदि आप लाल कपड़ा पहन कर एवं अपने ललाट पर लाल चंदन का लेप लगाकर सूर्य के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 5 माला (540) जप करें तो व्रत (उपवास) का फल अधिक लाभदायक होगा। अंत में हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं ब्राह्मणों को यथाशक्ति अन्न, धन एवं भोजन का दान करें।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

सूर्य के लिए बेल की जड़ या बेंत की जड़ गुलाबी रंग के कपड़े में सिलकर रविवार या कृतिका, उत्तराफाल्गुनी अथवा उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में सूर्योदय के समय अपने गले, भुजा, जेब या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

स्नान और दान

आप रविवार के दिन सुबह में गेहूँ, साबुत मसूर, गुड़, तांबे की कोई वस्तु एवं लाल फूल का दान करें। आप अपने स्नान के जल में केसर या इलायची पीसकर या इसका इत्र डालें।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– खस, मधु, नागरमोथा, अमलतास, छोटी इलायची।
जड़ी– बेल मूल एवं कमल बेंत की जड़।

चन्द्रमा ग्रह का उपाय

कुंडली में चंद्र दोष होने से कलह, मानसिक विकार, माता-पिता की बीमारी, दुर्बलता, धन की कमी जैसी समस्याएं सामने आती हैं। चंद्रमा मन का कारक ग्रह होता है। कुंडली में चंद्र को मजबूत बनाने के लिए चंद्र ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ॐ सोमाय नमः

This mantra should be chanted every Monday while sitting in front of a Shivalinga.

तान्त्रिक मंत्र

ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः सोमाय नमः

Om shraam shreem shraum sah chandramase namah.

बीज मंत्र 2

ॐ सों सोमाय नमः

Om Som Somaya Namah.

गायत्री मंत्र

ॐ क्षीरपुत्राय विद्‌महे मृतात्वाय धीमहि ।
तन्नोः चंद्रः प्रचोदयात ।।

Om Ksheeraputraya Vidmahe Mritatvaya Dhimahi,
Tannam Chandrah Prachodayat.

व्रत और उपवास

चंद्रमा के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए सोमवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले सोमवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 10 और अधिकतम 54 सोमवार को रखनी चाहिए। व्रत तोड़ने से पहले आपको सफेद कपड़े पहनना चाहिए एवं अपने ललाट पर सफेद चंदन का लेप लगाना चाहिए। चंद्रमा को सफेद फूल अर्पित करें और चंद्राम के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 11 माला का जप करें। अपने खाने में नमक, दही, चावल, घी एवं गुड़ का प्रयोग ना करें। अंतिम सोमवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं गरीबों के बीच खाना वितरित करें।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

चंद्रमा के लिए खिरनी की जड़ को सफेद रंग के कपड़े में सिलकर सोमवार या रोहिणी, हस्त या श्रवण नक्षत्र में पूर्णिमा की रात में गले, जेब, भुजा या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

स्नान और दान

चंद्रमा के लिए शुद्ध देशी घी से भरकर नया बर्तन, सफेद वस्त्र, गन्ना, दूध, चावल, चांदी, शंख, कपूर, छोटी इलायची, चीनी, चंदन, कांसे का बर्तन इत्यादि का दान करना चाहिए। नहाते समय नहाने के पानी में थोड़ा सा दूध या दही डालकर नहाने से चंद्रमा प्रसन्न होते हैं।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ-साथ आस-पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी-बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री- लाल चंदन, कपूर, अगर, तगर, केसर, गोरोचन।
जड़ी - खिरनी की जड़।

मंगल ग्रह का उपाय

मंगल साहस और पराक्रम का कारक ग्रह है। कुंडली में मंगल के कमजोर होने पर उसके साहस और ऊर्जा में निरंतर कमी रहती है। मंगल को मजबूत करने के लिए मंगल ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ भौमाय नमः

This mantra is chanted for the planet Mars. It should be chanted on Tuesdays.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः

Om kraam kreem kraum sah bhaumaaya namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ अंगारकाय नमः

Om Om Angarakaya Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ अंगारकाय विद्‌महे वाणेशाय धीमहि ।
तन्नोः भौम प्रचोदयात ।।

Om Angarakaya Vidmahe Vaneshaya Dhimahi,
Tanno Bhaumah Prachodayat.

व्रत और उपवास

मंगल के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए मंगलवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले मंगलवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 और अधिकतम 45 मंगलवार रखनी चाहिए। अगर संभव हो तो आप पूरी जीन्दगी भी इस व्रत को रख सकते हैं। व्रत के दिन केवल गुड़ का हलवा खाना बेहतर होगा। आप अपनी शक्ति के अनुसार गरीबों के बीच भी हलवा वितरित कर सकते हैं। व्रत तोड़ने से पहले आपको लाल कपड़ा पहनना चाहिए और मंगल के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का अपने उपलब्ध समयानुसार 1, 5 या 7 माला का जप करना चाहिए। सांड़ को गुड़ खिलाना चाहिए। इस व्रत को रखने से आप ऋणमुक्त होंगे, संतान की प्राप्ति होगी एवं अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। अंतिम मंगलवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं लाल कपड़ा, तांबा, गुड़ एवं नारियल गरीबों के बीच दान करें।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

मंगल के लिए अनन्त मूल या नागफनी (गो जिव्हा संगमुसी नाग जिव्हा) की जड़ को लाल रंग के कपड़े में सिलकर मंगलवार या मृगशिरा, चित्रा या घनिष्ठा नक्षत्र में सूर्योदय के समय गले, जेब, भुजा या कमर में सुविधानुसार धारण करें।

स्नान और दान

लाल फूल, लाल चंदन, घी, गेहूँ, मसूर, या ताम्बे के बर्तन में सुपारी भरकर दान करने से मंगल प्रसन्न होते हैं। मंगल की प्रसन्नता वं लिए स्नान करते समय जल में बेलपत्र या लाल चंदन डालकर स्नान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– सोंठ, चमेली का तेल, कुमकुम।
जड़ी– सौंफ की जड़, नाग जिव्हा, अनन्त मूल।

बुध ग्रह का उपाय

जीवन में तरक्की और प्रसिद्धि पाने के लिए कुंडली में बुध का मजबूत होना आवश्यक है। बौद्धिक नजरिए से सबसे प्रबल ग्रह होता है। कुंडली में बुध ग्रह को मजबूत करने के लिए बुध ग्रह के बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ॐ बुधाय नमः

This mantra should be chanted every Wednesday. You can chant it in Lord Ganesha's temple.

तान्त्रिक मंत्र

ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः

Om braam breem braum sah budhaaya namah.

बीज मंत्र 2

ॐ बुं बुधाय नमः

Om Bum Budhaya Namah.

गायत्री मंत्र

ॐ सौम्यरुपाय विद्‌महे वाणेशाय धीमहि ।
तन्नोः बुधः प्रचोदयात ।।

Om Saumyarupaya Vidmahe Vaneshaya Dhimahi,
Tanno Budhah Prachodayat.

व्रत और उपवास

बुध के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए बुधवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले बुधवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 और अधिकतम 45 बुधवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको हरे रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और बुध के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 17 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद मूंग दाल के आटे का हलवा या लड्डू या गुड़ से बनी कोई चीज गरीबों में बांटें और खुद भी खायें। व्रत के अंतिम बुधवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें। इस व्रत से आप शैक्षणिक क्षेत्र या व्यावसायिक मामलों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। ऐसा माना जाता है कि अमावस्या के दिन व्रत रखने से बुध ग्रह अनुकूल हो जाता है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

बुध के लिए विधारा की जड़ या भारंगी की जड़ (बिदायरे जड़ या वर धारा जड़) को हरे वस्त्र में सिलकर बुधवार या आश्लेषा, ज्येष्ठा या रेवती नक्षत्र में सुबह के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

आपको स्नान के जल में साबुत चावल या सोने का कोई आभूषण डालकर स्नान करना चाहिए। बुध की प्रसन्नता के लिए चांदी या हाथी दांत से बनी कोई वस्तु, नीला कपड़ा, घी या मूंग दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– विधारा मूल, देवदार की जड़, सफेद सरसों।
जड़ी– भारंगी की जड़।

गुरू ग्रह का उपाय

वैवाहिक जीवन से जुड़ी समस्याओं के लिए इस मंत्र का जप करना चाहिए। कुंडली में बृहस्पति के शुभ प्रभाव से धन लाभ, सुख–सुविधा, सौभाग्य, लंबी आयु आदि मिलता है। कुंडली में देवगुरु बृहस्पति की मजबूती के लिए जातकों को गुरु बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ बृहस्पतये नमः

This mantra should be chanted while sitting in front of a Shivalinga. It should be chanted ever Thursday.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरुवे नमः

Om graam greem graum sah gurave namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ ब्रं बृहस्पतये नमः

Om Bram Brihaspataye

गायत्री मंत्र

ऊँ गुरुदेवाय विद्‌महे वाणेशाय धीमहि ।
तन्नोः गुरुः प्रचोदयात ।।

Om Gurudevaya Vidmahe Vaneshaya Dhimahi,
Tanno Guru Prachodayat.

व्रत और उपवास

बृहस्पति के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए गुरुवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले गुरुवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 गुरुवार और अधिकतम 3 साल तक प्रत्येक गुरुवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको पीले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और बृहस्पति के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 11 माला का जप करना चाहिए। बृहस्पति को पीले फूल अर्पित करना चाहिए। इस दिन केवल बेसन के लड्डू (गुड़ से बना) या केसरिया या पीला रंग लिए मीठा चावल गरीबों के बीच बांटना चाहिए एवं खुद भी खाना चाहिए। व्रत के अंतिम गुरुवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें एवं गरीब ब्राह्मणों के बीच भोजन (पीला रंग लिए खाना) बांटें। इस व्रत को करने से आप बुद्धिमान, विद्वान एवं धनवान होंगे। अगर कोई अविवाहित कन्या इस व्रत को करे तो जल्द शादी की संभावना होती है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

बृहस्पति के लिए हल्दी की गांठ या केले की जड़ को पीले कपड़े में सिलकर बृहस्पतिवार या पुनर्वसु, विशाखा या पूर्व भाद्रपद नक्षत्र में शाम के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में बड़ी इलायची, पीली सरसों के दाने डालकर स्नान करने से बृहस्पति जनित दोषों का निवारण होता है। बृहस्पति की प्रसन्नता के लिए हल्दी, पीला कपड़ा, पीला अन्न, नमक, मेंहदी या नींबू का दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– हल्दी, सूखा गुलाब।
जड़ी– केले की जड़।

शुक्र ग्रह का उपाय

कुंडली में शुक्र ग्रह के मजबूत होने पर सभी तरह के ऐशो–आराम की सुविधा मिलती है और इसे मजबूत करने के लिए जातकों को शुक्र बीज मंत्र का जाप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ शुक्राय नमः

This mantra should be chanted every Friday while sitting in front of a Shivalinga.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ द्रां द्रीं द्रौम सः शुक्राय नमः

Om draam dreem draum sah shukraaya namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ शुं शुक्राय नमः

Om Shum Shukraya Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ भृगुसुताय विद्‌महे दिव्यदेहाय धीमहि ।
तन्नोः शुक्रः प्रचोदयात ।।

Om Bhargusutaya Vidmahe Divyadehaya Dhimahi,
Tanno Shukrah Prachodayat.

व्रत और उपवास

शु क्र के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शुक्रवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शुक्रवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 21 गुरुवार और अधिकतम 31 शुक्रवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको सफेद रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शुक्र के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 21 माला का जप करना चाहिए। व्रत के दिन मीठा चावल या दूध से बना पदार्थ खुद खाना चाहिए एवं एक आंख वाले आदमी या सफेद गाय को खिलाना चाहिए। व्रत के अंतिम शुक्रवार को हवन के साथ पूर्णाहूति करें। इसके बाद चांदी, सफेद कपड़े, खीर आदि गरीबों के बीच दान करना चाहिए। इस व्रत को करने से शुक्र अनुकूल होगा और आपको आर्थिक लाभ हो सकता है तथा आपका वैवाहिक जीवन खुशहाल होगा।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

शुक्र ग्रह के लिए अनार, सरपोंखा या अरण्ड मूल की जड़ को सफेद कपड़े में सिलकर शुक्रवार या भरणी, पूर्व फाल्गुनी या उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में दोपहर के समय अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में छोटी इलायची, नींबू का रस अथवा इत्र मिलाकर स्नान करने से शुक्र प्रसन्न होते हैं। शुक्र के लिए बासमती चावल, घी, चांदी, सफेद वस्त्र, सफेद चंदन, कपूर, धूप और अगरबत्ती, इत्र और रेशमी वस्त्र का यथाशक्ति दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– सरपोखों, अनार की जड़, सूखे आंवले।
जड़ी– अरंडे की जड़।

शनि ग्रह का उपाय

ज्योतिष में शनि देव को कर्म फलदाता के नाम से जाना जाता है। यदि कुंडली में शनि ग्रह भारी होता है तो जिंदगी में परेशानियां बनी रहती हैं। इन परेशानियों को दूर करने के लिए शनि बीज मंत्र का जाप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ शनैश्चराय नमः

Every Saturday, sit in front of Lord Shani and chant this mantra.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ प्रां प्रीं प्रोम सः शनै नमः

Om praam preem praum sah shanaishcharaaya

बीज मंत्र 2

ऊँ शं शनैश्चराय नमः

Om Sham Shanaischaraya

गायत्री मंत्र

ऊँ शिरोरुपाय विद्महे मृत्युरुपाय धीमहि ।
तन्नोः सौरिः प्रचोदयात ।।

Om Shirorupaya Vidmahe Mrityurupaya Dhimahi,
Tanno Saurih Prachodayat.

व्रत और उपवास

शनि के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 19 माला का जप करना चाहिए। उसके बाद साफ पानी, काले तिल का बीज, काला या नीला फूल, लौंग, गंगाजल, चीनी एवं दूध एक बर्तन में लेकर पूर्वाभिमुख होकर पीपल की जड़ में डालें। इस दिन केवल उड़द दाल एव तेल से बनी कोई भोज्य सामग्री खानी चाहिए एवं दान करनी चाहिए। व्रत के अंतिम दिन हवन के साथ पूर्णाहूति करें और तेल से बनी कोई चीज, काला कपड़ा, चमड़े का जूता आदि दान करना चाहिए। इस व्रत को करने से आपको झगड़े एवं वाद–विवाद में सफलता प्राप्त होगी। फैक्ट्री मालिक एवं लोहे या स्टील का कारोबार करने वालों को काफी सफलता प्राप्त होगी।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

शनि के लिए बिछुआ की जड़ नीले कपड़े में सिलकर शनिवार या पुष्य, अनुराधा या उत्तर भाद्रपद नक्षत्र में दोपहर के समय अपने गले, जेब, भुजा या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में धान का छिलका, जड़ सहित दूब अथवा काला तिल डालकर स्नान करने से शनि जनित दोषों का नाश होता है। शनि की प्रसन्नता के लिए बड़ी ईलायची, जायफल, लौंग, काला या नीला कपड़ा, मोटे अनाज, काली तिल, लोहे का सामान, गूगल और साबूत उड़द का अपनी शक्ति अनुसार दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– काला तिल, काला उड़द, बिछुआ की जड़।
जड़ी– धतुरे की जड़।

राहु ग्रह का उपाय

राहु एक छाया ग्रह है। तनाव को कम करने के लिए राहु मंत्र का जप करना चाहिए। कुंडली में यदि राहु अशुभ स्थिति में है, तो व्यक्ति को आसानी से सफलता नहीं मिलती है। राहु को मजबूत करने के लिए राहु बीज मंत्र का जप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ राहवे नमः

Every Saturday, chant the mantras for these planets. Chant the mantras while sitting in front of Lord Shani's idol.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः

Om bhraam bhreem bhraum sah rahave namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ रां राहुवे नमः

Om Ram Rahuve Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ शिरोरुपाय विद्‌महे अमृतेशाय धीमहि ।
तन्नोः राहुः प्रचोदयात ।।

Om Shirorupaya Vidmahe Amriteshaya Dhimahi,
Tanno Rahu Prachodayat.

व्रत और उपवास

राहु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 18 शनिवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 18 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद जल, हरी घास एवं कुश एक बर्तन में लेकर पीपल की जड़ में डालना चाहिए। इस दिन केवल मीठी चपाती खुद भी खानी चाहिए एवं दान भी करनी चाहिए। रात में पीपल की जड़ में दीपक जलाना चाहिए। इस व्रत को करने से शत्रुओं पर विजय, सरकार से सहयोग एवं राहु–केतु जनित रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

राहु के लिए मलय चंदन की जड़ की माला बुधवार या शनिवार या आर्द्रा, स्वाति या शतभिषा नक्षत्र में शाम 4 बजे के आस–पास अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में कुश या सरकण्डा, नीम के पत्ते या फल, नागरमोथा आदि डालकर स्नान करने से राहु जनित दोषों का निवारण होता है। राहु की प्रसन्नता के लिए ऊन का कपड़ा, जटादार पानी वाला नारियल, कम्बल एवं पेठा बांस की टोकरी में धातु का बना सर्प रखकर दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– चंदन की लकड़ी।
जड़ी– अष्टगन्ध मूल।

केतु ग्रह का उपाय

केतु एक छाया ग्रह ग्रह है, जिसका अपना कोई वास्तविक रूप नहीं है। यदि कुंडली में केतु की स्थिति कमजोर होती है तो यह जिंदगी को बदतर बना देता है। जीवन में कलह बना रहता है। ऐसे में कलह से बचने के लिए इस केतु बीज मंत्र का जाप करना चाहिए।

बीज मंत्र 1

ऊँ केतवे नमः

Every Saturday, chant the mantras for these planets. Chant the mantras while sitting in front of Lord Shani's idol.

तान्त्रिक मंत्र

ऊँ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः

Om sraam sreem sraum sah ketave namah.

बीज मंत्र 2

ऊँ के केतवे नमः

Om Ke Ketave Namah.

गायत्री मंत्र

ऊँ गदाहस्ताय विद्महे अमृतेशाय धीमहि ।
तन्नोः केतुः प्रचोदयात ।।

Om Gadahastaya Vidmahe Amriteshaya Dhimahi,
Tanno Ketu Prachodayat.

व्रत और उपवास

केतु के अशुभ प्रभाव को कम करने के लिए शनिवार का व्रत रखना चाहिए। व्रत की शुरूआत ज्येष्ठ मास में शुक्ल पक्ष के पहले शनिवार से करनी चाहिए। यह व्रत कम से कम 18 शनिवार को रखनी चाहिए। व्रत के दिन स्नान के बाद आपको काले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए और शनि के बीज मंत्र या तांत्रिक मंत्र का 3 या 18 माला का जप करना चाहिए। इसके बाद जल, हरी घास एवं कुश एक बर्तन में लेकर पीपल की जड़ में डालना चाहिए। इस दिन केवल मीठी चपाती खुद भी खानी चाहिए एवं दान भी करनी चाहिए। रात में पीपल की जड़ में दीपक जलाना चाहिए। इस व्रत को करने से शत्रुओं पर विजय, सरकार से सहयोग एवं राहु–केतु जनित रोगों से मुक्ति प्राप्त होती है।

जड़ों का प्रयोग

जड़ों को ग्रह से संबंधित दिन में किसी शुभ मुहुर्त में उखाड़ कर लायें। किसी भी जड़ को उखाड़ने से पहले शाम में उसे विधिवत धूप जलाकर एवं जड़ में जल डालकर निमंत्रित करें, फिर अगले दिन सूर्योदय से पहले बिना किसी औजार के उखाड़ें। जड़ को किसी औजार से काटना नहीं चाहिए।

केतु के लिए असगन्ध की जड़ को काले या पीले कपड़े में सिलकर बृहस्पतिवार या अश्विनी, मघा या मूल नक्षत्र में अपने गले, भुजा, जेब या कमर में धारण करें।

स्नान और दान

स्नान करते समय जल में कुश या सरकण्डा, नीम के पत्ते या फल, नागरमोथा एवं खुशबुदार इत्र आदि डालकर स्नान करें। केतु की प्रसन्नता के लिए रंग–बिरंगे कम्बल, कस्तूरी, बिस्तर, मुँह देखने का शीशा, साबुत उड़द, लाल अनार आदि को बांस की टोकरी में रखकर दान करना चाहिए।

हवन

अनिष्ट ग्रहों के कुफल को शांत करने के लिए हवन एक महत्वपूर्ण माध्यम है। हवन में प्रयुक्त सामग्री काफी लाभदायक होती है। इनसे ग्रह शांति के साथ–साथ आस–पास का वातावरण भी पवित्र होता है। हवन सामग्री में कई तरह की जड़ी–बूटियां मिली होती है, जिनसे इसका भस्म भी काफी लाभदायक हो जाता है और कुछ रोगों को समूल नष्ट भी कर सकता है।

सामग्री– सात अनाज (उड़द, मूंग, गेहूँ चना, जौ, चावल, कंगनी)।
जड़ी– वट वृक्ष की जड़।

आपको किस देवता की पूजा करना

लग्न देवता	इष्ट देवता
लग्नेश पर आधारित	पंचमेश पर आधारित
गणेश जी	शनि देव
ॐ गं गणपतये नमः	ॐ शं शनैश्चराय नमः

यदि आप लग्न देवता और इष्ट देवता के बीज मंत्रों का जाप करते हैं और उनके संबंधित दिन पर व्रत रखते हैं, तो आपके जीवन की हर समस्या का समाधान स्वतः ही आपके समक्ष आ जाएगा और जीवन में सफलता के द्वार खुलते जाएंगे।

आपको किस ग्रह के मंत्र का जाप करना चाहिए?

लग्नाधिपति	पंचमेश	दशाधिपति	भुक्ति अधिपति
बुध	शनि	शनि	बुध
ॐ बुं बुधाय नमः	ॐ शं शनैश्चराय नमः	ॐ शं शनैश्चराय नमः	ॐ बुं बुधाय नमः

यदि आप लग्नेश के बीज मंत्र का जाप करते हैं तो आपका स्वास्थ्य सदैव उत्तम रहेगा क्योंकि लग्नेश को स्वास्थ्य का कारक माना जाता है। 5वें घर के अधिपति को इष्ट ग्रह कहा जाता है, यदि आप इष्ट ग्रह के बीज मंत्र का जाप करते हैं तो आपका बुद्धि और बल बढ़ेगा, अपने बुद्धि और बल के माध्यम से आप अपने सारे कार्य सम्पन्न कर सकते हैं। जिस ग्रह की महादशा चल रही है, उसके मंत्र से सकारात्मक परिणाम मिलेंगे। जिस ग्रह की अंतर्दशा चल रही है, उसके मंत्र से वर्तमान समय की घटनाएं सकारात्मक होंगी।

आपको किस ग्रह का दान करना चाहिए?

ग्रह का दान	मंगल कुंडली में तीसरे और आठवें भाव का स्वामी होकर प्रबल अशुभ ग्रह बन जाता है।
मंगल	

सप्ताह के उस दिन उस ग्रह से संबंधित दान करें, जैसे मंगलवार को मंगल, शनिवार को शनि और गुरुवार को बृहस्पति। दान की सूची से, आप प्रति सप्ताह 50 रुपये तक कोई भी एक वस्तु दान कर सकते हैं। किसी गरीब या जरूरतमंद व्यक्ति को दान दें।

अशुभ ग्रहों से संबंधित दान करने से हमारे ऊपर पड़ने वाले उनके नकारात्मक प्रभाव समाप्त हो जाते हैं। परिणामस्वरूप अशुभ ग्रह अपनी दशा या अन्तर्दशा में हमें बुरा फल नहीं देते, और यदि हम दान करने के साथ-साथ उन ग्रहों के बीज मंत्रों का जाप भी कर रहे हैं तो उस अशुभ ग्रह के परिणाम भी सकारात्मक ही आएंगे।

यदि आप किसी दिन बीज मंत्र का जाप करना भूल जाते हैं तो आप अगले दिन उसकी पूर्ति कर सकते हैं, उदाहरण के लिए अगले दिन 2 माला जाप करें। यदि अंतर अधिक हो तो एक माला अतिरिक्त जप कर बीज मंत्रों को पूरा करें।

आप किसी भी मंत्र में महारत हासिल कर सकते हैं। इसके बाद आपको सप्ताह के उस दिन संबंधित ग्रह के बीज मंत्र का जाप करना चाहिए, उदाहरण के लिए, यदि आपने बुध के बीज मंत्र में महारत हासिल कर ली है, तो आपको इसमें महारत हासिल करने के बाद हर बुधवार को मंत्र की एक माला का जाप करना चाहिए। इससे इसकी ऊर्जा बनी रहेगी।

वैदिक उपाय

वैदिक ज्योतिष, लाल किताब और कार्मिक प्रथाओं से नक्षत्र स्वामी पर आधारित उपचार हमें ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं के साथ संरेखित करने में मदद करते हैं, जिससे हमारे जीवन के प्रति दृष्टिकोण में सुधार होता है। ये अनुरूप उपाय नकारात्मक प्रभावों को कम करते हैं, सकारात्मकता को बढ़ाते हैं और हमें ग्रहों की ऊर्जा को संतुलित करने के लिए सशक्त बनाते हैं। अंततः, वे व्यक्तियों को अपने भाग्य को संचालित करने की अनुमति देकर आत्म–जागरूकता, सद्भाव और संतुष्टि को बढ़ावा देते हैं।

आपका नक्षत्र
हस्ता (2)

नक्षत्राधिपति
चन्द्रमा

इन वैदिक उपायों को अपनायें

(1). चंद्रमा का रत्न मोती है। ऐसा माना जाता है कि इसका शांत प्रभाव पड़ता है और यह भावनात्मक संतुलन बनाए रखने और समग्र कल्याण को बढ़ाने में मदद कर सकता है। आप अपनी छोटी उंगली पर चांदी में जड़ा हुआ उच्च गुणवत्ता वाला मोती पहन सकते हैं।

(2). सूर्य के लिए सूर्य नमस्कार की तरह, चंद्र नमस्कार मन और शरीर को शांत करने के लिए फायदेमंद योग मुद्राओं का एक क्रम है। इसका अभ्यास शाम को चांदनी के नीचे सबसे अच्छा होता है। चंद्र नमस्कार करते समय लाभ बढ़ाने के लिए 'ओम सोम सोमाय नमः' मंत्र का जाप किया जा सकता है।

(3). सोमवार का व्रत करने से आपके स्वास्थ्य पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है क्योंकि यह दिन चंद्रमा से जुड़ा होता है।

(4). चावल का दान करना, विशेषकर सोमवार के दिन, लाभकारी होता है क्योंकि चावल का संबंध चंद्रमा से होता है।

(5). चंद्रमा से संबंधित रंग सफेद है, जो शीतलता और शांति का प्रतीक है। विशेष रूप से सोमवार के दिन सफेद कपड़े पहनने से सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

(6). चंद्र यंत्र की पूजा करें, जो चंद्रमा से जुड़ा एक शक्तिशाली चित्र है। इसे अपने घर या कार्यस्थल पर स्थापित किया जा सकता है तथा सफेद फूलों और धूप से इसकी पूजा की जा सकती है।

(7). सोमवार के दिन दुर्गा चालीसा का पाठ करें। चंद्रमा को दुर्गा का भक्त माना जाता है, ऐसे में उनकी चालीसा का पाठ करना लाभकारी हो सकता है।

(8). चांदनी के नीचे ध्यान करने से, विशेष रूप से पूर्णिमा के दौरान, मन और शरीर पर सुखद प्रभाव पड़ सकता है, जिससे समग्र स्वास्थ्य में मदद मिलती है।

लाल किताब के उपाय

वैदिक ज्योतिष, लाल किताब और कार्मिक प्रथाओं से नक्षत्र स्वामी पर आधारित उपचार हमें ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं के साथ संरेखित करने में मदद करते हैं, जिससे हमारे जीवन के प्रति दृष्टिकोण में सुधार होता है। ये अनुरूप उपाय नकारात्मक प्रभावों को कम करते हैं, सकारात्मकता को बढ़ाते हैं और हमें ग्रहों की ऊर्जा को संतुलित करने के लिए सशक्त बनाते हैं। अंततः, वे व्यक्तियों को अपने भाग्य को संचालित करने की अनुमति देकर आत्म–जागरूकता, सद्भाव और संतुष्टि को बढ़ावा देते हैं।

आपका नक्षत्र
हस्ता (2)

नक्षत्राधिपति
चन्द्रमा

इन लाल किताब के उपायों को अपनायें

(1). लाल किताब के अनुसार चांदी पहनने से आपके जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है, क्योंकि इस धातु का संबंध चंद्रमा से होता है।

(2). चंद्रमा से संबंधित समस्याओं को कम करने के लिए एक सरल उपाय यह है कि बहते पानी, जैसे नदी, में सवा किलो चावल प्रवाहित करें।

(3). सोमवार के दिन गाय को हरा चारा या घास खिलाने से लाभ हो सकता है।

(4). लाल किताब के अनुसार, महिलाओं, विशेषकर अपने परिवार की महिलाओं का आदर और सम्मान करना सकारात्मक प्रभाव ला सकता है क्योंकि चंद्रमा स्त्रीत्व का प्रतिनिधित्व करता है।

(5). लाल किताब कल्याण सुनिश्चित करने के लिए, कई सामान्य उपायों के विपरीत, विशेष रूप से सोमवार को दूध या चावल का दान नहीं करने का सुझाव देती है।

(6). शहद से भरा चांदी का बर्तन घर में रखने से आपके जीवन में सकारात्मकता बढ़ सकती है।

(7). सोमवार के दिन शिवलिंग पर जल चढ़ाने से सकारात्मक परिणाम मिलते हैं।

(8). लाल किताब के अनुसार, व्यक्ति को हमेशा अपनी मां और मातृतुल्य का सम्मान करना चाहिए तथा समृद्धि एवं सफलता के लिए उनका आशीर्वाद लेना चाहिए।

(9). गायों या अन्य दूध उत्पादक जानवरों की देखभाल करें, लेकिन लाभ के लिए उनका दूध न बेचें।

(10). चंद्रमा के सकारात्मक प्रभाव को बढ़ाने के लिए व्यक्ति को मांसाहारी भोजन से बचना चाहिए और विशेष रूप से सोमवार के दिन शराब का सेवन करने से बचना चाहिए।

कार्मिक उपाय

वैदिक ज्योतिष, लाल किताब और कार्मिक प्रथाओं से नक्षत्र स्वामी पर आधारित उपचार हमें ब्रह्मांडीय ऊर्जाओं के साथ संरेखित करने में मदद करते हैं, जिससे हमारे जीवन के प्रति दृष्टिकोण में सुधार होता है। ये अनुरूप उपाय नकारात्मक प्रभावों को कम करते हैं, सकारात्मकता को बढ़ाते हैं और हमें ग्रहों की ऊर्जा को संतुलित करने के लिए सशक्त बनाते हैं। अंततः, वे व्यक्तियों को अपने भाग्य को संचालित करने की अनुमति देकर आत्म–जागरूकता, सद्भाव और संतुष्टि को बढ़ावा देते हैं।

आपका नक्षत्र
हस्ता (2)

नक्षत्राधिपति
चन्द्रमा

इन कार्मिक के उपायों को अपनायें

(1). रोजाना सचेतनता का अभ्यास करना शुरू करें। सचेत रहने का अर्थ है वर्तमान क्षण में रहना, पूरी तरह जागरूक रहना और आप जो कर रहे हैं उसमें लगे रहना। यह देखते हुए कि ज्योतिष में चंद्रमा मन को नियंत्रित करता है, यह अभ्यास आपको अपने नक्षत्र स्वामी के साथ तालमेल बिठाने में मदद कर सकता है।

(2). दूसरों की भावनाओं को समझने और साझा करने का सचेत प्रयास करें। इसमें वास्तव में दूसरों की बात सुनना और उनकी भावनाओं को मान्य करना शामिल है। यह सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण बेहतर पारस्परिक संबंधों को जन्म दे सकता है और अच्छे कर्म का निर्माण कर सकता है।

(3). अपने आस–पास के लोगों की सहायता करने के तरीके खोजें। मदद की पेशकश का भव्य होना ज़रूरी नहीं है; दयालुता के छोटे–छोटे कार्य भी आपके कर्म पर महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं।

(4). अपना धैर्य विकसित करें. यह एक ऐसा कौशल है जिसके लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है। जब आप निराश या अधीर महसूस करें तो कुछ गहरी साँसें लेकर शुरुआत कर सकते हैं।

(5). सकारात्मक मानसिकता को बढ़ावा देने के लिए पुष्टिकरण का उपयोग करें। चूंकि चंद्रमा मन और भावनाओं पर शासन करता है, इसलिए 'मैं शांत और संतुलित हूं' या 'मेरा मन शांतिपूर्ण और शांत है' जैसे दृढ़ कथन विशेष रूप से प्रभावी हो सकती है।

(6). अपने जीवन में क्षमा का गुण विकसित करें। क्रोध या आक्रोश को दबाए रखना आपको उस व्यक्ति से अधिक नुकसान पहुंचा सकता है जिससे आप परेशान हैं। क्षमा करने से आप नकारात्मक ऊर्जाओं को दूर कर सकते हैं।

(7). प्रकृति में समय बिताना, विशेषकर चांदनी में, आपको अपने नक्षत्र स्वामी की ऊर्जाओं के साथ तालमेल बिठाने में मदद कर सकता है। यह चाँद की रोशनी में टहलने जितना आसान हो सकता है।

(8). आत्म–देखभाल अनुष्ठानों में संलग्न होना आत्म–प्रेम का एक रूप हो सकता है जो अच्छे कर्म लाता है। अपनी जरूरतों का ख्याल रखना जरूरी है ताकि आप दूसरों की प्रभावी ढंग से सहायता कर सकें।

(9). वैदिक ज्योतिष में चंद्रमा को स्त्री ऊर्जा माना गया है। महिलाओं के मुद्दों का समर्थन करने या सिर्फ अपने जीवन में महिलाओं के लिए उपस्थित रहने पर विचार करें।

Disclaimer

(1) Please note that an astrological prediction is just an opinion of the astrologer on the basis of the Horoscope and has no scientific authenticity. These predictions are based upon the characteristics, placements, aspects, associations, strengths, weaknesses of the planets and the ability, command over the astrology subject and experience and competence of the astrologer in the Indian Vedic Astrology.

(2) Recommendation for astrological remedies such as gemstones, mantras, yantras etc are often prescribed after diligent study of the client's birth chart and with due exercise of his prudence and judgment. It must be clearly understood that every such prescription is accompanied by a prescribed method and procedure, which is expected to be followed by our clients with diligence MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) is not responsible for any claims for negative functioning of any prescription of astrological remedy provided. The remedies you receive should not be used as a substitute for advice, programs, or treatment that you would normally receive from a licensed professional, such as lawyer, doctor, psychiatrist, or financial advisor.

(3) The spiritual and material benefits stated with respect to various astrological forecasts, mantras, yantras, pujas, stones or any other spiritual items as well as other products and services are as per th ancient Indian Scriptures and literature. However, as the socio-economic and religious circumstances have changed a lot since then, neither MindSutra Software Technologies and its Software Users (Whicl Provided this Report) can be held responsible for non functioning or non fructification of the stated results.

(4) MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) makes no guarantees or representations vis-a-vis the accuracy or consequence of any aspect of the astrological remedy and predictive advice imparted and cannot be held accountable for any interpretation, action, or use that may be made because of information given.

(5) MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) ensures complete confidentiality of customer's identity, birth details and the prediction details. MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) further ensures that no use will be made of the information that may come to the knowledge of the management of the site or revealed in the horoscope of the customer. Such information will only be used to communicate to the customer or will be retained in the databank for referencing purpose if you may need to consult in future.

(6) Any type of Legal Claim shall be limited to any amounts you may have paid to MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) shall have no other Liability except to the extent permitted by applicable law. In no event will MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which provided this Report) be liable for any indirect, consequential, incidental, special, multiple, punitive, or similar damages.

(7) MindSutra Software Technologies and its Software Users (Which Provided this Report) reserves the right to change, modify, add or delete portions of the Terms of Use at any time. Your continued use following any changes in the terms indicates your acceptance to the changes.